टीटो की कहानी

लेखक
व्लादिमीर देदीयर

अनुवादक
विद्याविभा एम. ए.
बी० बी० सक्सेना एम. ए.

कैपिटल न्यूज़ एण्ड फ़ीचर्स
२५ यॉर्क होटल, कनॉट सर्कस
नई दिल्ली–१

प्रकाशक
कैपिटल न्यूज़ एण्ड फीचर्स
२५ यॉर्क होटल, कनॉट सर्कस
नई दिल्ली–१

प्रथम बार
२०००
दिसम्बर १९५४

मुद्रक
न्यू इण्डिया प्रेस
कनॉट सर्कस
नई दिल्ली–१

मूल्य
३॥)

प्रस्तावना

यह पुस्तक टीटो और युगोस्लाविया के सम्बन्ध में है। जहाँ तक संभव हो सका है यह टीटो के अपने शब्दों में ही है, क्योंकि उन्होंने प्रायः मुझसे अपने जन्मस्थान में व्यतीत की युवावस्था, योरुप के विभिन्न कारखानों में एक सैलानी मिस्त्री के रूप में बिताये हुए समय और मजदूरों के अधिकारों के लिये एक समाजवादी के रूप में किये गये संघर्षों, विभिन्न जेलों में व्यतीत किये अनेक वर्षों और भूख हड़तालों के विषय में बातचीत की है। मैंने इस पुस्तक के कुछ पृष्ठ टीटो के मित्रों और संबंधियों के शब्दों तथा प्रमाण लेखों से भी भरे हैं।

हाँ, मैंने घटनाओं के अपने निजी संस्मरणों को भी काम में लिया है, क्योंकि, मैं टीटो के आन्दोलन का सदस्य रहा हूँ। इसके अलावा मैं टीटो को पिछले चौदह वर्षो से निजी रूप से जानता हूँ, जबकि टीटो अपने जीवन के कठिन समय से गुजर रहे थे और जब वे दूसरे विश्व-युद्ध से पहले युगोस्लाविया के भूमि-निहित साम्यवादी दल को आने वाली विकट घटनाओं के लिये तैयार कर रहे थे। मैं उन्हें उस विपत्ति के समय भी जानता था जब वे पुलिस से छिपकर कुछ दिन मेरे घर में रहे थे। दूसरे विश्व युद्ध के दिनों में पूरे समय मैं उनके साथ.ही रहा था, जब उन्होंने हिटलर और मुसोलिनी के विरुद्ध स्वतंत्रता-संग्राम छेड़ा था।

—व्लादिमीर देदीयर

दो शब्द

व्लादिमीर देद्रीयर युगोस्लाविया के एक प्रसिद्ध पत्रकार है। वे मार्शल टीटो के एक घनिष्ट मित्र भी रहे है, इसी कारण वे इस पुस्तक में मार्शल टीटो और युगोस्लाविया के सम्बन्ध में विशेष जानकारी दे सके है।

'टीटो की कहानी' का अधिकांश भाग टीटो के ही शब्दो में है, इसीलिये तो इसमें आत्मकथा की अपील है। मार्शल टीटो के जीवन का इतिहास युगोस्लाविया के स्वतन्त्रता-संग्राम का परिचायक है। इस पुस्तक में टीटो की कहानी युगोस्लाविया के इतिहास के साथ-साथ आगे बढ़ती है।

व्लादिमीर देदीयर की पुस्तक 'टीटो स्पीक्स्' सन् १९५३ में प्रकाशित हुई थी। पुस्तक अनेक योरुपीय भाषाओं में भी प्रकाशित हो चुकी है। एशिया में बर्मी भाषा में इस पुस्तक का अनुवाद हुआ है। हमें बडी प्रसन्नता है कि हम इस पुस्तक को भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवादित कर सके है और वह भी ऐसे सुअवसर पर जब मार्शल टीटो स्वयं भारत आ रहे है।

अंग्रेजी पुस्तक ४५० पृष्ठो की है। हमने उसे ज्यों का त्यो अंग्रेजी के २०० पृष्ठो में संक्षिप्त करने के पश्चात् हिन्दी में अनुवादित किया है।

अनुवाद करते समय हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि लेखक के भाव और भाषा को तोड़ा-मरोड़ा नहीं जाय। साथ ही हमने यह भी प्रयत्न किया है कि अनुवाद की भाषा दुरूह न होकर सरल तथा सुगम हो।

हमारे विचार में यदि हमें हिन्दी साहित्य को समृद्धिशाली बनाना है तो कुछ वर्षो तक विश्व की विभिन्न भाषाओ की महत्वपूर्ण पुस्तको को निरंतर अनुवादित करते रहना पड़ेगा, जिससे हमारे देश के केवल हिन्दी भाषा जानने वाले पाठक भी उस बहुमूल्य निधि से लाभ उठा सके।

नई दिल्ली
८ दिसम्बर १९५४

विद्याविभा
बी० बी० सक्सेना

विषय-क्रम

पहला भाग

टीटो की तैयारी

दूसरा भाग

स्वतन्त्रता संग्राम

तीसरा भाग

स्तालिन से झगड़ा

चौथा भाग

विगत दिनों की स्मृति

चित्र-सूची

टीटो सन् १९४२ में

पहला भाग

टीटो की तैयारी

टीटो का प्रारभिक तथा विद्यार्थी ज़ीवन--उन्ही के शब्दो मे (१८९२-१९३४)

प्रकरण एक

"मेरा संघर्ष-पूर्ण बाल्यकाल...."

मेरा जन्म मई सन् १८९२ में योसिप ब्रोजप रिवार मे कुमरोवेत्स के क्रोशियन नामक गाँव में हुआ था, जो जागोरिये जिले मे स्थित है (यह पहाड़ो के पीछे बसा हुआ है)। यह स्थान क्रोशिया के उत्तर-पश्चिम मे है और युगोस्लाविया के छः गणराज्यो मे से एक है। (उस समय यह आस्ट्रिया-हंगरी का एक भाग था।) मेरा गाँव एक रमणीक घाटी में बसा हुआ है। इसके चारों ओर जंगल से भरी हुई पहाड़ियाँ हैं। यहाँ छोटी मनोहर नदी सुतला जंगलो में चक्करदार रास्तो से बहती हुई, हरी काई भरी हाथ से बनी खपरैलों की छतों वाली नीली झोंपड़ियों के पास से गुजरती है।

जागोरिये में जहाँ कहीं भी दृष्टि डालें पहाड़ों की चोटियों पर किसी न किसी प्राचीन किले, महल या गिरिजाघर की दीवारें दिखाई देंगी। इन खंडहरों को देखकर रोमन काल के उस इतिहास की स्मृति जीवित हो जाती है जो युद्ध और अत्याचार से भरपूर है।

मेरे पूर्वज अपने पैतृक गृह में रहते थे जिसे वे 'जद्रुगा' कहते थे। सब मिल-जुल कर खेती करते थे और पूरा का पूरा 'जद्रुगा' एक चुने हुए मुखिया से शासित होता था। मेरे पितामह मार्टिन जद्रुगा में रहने वाले अंतिम 'ब्रोज' थे। सन् १८६० के पश्चात् उन्होंने वह जगह छोड़ दी और फिर जागरेब से आसपास के शहरों में गाड़ी पर सौदा लाद कर लाने ले जाने का काम कर अपनी जीविका कमाने लगे। उन्होंने अना ब्लाजिको नामक एक लम्बी और मजबूत स्त्री से विवाह किया, जिसे इस वात का अत्यंत गर्व था कि वह किसानों के ऐसे परिवार से आई थी जो दो शताब्दियों से भी अधिक काल से स्वच्छंद जीवन व्यतीत करता चला आया था। एक वार सर्दी के मौसम में जव पितामह मार्टिन एक नमक की गाड़ी चला रहे थे तो उसका पहिया टूट गया और बोझ ने बूढ़े आदमी को कुचल दिया। उन्होंने एक लड़का और छः लड़कियाँ छोड़ीं—पुत्र फ्रांजो मेरे पिता थे।

उस समय हंगरी का एक नया कानून लागू होगया था जिसके अनुसार ज्येष्ठ पुत्र पैतृक संपत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी नही हो सकता था, प्रत्युत वह संपत्ति परिवार के सब सदस्यो में बराबर बाँटी जाती थी। इस कानून का ध्येय था भूमि को तेजी से टुकड़े-टुकड़े कर देना। इस प्रकार फ्रांजो ब्रोज, जो अपने पिता की जमीन बेचने में झिझकते थे, अपनी वहनो का हिस्सा खरीदने के लिए कर्ज में फंस गये। शीघ्र ही उन पर ऋण इतना वढ गया कि उन्होने एक एकड़ के पश्चात् दूसरा एकड बेचना प्रारंभ कर दिया।

मेरे पिता घुंघराले बालो और झुकी हुई नाक वाले एक दृढ व्यक्ति थे। कुमरोवेत्स और जागोरिये के उस सारे भाग के किसान, जहाँ लकड़ी का अभाव था, सुतला नदी पार कर स्लोवीन पहाड़ियो के जंगलो की ओर चुपचाप लकड़ी काटने के लिए जाया करते थे। सुतला के उस पार गाँवो में जाते हुए फ्राजो, मैरिजा नामक एक सोलहवर्षीया स्लोवीन निवासी वालिका से परिचित हो गये। वह मार्टिन यावेरशेक के चौदह बच्चो में सबसे बड़ी थी। इसके पिता के पास खेत और जंगल की ६५ एकड़ जमीन थी।

वह लंबी, सुनहरे बालो और आकर्षक चेहरे मोहरे की स्त्री थी। जब मेरे पिता २४ वर्ष के थे तो जनवरी सन् १८८१ में उनका विवाह हुआ था। यह विवाह बहुत धूमधाम से किया गया था। मेरी आन्ट अना ने मुझे बताया कि शादी में आने वाले अतिथि कुमरोवेत्स से पॉच स्लेज गाड़ियो में भरकर आये थे।

मेरे माता-पिता को अभी सकटपूर्ण जीवन बिताना था। पन्द्रह एकड़ भूमि जो मेरे पिता के ऋण के कारण कम होगई थी, वह परिवार के पालन-पोषण के लिए पर्याप्त नहीं थी। जब ऋण असह्य होगया तब सरल व सुशील स्वभाव के फ्रेन्जो ने उससे पीछा छुड़ा कर शराब पीना प्रारंभ किया और परिवार का सारा बोझ मेरी माँ पर पड़ गया जो बड़ी साहसी, गर्वीली और धार्मिक स्त्री थी।

मेरे माता-पिता के १५ बच्चे थे, जिनमें से मै सातवाँ था। उन दिनो जागोरिये के लगभग ८० प्रतिशत बच्चे १५ वर्ष की आयु से पहले ही मर जाते थे, जिनमें से अधिकांश तो अपने शैशव में ही चल बसते थे। मेरे माता-पिता बहुतो से कुछ ही अधिक भाग्यशाली थे। उनके १५ बच्चो में से ७ जीवित रहे। जब मै १० वर्ष का था तो मुझे 'डिपथीरिया' (गले का एक रोग) होगया था जो गाँव के भागों में एक अत्यंत प्रचलित बीमारी थी। इससे मेरी एक बहन मर भी चुकी थी, परन्तु मै बिना किसी बुरे प्रभाव के अच्छा होगया।

हमारा परिवार कुमरोवेत्स में ८ नंबर के मकान में रहता था। वह मकान एक शताब्दी पहले बना था, पर था बडा मजबूत। उसमें बडी-बड़ी खिड़कियाँ

थीं। हम उस मकान मे अपने एक चचेरे भाई के साथ साझे से रहते थे। बीच का बड़ा कमरा दोनों परिवारों के काम आता था। उसके दोनों तरफ़ दो कमरे थे। एक खुला हुआ रसोईघर भी साझे में था जहाँ जलाने की लकड़ी का सदा भंडार रहता था।

मेरा बचपन तो कठिनाइयों से भरा था। परिवार में बहुत बच्चे थे। उनकी देखभाल करना कोई सरल काम नही था। प्रायः रोटी कम पड़ जाती थी और मेरी माँ को कोठार बंद करने पर मजबूर होना पड़ता था। हम लोगों को खाने में वही मिलता था, जो वह दे सकती थी न कि वह जो हम खाना चाहते थे। जनवरी में मेरे पिता को मोटे धान की रोटी खरीदनी पड़ती थी क्योकि हम गेहूं खरीदने मे असमर्थ थे। हम बच्चे तो अपने यहाँ मेहमानों के आने से फ़ायदा उठाते थे। हम अपना खाना खाने के बाद भी रोटी का एक और टुकड़ा माँगते थ। मेरी माँ एक स्वाभिमानिनी स्त्री होने के कारण रिश्तेदारो के सामने इन्कार नही करती थी। हाँ, उनके जाने के बाद हमे धमकियाँ दी जातीं और कभी-कभी तो कोडे पड़ने की भी नौबत आ जाती थी।

एक बार दावत के दिन हमारे माता-पिता कहीं गये। हम भूखे थे। ऊपर अटारी में सूअर का एक धुंआ दिया हुआ सिर लटका था, जिसे नये साल के लिए रखा गया था। मेरे भाई बहन रो रहे थे इसलिए मैंने वह सिर उतारा और उबलते हुए पानी में डाल दिया। उसमें मैंने थोड़ा-सा आटा मिलाया और एक दो घंटे तक पकने दिया। क्या बढ़िया दावत हमने उड़ाई! पर खाना इतना चिकना था कि हम सब बीमार पड़ गये। जब मेरी माँ लौट कर आई तो हम सब चुप थे। कभी-कभी कराह उठते थे। उसे हम पर दया आई और इस बार हम मार से बच गये।

तो मैं अनिवार्य रूप से घोड़े पर से उतर जाता और अपने साथियो से भी यही कहता कि वे अपने घोड़ो को मैदान के लिए सुरक्षित रखें।

मेरे पितामह मार्टिन बड़े विनोदप्रिय व्यक्ति थे और उन्हे व्यावहारिक परिहास पसंद था। उन्हीं से मैंने यह आदत ग्रहण की जो अब तक मुझ में मौजूद है। जब मेरी बहन का विवाह होने वाला था तो मैंने चुपचाप उसका हार लेकर मुर्गियो के दर्बे पर रख दिया। उन लोगो ने घर भर में उसे ढूढ मारा, अंत में वह मिल गया। मुझे याद नहीं कि इस पर मैं हँसा या नहीं। मेरे पितामह के साथ मेरे सुख के दिन शीघ्र समाप्त होगये और मैं घर लौट आया।

मेरे गाँव में यह बात मानी हुई थी कि बच्चा सात वर्ष का हुआ नहीं कि वह कमाने वाला बन जाता था। मैं भी गायें चराता, अनाज काटता, बगीचे की घास उखाड़ता और मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं आटा पीसने वाली भारी चक्की भी चलाता था। सैकड़ो बार ऐसा होता था कि मैं काम समाप्त करने पर पसीने से तर हो जाता था और तब मुझे दलिया और भी स्वादिष्ट जान पड़ता था। यह भी ठीक था कि सबसे कठिन काम शारीरिक नही था। वह तब होता था जब मेरे पिता मुझे अपनी हुडी के साथ गाँव में भेजकर किसी से उनके लिए उस पर हस्ताक्षर करवाने के लिए कहते थे। दूसरे किसान भी मेरे पिता की तरह ऋण में डूबे हुए भूखे और बहुत बच्चो वाले थे। मुझे उनकी गालियाँ और झिड़कियाँ सुननी पड़ती थी और अंत में सदा ही वे हुंडी पर हस्ताक्षर कर दिया करते थे।

एक बार कड़ी ठंड में, जब कि घर में खाना नहीं था और जलाने के लिए लकड़ी भी नहीं थी तो मेरे पिता ने हमारी भेड़ो की रखवाली करने वाले कुत्ते 'पोलक' को बेचने का निश्चय किया। उन्होने उसका मोल एक जंगल के चौकीदार से दो गट्ठे लकड़ी के बदले में किया। यद्यपि हमें आग प्रिय थी परन्तु हम बच्चों को धीरज नही बँधा। 'पोलक' हमारा विश्वासपात्र मित्र था, जिसने हमें चलना सिखाया था। जब हम सिर्फ घुटनो के बल चल सकते थे हम उसके पास पहुँच जाते, उसके झबरे बालो को पकड कर खड़े हो जाते और तब 'पोलक' धीरे-धीरे कमरे में चक्कर लगाता। जब हमने अपने पिता को उस कुत्ते को ले जाते हुए देखा तो हम बुरी तरह चिल्लाये। जब हमारे पिताजी के घर लौटने से पहले ही वह दुबारा घर में दिखाई पड़ा, तो कल्पना कीजिये हमें कितनी प्रसन्नता हुई होगी। पिताजी उसे फिर उसी चौकीदार के पास ले गये पर वह दुबारा लौट आया। इस बार हमने उसे जगल में एक गुफा में छिपा दिया और चुपचाप दो सप्ताह तक उसे वहाँ खिलाते रहे। तब तक शिकारी ने उसके मिलने की आशा छोड दी थी। हम उसे जंगल से निकाल लाये और पिताजी ने दया करके उसे रखने दिया।

वह हमारे साथ बहुत सालों तक रहा और १६ साल तक जीवित रहा। 'पोलक' ने मुझे सदा कुत्तों को प्यार करना सिखाया। जब भी संभव हो सका मैंने एक कुत्ता अवश्य अपने साथ रखा। बाद में लड़ाई के दौरान मे 'लक्स' नामक एक कुत्ते ने ही मेरी जान बचाई थी।

उन दिनों क्रोशिया की ६० प्रतिशत आबादी अनपढ़ थी। स्कूल नही के बराबर थे और बहुत से किसान इसीलिए अपने बच्चों को स्कूल भेजना बुरा समझते थे कि इससे उनके बच्चे खेतों में काम नहीं कर सकते थे और उनकी मेहनत बेकार जाती थी। हाँ, इस मामले मे मैं भाग्यशाली था। कुमरोवेत्स में एक प्रारंभिक स्कूल खोला गया, तब मैं ७ वर्ष का था। मेरे माता-पिता ग़रीब होते हुए भी मुझे स्कूल भेजने पर राजी होगये। मुझे पढ़ने में कठिनाई होती थी। पाठ क्रोशियन भाषा में होते थे और अपने नाना के साथ काफ़ी समय बिताने के कारण मैं अच्छी स्लोवीनियन भाषा बोलता था। उस पर मुझे काम भी करना पड़ता था। पढ़ने के लिए मेरे पास समय का अभाव था। मैं अपने हाथ में किताब लेकर चरागाह की ओर चला जाता पर पढ़ना मेरे बस की बात नही थी। गाय मुझे रस्सी पकड़ कर जहाँ चाहती खींच ले जाती। यदि मेरी आँख चूक जाती या रस्सी हाथ से गिर जाती तो वह भाग कर किसी दूसरे के खेत मे चली जाती थी। पहले साल में मैं पढ़ने में अच्छा नहीं रहा परंतु धीरे-धीरे पढ़ने लगा। जब मैंने अपना पुराना स्कूल हाल ही में देखा तो ज्ञात हुआ कि चतुर्थ वर्ष में मेरे नंबर इस प्रकार थे :—

आचरण—श्रेष्ठ; धर्मशास्त्र—सुन्दर; क्रोशियन भाषा—सुन्दर; गणित ठीक; ड्राइंग—सुन्दर; गाना—सुन्दर; कसरत—अति सुन्दर; बागवानी—अति सुन्दर।

हमारे स्कूल में ३५० से भी अधिक लड़के-लड़कियाँ पढ़ते थे। इन सब के लिए केवल एक ही अध्यापक था। हमारे अध्यापक को तपेदिक था। वह खांसता और अपने रूमाल में खून थूकता था, जिसे मैं बाद मे झरने पर लेजाकर धोता। तब हम उसे आग पर सुखाते, क्योंकि उनके पास वही तो एक रूमाल था, इसलिए मैं उसे आधा घंटे में ही लेकर स्कूल के कमरे में लौट आता था। अध्यापक मुझसे बड़े प्रसन्न थे और अक्सर मुझे रोटी दे दिया करते थे। एक दिन उनकी माँ आई और उन्हें ले गई। हम सब जंगले के पास खड़े होगये। जैसे ही उनकी गाड़ी चली उन्होंने अपना रूमाल हमारी ओर हिलाया, पर हम सब रो रहे थे।

कुमरोवेत्स में यह प्रथा थी कि बच्चे रविवार को भी गिरजाघर जायँ। जब कभी पेरिश पादरी वियेकोस्लाव होमोस्तारिच कुमरोवेत्स में सेंट रोको के गिरजे में पूजा करते तो वे मुझे सेवक बना कर ले जाते थे। एक बार पूजा के पश्चात् मैं पादरी के बड़े मोटे शरीर से जामा नही उतार सका था जो कि जल्दी मे था, तो

उसने चिढ़कर मुझे थप्पड़ लगा दिया। दुबारा फिर मै गिरजे नहीं गया।

स्कूल में मेरे बहुत से अच्छे मित्र थे। मुझे याद है कि मेरा एक चचेरा भाई इवा ब्रोज बड़ा कुशाग्रबुद्धि था पर साथ ही वह कुछ सुस्त भी था। अध्यापक ने स्कूल के रजिस्टर में लिखा कि उसमें दिमाग की कमी थी परन्तु बाद में वह लड़का बहुत अच्छा मिस्त्री बन गया। इनके अलावा विशाल सीजर ग्रेड किले की दीवारो के नीचे खेलने की और भी स्मृतियाँ शेष है।

जब मै १२ वर्ष का था तब ही ये सब बाते समाप्त होगई। उस आयु के जागोरिये के लड़को में अपनी जीविका का साधन स्वय चुनने की प्रथा थी, क्योकि उस समय उन्हे अपने पैरो पर खड़े होने योग्य समझा जाता था। कुछ समय के लिए मै अपने मामा की गायें चराने लगा। इसके बदले में वे मुझे खाना देते थे। मेरे मामा ने मुझे वर्ष के अत में नये बूटो की एक जोड़ी दिलाने का भी वायदा किया परन्तु वे अपने वचन के पक्के नहीं निकले। उन्होनें मेरे कामदार पुराने जूते ले लिए, उन्हे अपने बेटे के लिए सुधरवा दिया और मुझे उससे भी गये बीते जूतो की एक जोड़ी दे दी।

मेरा मामा कंजूस था। मै उसके वर्ताव से इतना असंतुष्ट हुआ कि अत में उसने महसूस किया कि मेरा और उसका निर्वाह नही हो सकता। उसने मुझे सलाह दी कि यदि मै उसे छोडना चाहूँ तो छोड़ दूँ। कुछ समय पश्चात् जुरिका नामक एक सबधी, जो सेना का एक 'स्टाफ सार्जेन्ट' था, गाँव देखने आया। उसने मुझ में दिलचस्पी ली और मुझे 'बैरा' बन जाने को कहा। उसने बताया कि बैरे हमेशा अच्छे कपड़ो में रहते है। वे हमेशा अच्छे लोगो में रहते है और बिना ही कठिन परिश्रम किये उन्हे खाने के लिए बहुत कुछ मिलता है।

शायद अच्छे कपड़े पहनने की बात मुझे अधिक पसंद आई। बचपन से ही मेरी आकाक्षा दर्जी बनने की थी। यही जागोरिये के प्रत्येक छोटे किसान की अच्छे कपड़े पहनने की इच्छा का परिणाम हो सकता था।

मेरे पिता ने पहले तो जुरिका के विचार पर कोई ध्यान नही दिया, क्योकि उन्हे मुझे अमरीका भेज सकने की आशा थी। वह समस्त क्रोशिया का सकटकाल था। सभवतः २५०,००० लोग सन् १८९९ और १९१३ के बीच मे क्रोशिया से अमरीका गये। और भी बहुत से लोग जाते यदि उनके पास पैसा होता, परन्तु उस यात्रा मे लगभग चार सौ क्राउन ख़र्च होते थे, जो उस समय में बहुत बड़ी रकम मानी जाती थी। मेरे पिता ने मेरी यात्रा के लिए रुपया एकत्रित करने का प्रयत्न किया परतु इतनी बड़ी रकम उनकी शक्ति से बाहर थी, इसलिए अत में उन्होने जुरिका का सुझाव मान लिया।

दक्षिण-पूर्व योरूप की पलटती राजनीतिक सीमायें
१९१४-१९४५
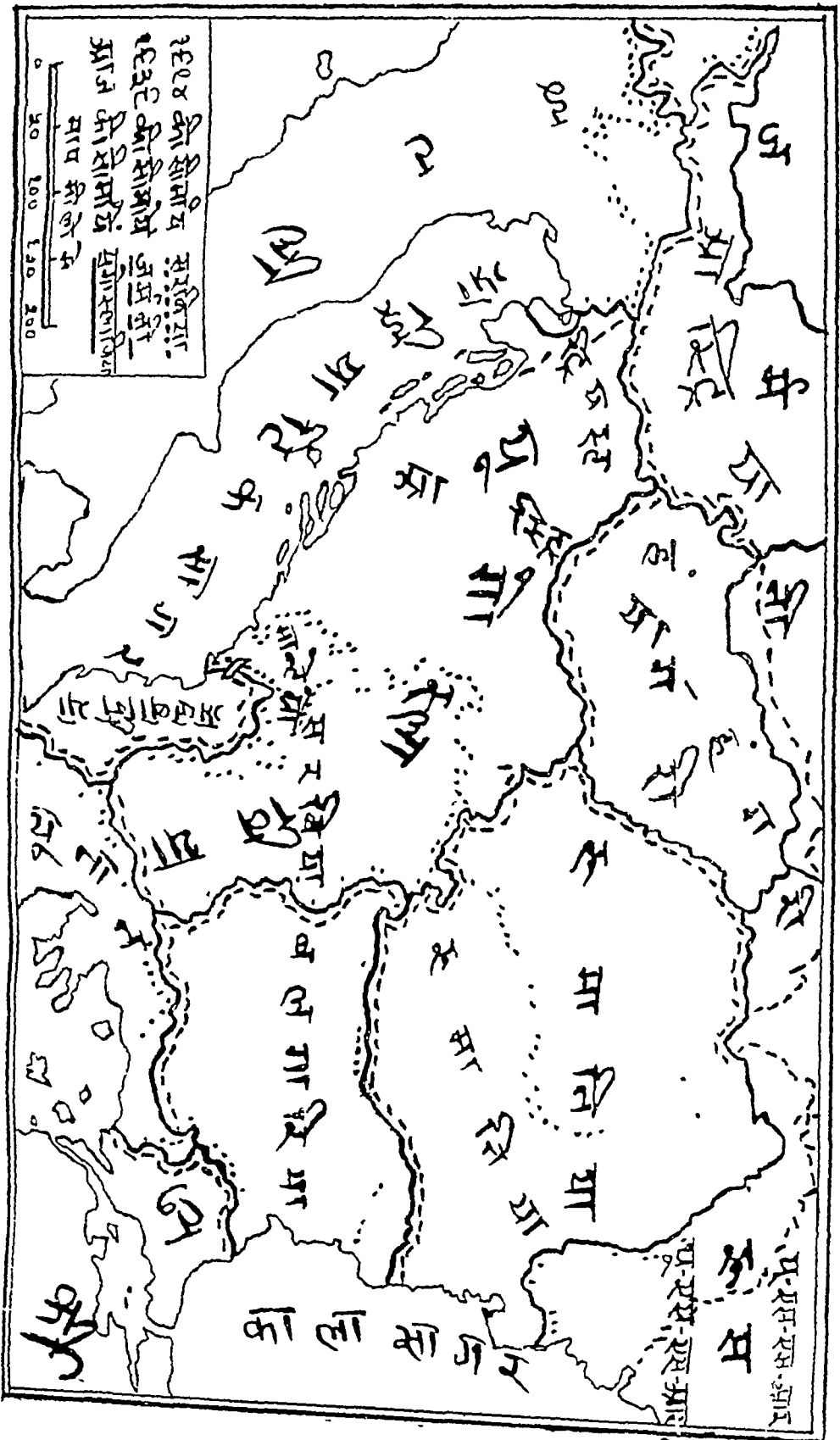
इस प्रकार मैं १५ वर्ष की अवस्था मे अपने संबंधी स्टाफ़ सार्जेंट जुरिका ब्रोज के साथ साठ मील की दूरी पर बसे सीसक नामक गाँव के लिए चल पड़ा।

मुझे यह जगह अपने गाँव से भी अधिक आश्चर्यजनक जान पड़ी। इसमें कोई संदेह नहीं कि सबसे अधिक मेरे कौतूहल की वस्तु रेल का एंजिन था जो हमें सीसक तक ले गया था। मुझे एंजिन चलाने वाले से कितनी स्पर्द्धा हुई! किसी भी तरह मुझे एक नौकरी लेनी पड़ी—एंजिनों में नही, मेरे चचेरे भाई के मित्रों के एक उपाहारगृह में।

मैं अपने नये पेशे से जल्दी ऊब गया क्योंकि मै कुछ भी नही सीखा था और मुझे तश्तरियाँ धोने से लेकर सब काम करना पड़ता था। दिन का काम समाप्त करके मुझे रात में देर तक 'स्किटल पिन्स' का खेल सँवारना पड़ता था। जब तक अंतिम अतिथि विदा न हो जाय मुझे अपने पैरो पर खड़ा रहना पड़ता था।

शीघ्र ही मेरी भेंट कुछ ऐसे उम्मीदवारों से हुई जो निकोला कारस नामक एक ताला बनाने वाले के यहाँ काम करते थे। उस समय मेरे देश में एक ताला बनाने वाला केवल ताले ही नही बनाता था, बल्कि वह नगर का एक आम कारीगर माना जाता था। ताले बनाने का काम एक कुशल दस्तकारी समझा जाता था। मेरे मित्रो ने मुझे बताया था कि ताले बनाने का काम 'इंजीनियरिंग' का ही एक रूप था और 'इजीनियरिग' ससार का एक सुन्दर पेशा, क्योंकि इंजीनियर जहाज, रेल और पुल बनाते थे। लोहारो के काम की अपनी पारिवारिक परम्परा के कारण यह काम मुझे अच्छा लगा और मैं करास से मिलने गया। वह ६० वर्ष का बड़ा दयालु व्यक्ति था, जिसने मुझे अपने पिता को भेजने के लिए कहा, क्योंकि वे ही मेरे काम सीखने के नियमपत्र पर हस्ताक्षर कर सकते थे। मेरे पिता आये और कारस से इस समझौते पर पहुँचे कि मेरा मालिक मुझे खाना और रहने की जगह दे और मेरा पिता मुझे कपड़े। मेरे पिता के पास पैसे नही थे इसलिए उपाहारगृह में मैंने जो बक्शीश से पैसा बचाया था उससे मैंने नीली पोशाक खरीदी और अपना कार्य प्रारभ किया जिसे काफी वर्षो तक मुझे करना पड़ा। कारस के कारखाने मे एक या दो मजदूर, तीन या चार उम्मीदवार काम करते थे क्योंकि उन दिनों यह क्रोशिया के बड़े कारखानो में से एक था। यह बड़ी सजीवता से चित्रित करता है कि मेरे देश का आर्थिक विकास रोका जाता था जिससे हमारे देश का काम वियेना और बुडापेस्ट के उद्योगो के लिए कच्चा माल भेजने तक ही सीमित रहा। समस्त क्रोशिया में लोहे और इस्पात का वार्षिक उत्पादन प्रति निवासी तीन पौंड से अधिक नही था।

उपाहारगृह के जीवन से उम्मीदवार का जीवन अधिक अच्छा था।

हमारा कारखाना बड़ा नही था। उस तंग जगह में दो ही कमरे थे । कारखाने के बीचोबीच निहाई बनी हुई थी। सर्दियों में उम्मीदवार एक लंबी मेज पर सो जाते थे और गर्मियो में वे अहाते में चले जाते और अस्तबल में सूखी घास पर सोते थे। काम सुबह ६ बजे प्रारंभ होकर शाम को ६ बजे समाप्त होता था । दोपहर के लगभग कारस की पुत्री जोरा लडको के लिए खाना लेकर कारखाने में आती थी, और फिर काम चलने लगता।

खाना बुरा नही होता था। सुबह हम लोगो को डेढ़ पाव दूध और काफी मिलती, इसके अलावा एक 'थ्री क्रुट्जर रोल' भी मिलता था।

मै उन दिनो को बड़े हर्ष से याद करता हूँ क्योकि मुझे काम सीखने का एक बडा अवसर मिला था। शाम को पाँच से सात बजे तक मैं सप्ताह में दो बार उम्मीदवारो के स्कूल जाता था, जहाँ हमें भूगोल, इतिहास, भाषायें तथा सामान्य विषय पढाये जाते थे। वहाँ फेलिक्स डेस्पोट नामक एक अध्यापक था, जो पहले मुझे अच्छा नहीं लगा। वास्तव मे उसका जैसा नाम था वैसा ही वह कठोर था और कभी मुस्कराया तक नही। एक दिन मुझे उसका कारण ज्ञात हुआ। उसका विवाह जिस लडकी से हुआ था उसकी मृत्यु बच्चा होते समय होगई थी। एक बार कब्रि-स्तान से गुजरते समय मैंने देखा कि मेरे अध्यापक अपनी पत्नी की कब्र पर औंधे पड़े बच्चे की तरह रो रहे हैं। मैं फौरन पीछे हट गया जिससे कहीं दिखाई न पड़ जाऊँ। उसके पश्चात् मेरे हृदय में उनके लिए एक अजीब श्रद्धा उत्पन्न होगई। पूरे तीन वर्षो तक हमने उन्हे मुस्कराते नही देखा।

रविवार को दोपहर के बाद हम अलग-अलग कारखानो के उम्मीदवार आपस में मिलते थे, जबकि हमारे अध्यापक बढिया रविवारीय भोजन के पश्चात् नीद लिया करते थे।

अपनी उम्मीदवारी के समय में दो बार मै कठिनाई में फँसा। वहाँ एक और भी अध्यापक था जिसे मैं विशेष पसद नहीं करता था। 'अप्रैल फूल' के दिन मैंने उसकी काली कुर्सी पर स्याही पोत दी थी, परतु उसके बदले हमारे स्कूल का डाय-रेक्टर फर्दो केफेलजा अपनी सफेद पतलून मे भीतर आया। मै इतना घबराया कि अपना मुह भी नही खोल सका। मै उससे कहना चाहता था कि मैने क्या किया है और आशा कर रहा था कि वह बैठेगा नही। वह तो सीधा कुर्सी पर जा बैठा। किसी तरह जब वह उठ कर गया तो उसकी सफेद पतलून पर स्याही लग गई थी। बाद मे मैने कबूल दिया और सच-सच बतला दिया कि मैने वह स्याही किसके लिए तैयार की थी। एक अच्छे स्वभाव के व्यक्ति होने के नाते उसने मुझे क्षमा कर दिया।

दूसरी घटना तो और भी गभीर थी।

उम्मीदवारों के स्कूल जाते-जाते मुझ में पढ़ने का शौक पैदा हुआ। जो कुछ मेरे हाथ पड़ा मैंने उसे पढ़ लिया, जैसे – इतिहास, शास्त्रीय और आधुनिक उपन्यास, यात्रा की कहानियाँ, 'शरलॉक होम्स' की साहस की कथाये, आदि।

रुपया पाने में मुझे काफ़ी समय लगा। अधिकतर मैं पड़ौसियों के लिए चाबियाँ बनाता और ताले सुधारता था। इस प्रकार पढ़ने के लिए मुझे विशेष अवकाश नहीं मिलता था। कारखाने में १२ घंटे लगते, सप्ताह में दो बार स्कूल जाना पड़ता और रात में दिया जलते ही मुझे नींद आ जाती। इसलिए मैं काम करते समय ही पढ़ता था। एक बार मैं नये बरमे से खराद पर काम करते हुए जोर-जोर से पढ़ रहा था और दूसरे उम्मीदवार सुन रहे थे। प्रायः वे कारस को देखने के लिए चौकीदार बिठाया करते थे, परंतु 'शरलॉक होम्स' की साहसपूर्ण कथाएँ इतनी मनोरंजक थीं कि सन्तरी अपनी चौकीदारी बिलकुल भूल गया। कारस कारखाने में आगया और चुपके से मेरी पीठ के पीछे खिसक आया। उस दिन दुर्भाग्यवश मेरा बरमा भी ठीक उसी समय चटख गया। कारस क्रोध से धधक उठा और उसने मेरे मुंह पर एक तमाचा मार दिया।

मुझे तमाचा बहुत बुरा लगा और मैंने वहॉ से भागने का निश्चय किया, जबकि मेरे तीन वर्षों की उम्मीदवारी का वह अंतिम मास था। सिसक से मैं सीधा एक निकट के ईंटों के कारखाने में भाग आया परंतु कारस ने मेरे भागने की सूचना अधिकारियो को दे दी। पुलिस के आदमी मुझे कारखाने से पकड़कर सीसक जेल मे ले गये। बूढ़ा कारस फिर भी दयालु था। उसने मेरे लिए जेल में भोजन भेजा और मुझे अपना शिक्षण-काल पूरा करने के लिए मेरी रिहाई का प्रबन्ध कर दिया, जिससे मैं अपना पहला काम कर सकूं, जैसे सीसक की डिस्ट्रिक्ट कोर्ट की सीढ़ियों के लिए जंगला आदि बनाना।

एक दिन एक श्मिद्त नामक यात्री जागरेब से कारस के कारखाने मे आया। वह एक सुन्दर लड़का था जो लाल रूमाल बांधे हुए था और जिसका स्वभाव मित्रता व विनोद पूर्ण जान पड़ा। सन् १९०९ के मई दिवस को उसने हमें बताया कि यह मजदूरों की छुट्टी का दिन है और हमें अपने कारखानो को सजाने के लिए हरी डालियाँ और फूल लाने चाहियें। बाद में मैंने श्मिद्त से बहुत बार बातें की और बहुत कुछ सीखा। खेद की बात है कि वह एक मजदूर की भाति चला गया परंतु एक दूसरा व्यक्ति आया— गास्पारिच। वह बड़ा मजबूत आदमी था और उसने हमें ग्रीक-रोमन ढंग से कुश्ती लड़ना सिखाया। गास्पारिच तो श्मिद्त से अधिक लड़ाकू था। वह तथा कुछ अन्य मजदूर, विशेषकर बढ़ई और छापेखाने वाले, लोवाचकी रॉग (हुन्टर्स हॉर्न)

के शराबखाने में मजदूर संघ का आयोजन करने के संबंध में विचार-विमर्श करने के लिये मिलने लगे। यद्यपि क्रोशिया में मजदूर संघ काफी पहले, कोई पिछली शताब्दी के मध्य में ही बन गये थे और सामाजिक प्रजात्रात्रिक दल (Social Democratic Party) सन् १८९४ में स्थापित होगया था, फिर भी उन्हे दण्ड दिया गया। एक वर्ष में ही समाजवादी पत्र के २४ में से २३ प्रकाशन निषेध होगये। सीसक में मजदूर संघ नही थे क्योकि स्थानीय अधिकारियो की ओर से उनकी मनाही थी।

हम उम्मीदवारो को अपने आप शराबखाने मे जाने की आज्ञा नहीं थी, परंतु, प्राय. कारस हमें 'बीयर' लाने के लिए वहाँ भेजता था। तब हम बड़ी उत्सुकता से कमरे में झाँकते जहाँ गास्पारिच अपने मित्रो से मिलता था। वे कठिन परिस्थितियो में अपनी बातचीत करते थे। जब तक वे पीने के लिए कुछ नहीं मागते सराय का मालिक उन्हें वहाँ बैठने नहीं देता था। एक घंटे में ही वे ऐसे मतवाले और प्रसन्न हो जाते कि उसके बाद कोई भी गंभीर काम नहीं होता था। इस प्रकार की कठिनाई आये दिन होती थी जिसके परिणामस्वरूप मजदूरो के भवनो का निर्माण हुआ। एक तो पहले ही 'ब्रोद' के पास था परतु सीसक में एक भी नही था।

गास्पारिच ने जो कर सकता था किया जिसमें हम उम्मीदवारो को कुछ सिद्धान्त समझाना भी सम्मिलित था। उसके सुझाव पर मैंने समाजवादी सामाचार-पत्र 'फ्री वर्ड' के लिए चदा एकत्रित किया और 'मजदूरो की दियासलाई' बेचने लगा जिसकी बिक्री का ५% समाचारपत्र को जाता था। मै वे सब छोटी-छोटी पुस्तिकाये पढ़ता था जो वह कारखाने में हमारे लिए लाता था, विशेषकर एडवर्ड बेल्लामी की 'लुकिग बैंकवर्ड' नामक पुस्तक और 'फ्री वर्ड' भी, जिसमें दूसरे देशो मे मजदूरो के आन्दोलनो के समाचार होते थे। मुझे याद है, विशेषकर रूस में अत्याचार की कहानियाँ, १२ जापानी समाजवादियो को मिकादो द्वारा फाँसी का दण्ड डिया जाना और मिलवुकी में समाजवादी गणतन्त्र का बनाया जाना जहाँ समाजवादियो ने चुनाव जीता था।

क्रोशिया में, जहा सपत्ति योग्यता के कारण केवल ७ प्रतिशत लोग ही मत दान कर सकते थे, समाजवादी प्रजातत्रो का ससद में केवल एक ही प्रतिनिधि था। मेरे अपने गाँव में केवल तीन ही मतदाता थे। इन परिस्थितियो के लिए कुछ करने की मेरी आकांक्षा जाग पड़ी और सीसक से निकलकर मै अपने आप दुनिया में प्रवेश करने के लिए तैयार था। मैं, जैसा कि प्रत्यक्ष है, समाजवादी प्रजातात्रिक दल का एक उत्साही समर्थक था और मजदूर सघ में सम्मिलित होने की बड़ी उत्सुकता

से प्रतीक्षा कर रहा था।

जब मैं मजदूरी करने लगा तो सीसक छोड़ने का एक अन्य प्रमुख कारण यह भी था कि मैं अपने काम में निपुणता प्राप्त करना चाहता था। उस समय वहाँ किसी कार्य के संबंध में विशेष ज्ञान प्राप्ति पर जोर नहीं दिया जाता था। साथ ही एक ताले बनाने वाले के लिए सब प्रकार की मशीनों का काम जानना अनिवार्य होता था। दूसरी ओर एक कुशल कारीगर के लिए यह प्रथा थी कि वह अपने काम का ठीक ज्ञान अपने उम्मीदवारो को नहीं देता था जिससे जब उम्मीदवार स्वयं कारीगर बनें तो वे उसकी बराबरी न कर सकें। ग्रेकारस भी इस नियम के लिए कोई अपवाद नहीं था।

इस प्रकार मेरे १८वें वर्ष में ससार मेरे सामने खुला पड़ा था।

प्रकरण दो

मैंने अनेक कुशल-कार्य सीखे...... और युद्ध के विरुद्ध आवाज़ उठाई।"

जागरेब सीसक का निकटतम शहर था, जहाँ मिस्त्रियो के अपने कारखान मशीनो में कारस के कारखाने से भी बढ़ चढ़कर थे।

सीसक में काम करने वाले कुछ मजदूरो की सहायता से मुझे जागरेब की मुख्य सड़क पर स्थित हारामीना नामक मालिक के कारखाने में नौकरी मिल गई। मेरी दैनिक मजदूरी दो क्राउन और तीस हेलर थी। मेरे रहने का ख़र्च प्रति मास बीस क्राउन और खाने का सात पड़ता था। रहन-सहन का व्यय निरंतर बढ़ता जा रहा था। मांस मुझे एक क्राउन प्रति पौंड की दर से मिलता था।

अपने लिये जाने के कुछ ही दिन पश्चात् मैं जागरेब की मुख्य सडक पर बने मजदूरो के भवन में गया और धातु-मजदूर-सघ (Union of Metal Workers) का सदस्य बन गया। इस प्रकार मैं क्रोशिया और स्लावोनिया के समाजवादी-प्रजातान्त्रिक-दल (Social Democratic Party) का भी सदस्य बन गया। यह सन् १९१९ की बात है, जब मुझे सदस्यता-पत्र और बिल्ला मिला था, जिसमें दो हाथ एक हथौड़ा पकड़े हुए थे। मैं १८ वर्ष का हो गया था और यह मेरे जीवन का सबसे गौरवपूर्ण क्षण था।

मैंने जागोरिये में दो मास तक काम किया। प्रतिदिन मैं काम करने के पश्चात् मजदूर संघ के मुख्य कार्यालय में जाया करता था, जहां मैं साहित्य पढ़ता और अपने मजदूर-साथियों से मिलता था। एक दिन मैंने अपने प्रथम राजनैतिक काम में भाग लिया। क्रोशिया के राज्य-पाल, तोमाशित्स ने, जो अपने हंगरी के पक्षपात के लिए प्रसिद्ध था, क्रोशिया निवासियो के लिए अपना अत्याचार फिर आरंभ कर दिया था, विशेषकर मजदूरो के लिए। हम लोग लाल झंडे और मशाले लिये मुख्य सड़क इलीत्सा पर उमड़ पड़े। जैसे ही हमने मजदूरो के अधिकारो के नारे लगाये पुलिस ने हम पर निर्दयता से हमला किया।

इस कारखाने में मैंने अनेक प्रवीणता के कार्य सीखे जिन्हे कारस के

कारखाने में सीखने का मुझे मौका ही नहीं मिला था। हम दस घंटे प्रतिदिन काम करते। अंत में यहां मुझे अपनी एक चिर-संचित अभिलाषा को पूर्ण करने का संयोग मिला कि मै एक नई पोशाक खरीदूं और जागोरिये तथा अपने लोगों में अच्छे कपड़े पहन कर लौटूं। यद्यपि रहन-सहन का व्यय वेतन की अपेक्षा कहीं ऊँचा था फिर भी मै तब तक बराबर बचत करता रहा जब तक कि मेरे पास लगभग तीस क्राउन नही हो गये।

मै एक दूकान पर गया और बीस क्राउन की एक सुन्दर नयी पोशाक पसंद की। कितना प्रसन्न था मै! फिर मै उसे घर में रख कर विदा लेने दुकान गया। जब लौट कर आया तो देखा कि मेरे कमरे का दरवाज़ा चौपट खुला था और मेरी नयी पोशाक का नाम निशान भी नही था। कितना उदास और निराश हुआ मै! मुझे एक पुराने कपड़े बेचने वाले के पास चार क्राउन में एक पोशाक ख़रीदने के लिए जाना पड़ा, क्योंकि मुझ में अपने घर जागोरिये, उन्हीं कपड़ो को पहनकर लौटने का साहस नहीं था जिनसे मैंने उम्मीदवार की भांति काम किया था।

अंत में वह दिन भी आया जब मै अपने गांव एक आत्मनिर्भर व्यक्ति के रूप में लौटा। चलने से पूर्व मै एक दुकान पर गया जहॉ से मैंने अपनी मां तथा संबंधियों के लिये उपहार की कुछ वस्तुएँ ख़रीदी। शाम को अपने घर पहुँच कर देखा तो मेरे माता-पिता, भाई-बहन घर के सामने खड़े मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे सम्मान में एक भोज दिया गया। मेरी मॉ ने मेरी प्रिय खाने की वस्तु मुर्गी का शोरवा बड़ी सादगी से तैयार किया था और पनीर के समोसे भी; जिन्हे पूरे गॉव में मेरी मॉ जैसा अच्छा कोई नहीं बना सकता था।

प्रातःकाल तो मै अपने सब संबंधियो से मिलने गया और अपने पुराने स्कूल भी गया पर मेरा अध्यापक विस्पुल्शेक वहॉ नहीं था। साल भर पूर्व ही उसकी मृत्यु हो चुकी थी। मै अपनी माँ के संबंधियों से मिलने सुतला के पार चरागाहों में से होकर गया जहॉ मैंने ग्रीष्म की गर्म रातो में घोड़ों की रखवाली की थी।

इस प्रकार दिन बीतते गए और मैंने अपने गॉव से बाहर जाकर नौकरी ढूंढने का विचार स्थगित कर दिया। संध्या से लेकर आधी रात तक हम अपने पडौसियो के साथ अंगीठी के चारो ओर बैठे रहते। बूढ़े लोग मातिया गुबेत्स के किस्से कहानियाँ सुनाते और वृद्धायें एक घायल-फ्रांसीसी सिपाही की कहानी सुनातीं जो नेपोलियन के सेना हटा लेने के बाद हमारे गाँव में रहा था। युवा लोग गर्मियों में अपनी दूर-दूर की यात्राओं का वर्णन करते थे। मै भी अपने

जागरेब के अनुभव सुनाता। यद्यपि उसमें कोई भी रोमांचकारी वात नहीं होती थी फिर भी मै गर्वपूर्वक उसे सुनाता और लोग सुनते थे।

थोड़ा बहुत जो रुपया मै लाया था वह शीघ्र समाप्त हो गया, विशेषकर अपने पुराने स्कूल के सहपाठियो को कुछ शराव पिलाने के पश्चात्। हमारे घर में निर्धनता थी, जैसा कि प्रति वर्ष इस समय होती थी, क्योकि, हम सब अनाज खा चुके थे। मैने अपने भाई द्रागुतीन-कारलो की सहायता की जो इमारत के ठेकेदार के यहां खपरैल और नहरो के लिये सीमेंट के नल वनाने के लिये नौकर था। यह वात किसी को भी पसद नहीं थी। मै प्राय. अपने परिवार के लोगो और अन्य गांव वालो को यह कहते सुनता था कि सीमेट के नल वनाने का काम सीखने के लिये तीन वर्ष का समय नष्ट करना आवश्यक नहीं था। मैने इन वातो की विशेष चिन्ता नहीं की।

एक दिन मैने अपनी मां को अपने पिता से इस विषय में कुछ कहते सुना जिससे मुझे अत्यंत क्षोभ तथा दुख हुआ। मैने दुवारा घर छोड कर कहीं नौकरी ढूंढने का निश्चय किया यद्यपि मुझे फिर दुखी होना पड़ा। मेरे पिता के पास घोडे थे और उन्होने मुझे निकट के रेल्वे स्टेशन तक पहुँचा दिया, जहां से मैने स्लोवानिया की राजधानी युवयाना के लिये गाड़ी पकड ली।

मेरी जेव में १० क्राउन थे। यद्यपि मै युवयाना में वड़ी मितव्ययता से रहता था फिर भी शीघ्र ही कंगाल हो गया। मै युवयाना की अनेक दुकानो में फिरा, परंतु, किसी में भी आदमियो की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए मुझे प्रयत्न करते रहना पडा। इस वार मैने 'ट्रियस्ट' जाने का विचार किया। मेरे पास रेल का किराया तक नही था इसलिये मुझे पहाड़ो के रास्ते से ६० मील पैदल चलकर जाना पड़ा। अभी सर्दी का ही मौसम था और मुझे ट्रीयस्ट पहुँचने से पूर्व तीन दिन तक वर्फ से संघर्ष करना पडा। एक गांव में अपनी यात्रा की अंतिम रात्रि को जिस अस्तबल में मै सोया वहां मुझे एक दुर्घटना का सामना करना पडा। एक गाय ने, जो नमक की तलाश में थी मेरी पोशाक के चिथडे-चिथडे कर दिये। पोशाक के संबंध में मै भाग्यशाली नहीं रहा।

ट्रियस्ट के बदरगाह और दूर-दूर के जहाजो को देखकर मै चकित रह गया। मजदूर संघ के सदस्य होने के नाते मुझे ट्रीयस्ट-मजदूर-संघ की ओर से बेकारी के समय दी जाने वाली आर्थिक सहायता दी गई, परंतु मुझे काम नहीं मिल सका।

मैने लगभग दस दिन तक नौकरी ढूंढी, जब नहीं मिली तो घर लौट गया। एक किसान की गाड़ी पर चढ कर मै सो गया और वह मुझे गलत स्थान

पर ले गया। उसने अपने घर पर गाड़ी रोकी और मुझे भोजन दिया। रात मैंने दूसरे गाँव मे बिताई और अंत में बहुत दिन पश्चात् मैं अपने घर कुमरोवेत्स पहुँचा जहाँ प्रत्येक व्यक्ति मुझे फिर देखकर आश्चर्यान्वित होगया।

मैं अपने परिवार के साथ अधिक दिनों तक नहीं रहना चाहता था और न ही रह सकता था। मैंने कुछ दिन विश्राम करने में व्यतीत किये। अपने परिवार मे निर्धनता होने के कारण मैंने शीघ्र-से-शीघ्र घर छोड़ देना उचित समझा। इसी वर्ष मार्च के महीने में जागोरिये गया और वहाँ प्रिलाज़ में मास्टर क्नाउस के कारखाने मे काम करने लगा। क्नाउस मोटर, साइकिलें और इसी प्रकार की मशीनें सुधारता था। वह एक बुज़ुर्ग, लम्बा सदा अच्छे कपड़े पहनने वाला और अच्छे आचरण का व्यक्ति था।

पहले शनिवार को जब मुझे अपना वेतन मिला, मैं दुबारा अपने संघ में सम्मिलित होने चला गया। मुझे अपना सब पिछला ऋण देना था, क्योंकि अब मैं नौकरी पर लग गया था। उन दिनों मजदूर संघ रहन-सहन के ऊंचे ख़र्चों तथा सदा बढ़ने वाले सैनिकव्यय के विरुद्ध लड़ रहे थे।

एक विज्ञापन में मैंने देखा था कि क्रोशिया का मजदूर इंगलैंड तथा बैलजियम के मजदूर की अपेक्षा पांच गुना कम मांस खाता था। हमने बेकार और वृद्ध मजदूरो की सहायता के अभाव का विरोध किया। ये उस वर्ष के मई दिवस पर किये गये मजदूर प्रदर्शनो के मुख्य नारे थे। मई दिवस पर पूरी हड़ताल थी। प्रदर्शन प्रारम्भ होने से पहले मैं सब कारखानो में अपने मित्रों के साथ यह प्रयत्न करने गया कि सब मजदूर मई दिवस मनायें। हम इतने शक्तिशाली थे कि पुलिस को हम पर हमला करने का साहस नहीं हुआ, इसलिये जब हम गर्वपूर्वक मुख्य मार्गों से झंडे लिये हुए चले आये, प्रदर्शन शांतिपूर्वक समाप्त होगया।

उस समय पादरियो की ओर से समाजवादियों तथा मई दिवस के विरुद्ध बड़ा भयंकर आन्दोलन चलाया जा रहा था। गिरजाघरों मे कैथलिक पादरियों ने यह उपदेश दिया कि समाजवादी पिशाच हैं और जो कोई मई दिवस की परेड में भाग लेगा वह नरक में जायगा। इस प्रचार का मजदूरों पर भी असर पड़ा, विशेषकर उनकी पत्नियों पर। मुझे याद है कि जब मैं मुख्य मार्ग से अपने एक विवाहित मित्र के साथ चल रहा था तो उसकी पत्नी और बच्चा भी उसी मार्ग पर खड़े परेड देख रहे थे। जैसे ही हम निकट आये, बच्चा बोल उठा, "देखो अम्मा! पिताजी भी पिशाचों में जा रहे हैं।"

एक नये मजदूर होने के नाते मुझे प्रतिदिन दो क्राउन साठ हैलर

मिलते थे। अविवाहित होने के कारण मेरी प्रमुख आवश्यकताओ के लिए यह पर्याप्त था। जब मैंने अन्त में ईस्टर के लिये एक पोषाक खरीदी तो मेरे पिता ने इसका यह अर्थ निकाला कि मेरे पास बहुत रुपया है। मेरे पिता के पास से लगातार 'बिल' मेरे पास आने लगे और उनकी इच्छायें बढ़ती ही गयीं। जो कुछ मैं भेज सकता था मेरे पिता के स्थान पर मेरी मां को पहुँच जाता था और मेरे पास थोडा-सा बच जाता था। बडी कठिनाई से मैंने अपटन सिंक्लेयर की 'दी जंगल' नामक पुस्तक खरीदने के लिये दो क्राउन साठ हेलर बचाये। इस पुस्तक को क्रोशिया के बहुत से मजदूर पढते थे, क्योकि इसमें योरुप छोड़ कर शिकागो के बूचडखाने में काम करने वाले लोगो के जीवन का चित्रण किया गया था।

कुछ सप्ताह पश्चात् हमारे संघ ने, दस के विरुद्ध एक मत से, अधिक वेतन के लिये हडताल करना तय किया। दस दिन के कड़े सघर्ष के पश्चात् हमारी मागें किसी हद तक स्वीकार कर ली गईं। यद्यपि मेरे काम करने की दशा सुधर गई थी फिर भी मैं जागरेब में ठहरना नहीं चाहता था। यहा तक कि मेरे स्वामी क्नाउस ने भी मुझे बाहर जाने का प्रोत्साहन दिया। वह कहता, "देखो, जब मैं युवक था तो मैं बाहर गया। मैंने जर्मन भाषा सीखी, साथ ही अपना व्यवसाय भी।"

मेरे जाने से पहले क्नाउस ने मुझे पूरे महीने का वेतन दिया यद्यपि मैंने उतना काम नहीं किया था।

मैंने वियेना का टिकट खरीद लिया परन्तु अपनी यात्रा के बीच ही मैंने अपना विचार बदल दिया और उसके बदले युबयाना चला गया, क्योकि मुझे भय था कि वियेना में भी काम मिलना उतना ही किठन होगा जितना कि ट्रियस्ट में था।

युब्रयाना से मैं पास के एक छोटे नगर कामनिक गया और वहां मुझे एक धातु की वस्तुएँ बनाने वाले कारखाने में नौकरी मिल गई जहाँ १५० मजदूर काम करते थे। अपने अवकाश के समय मैं 'सोको' (बाज़) नामक एक व्यायाम-शाला में जाने लगा। यह हैप्सबर्ग के विरुद्ध थी परन्तु मुझे उनकी रंग-बिरंगी वर्दिया और पर लगी टोपियां अच्छी लगती थीं। मैंने भी किस्तो पर एक वर्दी खरीदी और हर परेड में बैंड के पीछे अकडकर चलने लगा। मैं सप्ताह में तीन बार शारीरिक व्यायाम करता था जिससे मेरे शरीर को पुष्ट होने में बड़ी सहायता मिली क्योकि मैं एक दुर्बल लडका था। मेरे शिक्षण-स्थान के पार 'ऑरलोवी' (चील) नामक हैप्सबर्ग के समर्थक कैथोलिक क्लर्कों की सस्था के खेल का

मैदान था। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता जब कि हम बाज़ और काली ऑस्ट्रो फ़ाइल चीलों में झड़प नहीं होती थी।

मैं १९१२ तक कामनिक में ठहरा जबकि वह कारखाना जिसमे मैं काम करता था और जो वियेना के कॉरपोरेशन की संपत्ति थी, एकाएक दिवालिया हो जाने से बंद करना पड़ा। दूसरे दिन हमारे कारखाने के व्यवस्थापक ने हम सब को एकत्रित कर यह प्रस्ताव रखा कि हम बोहेमिया मे स्थित जिनेसेंन्कोवी जायें, जहाँ धातुओं की वस्तुएँ बनाने वाला एक बड़ा कारखाना था और जो तिजोरियाँ तथा इसी प्रकार की वस्तुएँ बनाता था। यहाँ मजदूरों की आवश्यकता भी थी। व्यवस्थापक इतना दयालु था कि उसने प्रत्येक मजदूर को यात्रा के व्यय के लिये सौ क्राउन दिये जो एक माह के वेतन से भी अधिक थे। बिना किसी संदेह के मैंने तथा मेरे पचास साथियों ने प्रसन्नतापूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। हम लोग वियेना होकर गये। वहाँ उसे देखने के लिये ठहरे और तब बोहेमिया चले गये। स्टेशन पर हमें मजदूरों की एक भीड़ मिली जिसने बताया कि वे हड़ताल पर थे और वास्तव में हम उनकी हड़ताल भंग करने के लिये भेजे गये थे।

स्टेशन से हम लोग मजदूरों के भवन में गये जहाँ पता चला कि हम लोगों को धोखा दिया गया है, अतएव हमने काम पर न जाने का फैसला किया। कारख़ाने के व्यवस्थापकों को लगा कि जैसे वे हमारे द्वारा हड़ताल भंग नहीं करवा सकते और उन्हें अपने मजदूरों की मांगें स्वीकार करनी पड़ी। उन लोगों को तरक्की मिली और हम स्लोवानिया से आने वालों को भी पहले से अच्छा वेतन मिला।

धातु का काम करने वाले उस कारख़ाने का मजदूर-संघ काफी शक्तिशाली था और वह इस संघर्ष में सफल रहा। जैकोस्लोवाकिया के मज़दूर हम लोगों को बहुत प्यार करने लगे। मैंने बोहेमिया से बढ़कर अभिनन्दन और कहीं नहीं पाया। हम लोगों में दो क्रोशिया के निवासी भी थे और शेष में से अधिकांश स्लोवानिया के निवासी। सेन्कोवी में मैंने दो माह तक काम किया और तब योरुप के उस भाग में धातु के सबसे बड़े कारख़ाने देखने के लिये आतुर होगया जैसा कि नवयुवको लिये स्वाभाविक होता है। कुछ ही महीनों मे मैंने अपनी पसंद के प्रत्येक स्थान पर कुछ-कुछ ठहरते हुए जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगरी के आसपास यात्रा की।

मुझे याद है कि पिल्सेन में स्कोदा के काम मुझे पसंद नहीं आये क्योंकि उन दिनों वे प्रचलित नही थे। मुझे रूहर अधिक पसंद आया। उसकी सब धुंए की चिमनियां उस छोटे से भाग में जंगल की तरह निकली हुई थीं। म्यूनिच के

कारखाने गदे थे परन्तु शरावखाने देखने योग्य थे। मेरी यात्रायें मेरे लिये सवसे वढ कर शिक्षा-प्रद थीं, जिन्होने मुझ जैसे युवक को विशाल दृष्टिकोण दिया। जहाँ तक मेरे व्यवसाय का प्रश्न है, मैंने वहुत लाभ उठाया। मैंने जर्मन भाषा भली प्रकार सीखी। जैकोस्लोवाकिया की भी काफी भाषा सीखी और मैं धातु के कारीगरो की अप्रकट शक्ति को भी समझने लगा जहाँ उनके विशाल कारखानो में हजारो आदमी नवीन से नवीन मशीनो पर साथ-साथ काम करते थे।

मैंने अपने जागोरिये के भले और पुराने अध्यापक विम्पुलशेक के शब्दो को याद किया जो यह कहा करता था कि धातु के कारीगर ही भविष्य के निर्माता हैं। योरुप में इस प्रकार इधर-उधर घूम कर मेरा अपने परिवार से सपर्क समाप्त सा होगया था। अत में यात्रा करते-करते मैं वियेना पहुँच गया, तव घर पत्र लिखा। कुछ ही दिन पश्चात् मुझे अपनी माँ का उत्तर मिला जिसमें लिखा था कि मेरा सबसे वडा भाई मार्टिन, जिसने जागोरिये तव छोडा था जव मैं वहुत छोटा था, पास ही वीनर नोइस्तादत में स्टेशन पर रेल्वे का कर्मचारी था। मै अपने परिवार के किसी न किसी व्यक्ति को देखने के लिये व्याकुल होगया और शीघ्र ही वीनर नोइस्तादत के स्टेशन पर यह पूछताछ करने गया कि कोई मार्टिन ब्रोज को जानता है या नहीं। तीसरे ही व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं ही मार्टिन ब्रोज हूँ।"

हम लोगो ने दस वर्ष से भी अधिक समय से एक दूसरे को नहीं देखा था। हमें आपस में कितनी वाते करनी थी!

मेरा भाई मुझे अपने घर ले गया जो नोवोर्फ-आँ-दर लीता के एक छोटे से गाँव में था। यहाँ वह अपनी पत्नी और एक वर्ष के वच्चे के साथ रहता था। कुछ ही समय पश्चात् मुझे वीनर नोइस्तादत के डायमलर कारखाने में नौकरी मिल गई। मेरे भाई ने मुझे अपने साथ रहने के लिये कहा और मैं प्रतिदिन रेल-गाडी से कारखाने जाने लगा।

इस कारखाने का काम मुझे अन्य कारखानो के काम की अपेक्षा अधिक रोचक लगा। अवकाश के समय मेरे पास मनोरजन के दूसरे साधन थे। रविवार की दोपहर को मैं अपने मित्रो के साथ वियेना जाता था। हम प्राय: ऑरफियम नामक स्थान पर जाते थे जो एक प्रकार का सगीत-भवन था, जहाँ जादूगर, और विदूषक के खेल तथा वियेना के हल्के-फुल्के गाने होते थे।

वियेना के वडे-वडे 'कॉफी हाउस' में जाना मेरी सामर्थ्य के बाहर था परन्तु मै खुले हुए उपाहार-गृहों के जंगलो के सहारे खडा होकर वहा का सम्मिलित वाद्य-संगीत तब तक सुनता रहता था जब तक कि वहा के बैरो का मुखिया

मुझे भगा न दे। वीनर नोइस्तादत मे मेरा मुख्य मनबहलाव सप्ताह में दो बार व्यायामशाला में विशेष रूप से पटेबाजी सीखना होता था।

एक बार तो कुछ मित्रों तथा मुझ मे नृत्य सीखने की इच्छा जागृत हुई और हम एक नृत्य सिखाने वाले वृद्ध अध्यापक के स्कूल में भर्ती होगये।

यह १९१३ का समय था। उस समय मेरी आयु २१ वर्ष थी और मेरे क्रोशिया लौटने का समय आ पहुँचा था जहाँ मुझे आस्ट्रिया और हंगरी के साम्राज्य मे दो वर्ष के लिये सैनिक सेवा करनी थी। कई कारणों से आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य की नौकरी मुझे आकर्षक नही लगती थी। यह तो अत्याचारी सेना थी जिसने न केवल मेरे लोगों को दासता मे रख छोड़ा था बल्कि जो अन्य राष्ट्रों को भी दासता की बेड़ी पहनाने का एक साधन थी। इसके उपरांत यह एक पुराने ढंग की बड़ी नासमझ सेना थी। यह नियम और विधि से तो काम करती थी परंतु सैनिकों को युद्धाभ्यास के स्थान पर कवायद करना सिखाती थी।

सेना की बैरकों में बिताया हुआ अपना पहला दिन मैं कभी नहीं भूल सकता। जब मैं सेना मे भर्ती हुआ तो मुझे अपने सिर के बालों पर बड़ा गर्व था जैसा कि युवको के लिये स्वाभाविक है, परन्तु मेरे सेनानायक का ऐसा मत नही था। उसने मुझ से कहा, "समाजवादी महोदय, जरा इधर तो आइये; मैं आपके बाल अच्छी तरह काटूंगा।"

तब उसने एक बाल काटने की कैंची ली और मेरे सिर के बाल उड़ा दिये जो मुझे बड़े प्रिय थे।

उसके पश्चात् नये उत्पात होने लगे। हमें राजसी परिवार के सब नाम कंठस्थ करने पडते थे। हमारा नायक बड़ा निर्दयी था। वह हम तीस व्यक्तियों के साथ एक कमरे मे ही सोता था।. जब वह सिगरेट जलाना चाहता तो सिसकारता 'प्स्--प्स्--प्स्--प्स्' और हम तीसो के तीसों को बिस्तर से कूदकर उसे शीघ्र दियासलाई देनी पड़ती।

यदि कोई देर करता तो उसे दंड दिया जाता। कुछ दंड तो अजीब थे। उदाहरणार्थ, किसी सैनिक को बाहर जाकर एक मेंढक ढूंढना पड़ता। तब नायक एक खड़िया का टुकड़ा लेकर जमीन पर एक घेरा बनाता। मेंढक को उस घेरे मे रख दिया जाता और सैनिक को आदेश दिया जाता कि वह उस मेढक को घेरे से बाहर नही निकलने दे।

मुझे याद है कि मेरे गाँव का एक मित्र मेरे नगर चले जाने के बाद भी कुमरोवेत्स में रहा। वह एक भोला-भाला किसान का लड़का था और बड़े-बड़े राजसी नाम शीघ्रता से नही याद कर सकता था। दण्ड के लिये इतना कारण

पर्याप्त था। नायक ने उसे कमरे के एक कोने में खपरैलो से बनी एक बड़ी बिना जली अगीठी पर चढने को कहा। उससे यह भी कहा कि वह जाँघो के बल बैठ कर अपनी उँगली को माथे पर मार-मार कर यह बार-बार दुहराये कि "मैं मूर्ख हूँ, मैं मूर्ख हूँ।"

मेरे गाँव का साथी एक घंटे से अधिक सताया गया। जब वह नीचे उतर कर आया तो आँगन के एक दूर के कोने में जाकर रोने लगा।

आस्ट्रिया-हंगरी की सेना में किसी व्यक्ति को आगे बढ़कर काम करने के लिये बड़ा निरुत्साहित किया जाता। किसी प्रकार मैंने उस अवसर को सैनिक विज्ञान सीखने में लगाया, जितना भी मैं सीख सकता था। मुझे बिना कमीशन वाले अफसरो के स्कूल में भेजा गया और मैं दस्ते में सबसे कम आयु वाला सार्जेंट मेजर बन गया। मैंने पटेबाजी में दस्ते की शूरवीरता का पुरस्कार जीता और इसके पश्चात् बुडापेस्ट में समस्त सेना की शूरवीरता का द्वितीय पुरस्कार लिया साथ ही बर्फ पर फिसलने का अच्छा अभ्यास जागरेब के बाहर वाले स्येय पर्वत के ढालो पर किया, जहाँ मैंने ३५वी 'होमगार्ड' की बैरको में अपनी नियत अवधि में काम किया था।

सेना में मेरा जीवन रात भर में ही बदल गया। सन् १९१४ में युद्ध छिड़ गया था। एक दिन सध्या को हमारे सब जत्थों को बैरको के परेड के मैदान में एकत्रित कर हम लोगो को बडे दुख से सूचित किया कि क्राउन प्रिन्स फ्रासिस फरडिनैन्ड की सारायेवो में हत्या कर दी गयी। अपनी सेना से निकाले जाकर हम एक दूसरे से भिडने लगे। समस्त क्रोशिया में यहाँ तक कि हमारे दस्ते में आस्ट्रिया निवासियो के विरुद्ध एक भावना जागृत हो रही थी। जब से तुर्क अपने ५ शताब्दियो के शासन के पश्चात् सन् १९१२ में बल्कान प्रायद्वीप से निकाले गये तब से हमारे लोग आस्ट्रिया-हगरी के शासन की समाप्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे नगर जागरेब में इस भावना का प्रदर्शन दो आस्ट्रियासमर्थक प्रादेशिक राज्यपालो की हत्या के प्रयत्न द्वारा किया गया। वे घायल हो गये। हमला करने वालो में से एक नवयुवक युगोस्लाविया का निवासी था जो काम करने के लिये अमरीका चला गया था। वहा से अपनी आस्ट्रिया-विरोधी भावनाएँ प्रदर्शित करने के लिये उसने जागरेब की लंबी यात्रा की थी।

सारायेवो के पश्चात् युद्ध छिडना केवल दिनो की बात थी, यह स्पष्ट था। हमारे दस्ते के किसान और मजदूरो ने युद्ध को हैप्सबर्ग के राजतंत्र के चंगुल से निकालने का एक अवसर समझा।

सारायेवो में हत्या के एक मास पश्चात् हम लोगो को युद्ध की घोषणा सुनने

के लिये कतार में खड़ा किया गया। हमारे दस्ते में १६ जत्थ थ; प्रत्येक जत्थे में २६२ व्यक्ति, जो कतार में आगये। हंगरी के सैनिक दस्ते आस्ट्रिया-हंगरी के विरुद्ध, यदि कोई विरोध हो तो उसे रोकने के लिये आये। युद्ध विरोधी भावनाएँ बढ़ रही थीं। हम लोग यह आशा कर रहे थे कि आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य को उतनी ही भारी हानि होगी जैसी कि उसकी कोइनिग्रैट्ज़ में हुई थी और हम यह प्रार्थना करते थे कि यह घृणित राज्य नष्ट हो जाय।

मैंने अपने सैनिक साथियों में युद्ध के विरुद्ध प्रचार किया। एक बूढ़े सार्जेंट मेजर ने जो सम्राट् फ्रांसिस जोजेफ का भक्त था यह सुना और इस बात को उसने फैला दिया। मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और बिना किसी जाब्ते की कार्यवाही के मुझे डेन्यूब पर पीट्रोवारादिन के किले की जेल में रख दिया गया। यह स्थान वास्तव में एक गुफा की भांति था जिसमें एक भी खिड़की नहीं थी। अंधेरे में मैं चारों ओर टटोलने लगा। मुझे 'इधर आओ, इधर आओ' की आवाज़ सुनाई दी। मैंने अपनी कोठरी के साथी को अपना नाम बताया और कहा कि मैं एक मजदूर हूँ। मुझे भी पता चला कि वह एक जर्मन सिपाही था और मजदूर भी। उसने मुझे बताया कि वह पिछले दो सप्ताह से इसी कोठरी में बन्द था और किसी ने उसकी सुध तक नहीं ली। उसके अनुभव से लाभ उठाकर मैंने शोर मचाना आरम्भ किया और दरवाजे पर जोर-जोर से मुक्के मारने लगा जिससे सेनानायक के सम्मुख मेरी पेशी शीघ्र हो। चार दिवस पश्चात् मुझे सफलता प्राप्त हुई। सौभाग्यवश सेनानायक ने सार्जेंट मेजर की अपेक्षा मेरे गवाह के बयान पर जो मेरा मित्र था विश्वास कर लिया और मैं मुक्त कर दिया गया।

एक मुर्गी मिली और उसने उसे अपने ढंग से पकाया। उसने मुर्गी को मारकर उसकी आँते साफ करने के बाद उस पर परो सहित मिट्टी की तह चढ़ा दी। तब उसे गरम राख में दबा दिया। जब ऊपर की मिट्टी बर्तन की तरह पक कर सख्त हो गई तो उसने उसे राख से निकाल कर अपनी बदूक के कुंदे से तोड़ा। मिट्टी चिपके हुए परो के साथ अलग हो गई और पका हुआ कोमल, लुभाने वाले बादामी रंग का मुर्गा हमारी आँखो के सामने था। वैसा मैने पहले कभी नही खाया था ।

सन् १९१५ के वसंत में एक नया रूसी आक्रमण कारपेथियन में उस भाग के सामने आरभ हुआ जो हमारे दस्ते के हाथ में था। २२ मार्च की ईस्टर के दिन मेरा सैनिक दस्ता ओकनो के छोटे नगर में जमा हुआ था।

रूसियो ने हम पर अचानक आक्रमण कर दिया। हमारे अधिकारी पीछे हेडक्वार्टर में ईस्टर मना रहे थे। हमने हमारे आगे आते हुए पैदल दस्तो को रोका परन्तु एकाएक हमारी दायीं ओर का दस्ता परास्त हो गया और रिक्त स्थान में एशियाई रूस के सरकासिया के घुडसवार भर गये। उनमें से एक ने मेरी बाँई भुजा के ठीक नीचे अपना दो गज लम्बा लोहे की नोक वाला दुधारी भाला भोक दिया। मै मूर्छित हो गया, तब जैसा कि मुझे पता चला, सरकासिया के लोगो ने घायलो को काटना शुरू कर दिया था यहाँ तक कि वे अपनी छुरियो से उनके टुकडे-टुकडे कर रहे थे। भाग्यवश रूसी पैदल दस्ते वहां पहुँच गये और उन्होने इस मार-काट को समाप्त किया।

इस प्रकार मै युद्ध बदी बना। मुझे पीछे एक अस्पताल में भेज दिया गया जो वोल्गा नदी के किनारे बसे काजान के निकट स्वियाश्स्क नामक नगर का एक प्राचीन मठ था। मेरा घाव गहरा तथा दुखदायी था और दुर्बलता में ही मुझे निमोनिया हो गया।

मेरे कमरे के बहुत से साथियो ने यह समझ लिया था कि मै मर जाऊँगा। एक दिन जब मै तेज बुखार के कारण मूर्छित पडा था तो एक नर्स ने मेरे बिस्तर पर लाल पट्टी रखदी थी जिसका अर्थ यह था कि इस मरणासन्न व्यक्ति को कमरे से शीघ्र हटाया जाय।

अत में मै स्वस्थ हो गया और अस्पताल में फिरने लगा। मैने रूसी भाषा का अध्ययन किया और उसे शीघ्र ही सीख लिया, क्योकि, यह मेरी मातृ-भाषा से बहुत कुछ मिलती-जुलती थी।

अपनी बीमारी तथा घावो के प्रभाव से पूर्णतया स्वस्थ होकर मुझे स्वि-यश्स्क छोड़कर आरदातोव जाने का आदेश दिया गया जो पास ही एक छोटा

नगर था और जहाँ मुझे काम करना था। यह मेरी अपनी इच्छा थी। हेग की प्रयानुसार तो एक विना कमीशन का अफसर होने के नाते मेरे लिये काम करना अनिवार्य नही था, परन्तु मैं बेकार नही बैठना चाहता था क्योंकि मनुष्य के लिये खाली बैठने से बढ़कर कोई वस्तु घातक नही होती। मुझे आरदातोव के निकट कालासीव नावक गाँव में भेजा गया जो आजकल कुइबिशेव का प्रान्त है जहाँ तारतार, मोरडविन और रूसी रहते हैं। मैंने एक छोटी मोटर से चलने वाली मिल में काम किया जिसके मालिक तीन धनाढ्य किसान थे। इस मिल द्वारा गाँव तथा आसपास का अनाज पीसा जाता था।

मिल का एक मालिक मुझे बहुत पसंद करता था क्योंकि मुझे मिल सुधारना आता था। एक बार जब हम गाँव के हमाम में अपने शरीर पर पेड़ की छोटी-छोटी टहनियाँ रगड़ रहे थे, और पूरा कमरा भाप से भरा हुआ था, मिल मालिक ने मुझे उसकी लड़की से विवाह कर लेने का प्रस्ताव रखा। उसने मुझसे कहा, "तुम एक कुशल मिस्त्री हो और मेरी लड़की मेरे लिये एक दूसरा छोटा मिस्त्री पैदा कर सकेगी।"

मैंने हँसकर उत्तर दिया कि मेरी विवाह करने की कोई इच्छा नहीं।

मिल में मेरे पास अधिक काम नही था इसलिये पढ़ने के लिये पर्याप्त समय मिलता था। एक अध्यापक का परिवार गाँव में रहता था और उनसे मुझे नियमित रूप से पुस्तकें मिल जाती थी। मेरा कुछ ज़ारविरोधी रूसियों से भी परिचय हो गया।

मैं आरदातोव में अधिक नहीं ठहर सका क्योंकि मेरी बदली युद्ध-बंदी परिवाहन केन्द्र में कर दी गई और मुझे युराल भेज दिया गया; फिर वहां से पर्म नगर के समीप कुंगूर नामक छोटे नगर को। वहाँ मुझे युद्ध-बंदी कैम्प का कमाण्डर बना दिया गया। हम लोगो को अनेक काम दिये गये। पहले रेल्वे लाइन का बनाना फिर सेंटपीटर्स बर्ग—साइबेरिया रेल्वे का सुधारना। तब सन् १९१६-१७ में शरद् ऋतु का आगमन हुआ। हमारे पास बहुत कम कपड़े थे और हमारी टोली का एक-न-एक आदमी प्रतिदिन मरने लगा। अपने विश्वास के लिये, हमने अपने श्रम का वेतन लेना प्रारंभ किया परन्तु उस कड़ाके के जाड़े में यह वेतन पौष्टिक भोजन खरीदने के लिये पर्याप्त नही था।

अंतर्राष्ट्रीय रैडक्रास की ओर से भेजे गये खाने और कपड़े के पार्सल हमारे लिये अत्यन्त सुविधाजनाक सिद्ध हुए। पहले पार्सल अमरीकी रैडक्रास द्वारा बांटे जाते थे, तत्पश्चात् यह काम स्वीडन के रैड क्रास को सौंप दिया गया।

इस प्रकार मै स्वीडन के रैडक्रास अधिकारी के संपर्क में आ गया, जिस का नाम, जहाँ तक मुझे याद है, सार्वे था।

किसी प्रकार मुझे पता चल गया कि रेल्वे-विभाग का प्रमुख अधिकारी जहाँ हम काम करते थे, पार्सल चुराता था। कई सौ युद्ध-वदियो का जीवन खतरे में पड गया था। एक दिन मैने सार्वे को पत्र लिखकर सब बाते स्पष्ट कर दी। एक निन्दनीय विषय उठ खड़ा हुआ। यहा तक कि कुंगूर की रैडक्रॉस की मुख्य अधिकारी एक रूसी धनाढ्य वृद्धा भी इस बात से चिढ़ गई।

विभाग के मुख्य अधिकारी को कोयलो पर घसीटा गया जिसके परिणामस्वरूप वह मुझसे घृणा करने लगा। वह बडा कुटिल व्यक्ति था जो सदैव जार की प्रशसा करता रहता था और मुझे मजदूरो के साथ देखकर बड़ा अप्रसन्न रहता था। उसे यह संदेह था कि मेरा उनके साथ राजनैतिक सबध है।

उसने मुझसे बदला लेने का पहला अवसर ढूढ निकाला। एक दिन तीन रूमानिया के युद्ध-वदी काम पर नहीं आये क्योकि वे बैरको में अपने ऊनी जूतो की मरम्मत कर रहे थे। कड़ाके की ठड पड़ रही थी। यदि वे बिना मरम्मत किये जूतो को पहने बाहर निकल आते तो उनके पैर जम जाते। उनके काम पर किसी भी क्षण आने की आशा थी। अचानक विभाग का मुख्य अधिकारी बैरक में घुस आया और पूछा कि मैने उनकी उपस्थिति क्यो लगाई जबकि वे वास्तव में बैरको में इधर-उधर घूम रहे थे।

मैने उन्हे बताया कि वे अपने जूतो की मरम्मत कर रहे थे और वे काम पर किसी भी समय आ सकते थे, परंतु उसने एक न सुनी। कुछ ही समय पश्चात् तीन कज्जाक आये और मुझे जेल में ले गये।

उस जेल को मै जीवन भर नही भूल सकता जिसने मेरे मस्तिष्क पर अपनी काली स्मृतियाँ छोडी है। जैसे ही मैने इस सीली हुई इमारत की ड्यौढ़ी मे प्रवेश किया, मुझे एक कोठरी में डाल दिया गया और तीन कज्जाको ने अपने कोड़े निकाल कर मेरी पीठ पर लगाने शुरू कर दिये। मैने तीस कोड़े सहन किये जिन्हे मै जीवन पर्यन्त याद रखूगा।

उस रात जब मै कोठरी में पुराल पर सो रहा था तो दरवाजा खुल गया और एक बूढ़े रूसी जेलर ने प्रवेश किया। उसने पुकारा, "आस्ट्रिया निवासी, आस्ट्रिया निवासी, मेरे साथ आओ।"

उसने मुझे बताया कि कज्जाक चले गये है और वह मुझे अपने जेल के निवासस्थान पर ले गया, जहाँ उसकी तीन पुत्रियाँ बैठी थी। उन्होने चायदानी में से थोड़ी-सी चाय उँडेली और बाजा सुनाया।

ठीक होने और विश्राम करने के पश्चात् जेलर ने मुझे मेरी कोठरी में भेज दिया। उसने मुझे सर्दी से बचने के लिये एक कंबल भी दिया।

मैंने इस जेल मे कई दिन व्यतीत किये। एक दिन शाम को मैंने आँगन में कुछ शोरगुल सुना और दरवाजे की ओर उसका कारण जानने के लिये दौड़ा। दूर से मुझे यह आवाज सुनाई दी, "जार की पराजय हो।" कुंगूर के सशस्त्र मजदूर जेल के बंदियों को यह सुन कर मुक्त करने आये थे कि जार को गद्दी से उतार दिया गया है। इसका अर्थ रूस मे क्रान्ति का प्रारंभ था।

अंत में मै मुक्त किया गया और युद्ध बंदी कैंप मे वापिस भेज दिया गया। विभाग के प्रमुख अधिकारी ने मुझे कड़ी निगाह से देखा परन्तु मेरे विरुद्ध कुछ भी करने का साहस नही था। कैंप में जोश का अंत नहीं था। रूसी जार गद्दी से उतार दिया गया था। हम क्रोशिया के युद्ध-बंदियों ने अपने आपसे पूछा कि वह दिन कब होगा जब आस्ट्रिया-हंगरी का सम्राट्, फ्रांसिस जोजेफ, गद्दी से उतारा जायगा।

उस रेल्वे के कारखाने में एक वृद्ध पोलैंडनिवासी इंजीनियर था। सट पीटर्सबर्ग के प्युटीलोव कारखानो मे उसका एक लड़का काम करता था, जो स्वयं भी एक इंजीनियर था। एक दिन उसका पिता मुझे अपने घर ले गया, जहाँ मजदूर बोल्शेविको की एक टोली भी थी। यहाँ पर हमने लेनिन की कुछ पुस्तकें पढ़ी।

परिस्थिति बदल गई। अंतरिम सरकार युद्ध को बढ़ाना चाहती थी और मजदूरों के विरुद्ध आन्दोलन को तीव्र करना चाहती थी। लोगों ने युद्ध के मैदान में जाने से इंकार कर दिया। मुझे एक दिन फिर पकड़ लिया गया और जेल में डाल दिया गया, जहाँ मै बहुत दिनों तक रहा। मै नही जानता मेरी क्या दुर्दशा होती यदि कारखाने का इंजीनियर मेरी सहायता नहीं करता। उसके बीच में पड़ने से मुझे मई १९१७ में मुक्त कर दिया गया, और पर्म नगर के पास एक छोटे से रेल्वे स्टेशन पर मेरी बदली कर दी गई। रोमानिया के तीस युद्ध-बंदियों की टोली वहाँ थी और हम रेल की पटरी की मरम्मत करते थे।

अब भी मै खतरे से बाहर नही था, क्योंकि जिन मजदूरों से मेरा संपर्क था, वे पकड़ लिये गये थे इसलिये मुझे भागना पड़ा। यह जून की समाप्ति के दिन थे। बूढ़े इंजीनियर ने मुझे कुछ सादे वस्त्र दिये और मै दो स्टेशनों तक पैदल चला तब कही अनाज से भरी हुई साइबेरिया से पीटर्सबर्ग जाने वाली एक गाड़ी में बैठा। गेहुँओ की बोरियो के बीच लेटा हुआ मै कई दिन पश्चात् रूस की राजधानी पहुँचा।

मै सीधा बूढ़े इंजीनियर के पुत्र के पास पहुँचा जो प्युटिलोव के कारखाने

में काम करता था। मैंने उसे उसके पिता की शुभ कामनाएँ दीं और वह मुझे अपने घर ले गया।

कुछ दिनो पश्चात् अंतरिम सरकार के विरुद्ध बड़े-बड़े प्रदर्शन किये जिन्हे 'जुलाई प्रदर्शनो' के नाम से जाना जाता है। मै मजदूरो के जलूस मे था। एक बडे रेल्वे स्टेशन के समीप पहुँचते ही स्टेशन की इमारतो की छत से भारी मशीन-गनें हम पर चलाई गईं जिससे बहुत आदमी मर गये। भारी संख्या में मजदूर गिरफ्तार किये जाने लगे। मेरा इंजीनियर मित्र भी गिरफ्तार कर लिया गया और मुझे सेंट पीटर्सबर्ग के पुलो के निकट छिपना पडा। अंत में मैंने फिनलैंड भाग जाने का निर्णय किया। मै सीमा तक पहुँच गया परन्तु साम्राज्यी पुलिस ने, जिसकी सब संदेहजनक व्यक्तियो पर आँख थी मुझे हवालात में ले लिया। पूछे जाने पर मैंने बताया कि मैं आस्ट्रिया का युद्ध-बंदी हूँ। मुझे तब सेंट पीटर्सबर्ग लौटा दिया गया जहाँ मै गिरफ्तार कर बंदी बना लिया गया।

सेंट पीटर्सबर्ग में मुझे पीट्रोपावलोवस्क गढ की जेल में रख दिया गया। नीवा नदी मेरी खिडकी के शीशे तक आती थी। कोठरी पत्थर की बनी हुई थी जिसमें चूहे दौडते रहते थे। तीन सप्ताह पश्चात् मुझे देश निकाला देकर वापिस युराल में कुंगूर भेज दिया गया। मुझे इस जगह लौटने में बेहद संकोच हो रहा था क्योकि मै अच्छी तरह जानता था कि वहाँ जाकर मेरा कुछ भी भला नहीं होगाइसलिये मै रेलगाडी से ही भाग जाने के अवसर की ताक में था। गाडी धीरे चल रही थी। दिन बीत गये। येकातरिन्बुर्ग (आजकल स्वर्दलोवस्क) पहुँच कर मैंने एक पहरेदार से चाय के लिये पानी ले आने की आज्ञा माँगी ; जब मै स्टेशन से बाहर निकला तो मेरी मुठभेड दूसरे पहरेदार से हुई जो पहले ही रेल गाडी से उतर चुका था। उसने मुझे पहचान लिया और 'ओ योश्का!' कहकर संबोधित किया।

तब एकाएक वह चिल्ला उठा, क्योकि उसने मेरी भाग जाने की नीयत पहचान ली थी। वह अपनी बंदूक उठा ही रहा था कि मै भीड में खो गया। स्टेशन के प्लेटफार्म की ओर वापिस जाते हुए मै एक चलती गाडी मे कूदकर बैठ गया।

मै सादे कपडे पहने हुए था और रूसी भाषा इतनी अच्छी तरह जानता था कि किसी को मेरे युद्ध-बदी होने का सदेह तक नही हो सकता था। येकातरिन्बुर्ग स्टेशन ने अन्य सब स्टेशनो को यह सूचना दे दी कि एक युद्ध-बंदी भाग गया है। जब हमारी गाड़ी ट्यूमें स्टेशन पर पहुँची, एक पुलिस अधिकारी मेरे डिब्बे में घुस आया और मुझे सबसे निकट की बेंच पर बैठा देखकर मेरे पास तक

आकर पूछन लगा, "क्या कोई भागा हुआ आस्ट्रिया-निवासी तुम लोगों में तो नही है ?"

मैंने कहा, "नहीं" ।

गाड़ी फिर चल पड़ी । कन्डक्टर भला आदमी था । उसने मुझे बिना टिकट यात्रा करने दी । मेरे यात्री साथियों ने मुझे भोजन दिया । हम यूराल पार करके साइबेरिया पहुँच गये ।

एक दिन शाम को हमारी गाड़ी ओमस्क के निकटवर्ती स्टेशन आता-मानस्की ह्यूटर पर रुकी ।

सशस्त्र मजदूरों की एक टोली ने हमारी रेलगाड़ी को घेर लिया । हम सबने पूछा कि यह क्या हो रहा है ।

एक मजदूर ने उत्तर दिया, "यह सोवियत सरकार है ।"

अक्तूबर क्रान्ति उस दिन प्रारंभ हुई थी और वे सशस्त्र मजदूर ओमस्क के बॉलशेविक थे । वे स्टेशन पर मध्य वर्ग के भागे हुए लोगों को पकड़ने भेजे गये थे । उन्होने एक-एक मुसाफिर से पूछताछ की और फिर मेरी बारी आई । मैंने उन्हें बताया कि मै आस्ट्रिया का एक युद्ध-बंदी था और उन्हीं की भांति एक मजदूर । उन्होंने कहा कि सब कुछ ठीक है और मुझे युद्ध-बंदी कैंप में जाना चाहिये जहाँ पर कि बंदी बॉलशेविक बन गये थे और अंतर्राष्ट्रीय लाल सेना में भर्ती हो गये थे ।

कैंप में पहुँच कर मैंने शीघ्र अंतर्राष्ट्रीय लाल सेना मे भर्ती होने के लिये आवेदन पत्र भेजा । वहाँ मुझे जैकोस्लोवाकिया, हंगरी तथा रूमानिया आदि सब जगह के युद्ध-बंदी मिले । अनेक स्थानों पर यह लिखा हुआ है कि मैंने अक्तूबर क्रान्ति और रूसी गृह-युद्ध में पर्याप्त भाग लिया है । दुर्भाग्यवश ऐसी बात नहीं है । मैं अंतर्राष्ट्रीय लाल सेना में कई महीने तक रहा परन्तु मोर्चे पर कभी नही लड़ा क्योंकि अपने घाव और बीमारी के कारण मैं अब तक बड़ा दुर्बल था, विशेषकर कुंगूर से सेंट पीटर्सबर्ग यात्रा करने और फिर रूखा-सूखा भोजन मिलने से । हमारी टुकड़ी ने मोर्चे पर भेजे जाने की बराबर मॉग की परन्तु मुख्य कार्यालय ने हमें ओमस्क में पीछे संतरी का काम करने तथा मारिया-नोवका रेल्वे स्टेशन के काम पर लगा दिया ।

अंतर्राष्ट्रीय लाल सेना में हमने बॉलशेविक समाचारपत्र और लेनिन की पुस्तिकायें पढी । अक्तूबर क्रान्ति के सब नेताओं में सबसे अधिक नाम हमने लेनिन का सुना । ट्राटस्की के नाम की भी चर्चा होती थी । दूसरों के विषय में कुछ कम जानकारी थी । जब तक मै रूस में रहा स्तालिन का नाम एक बार भी नहीं सुना ।

प्रकरण तीन

मैं दल की ज़िला समिति का सदस्य चुन लिया गया......

युद्ध के उन छः वर्षो में जब मै अपने देश से दूर था, वड़े-वडे परिवर्तन हो गये। जागोरिये के किसानो के टोपो में मुर्गों के पर फिर दिखाई देने लगे। आस्ट्रिया-हंगरी के राजतंत्र की नींव हिलने लगी थी। मोर्चे पर पराजयो के कारण आस्ट्रिया के दस्ते के दस्ते समाप्त हो रहे थे और जागोरिये के किसानो ने भर्ती होने से इन्कार कर दिया था। एकवार तो वे सशस्त्र होते ही जंगल में भाग गये जहाँ उन्होने 'हरी सेना' संगठित कर ली।

चार शताब्दियो से भी अधिक समय के पश्चात् अक्टूबर सन् १९१८ में क्रोशिया में हैप्सवर्ग वंश का शासन समाप्त होगया। जागोरिये का किसान अपने टोप में मुर्गे के पर लगाकर मातीया गुवेत्स के समय से अपने आपको अमीरो के बराबर समझता चला आया था।

बंदोबस्त का समय आगया था। प्रत्येक रात्रि को किसी न किसी गढ में आग लग जाती थी और दूसरे ही दिन जिमीदार की भूमि किसानो में बंटी हुई मिलती थी। अंत में वह समय आगया था जब जागोरिये के दास को अपनी भूमि अपने स्वतंत्र देश में मिले। जिस प्रकार एक बार उन्होने एर्डोडीस की जायदाद सीजरग्रेड पर चढ़ाई की थी उसी प्रकार जागोरिये के लोगो ने अब बान्या गढ़ को घेर लिया था जो एर्डोडीस की जायदाद थी। आसपास की कोयले की खानो के मजदूरो के साथ-साथ कुमरोवेत्स तथा निकट के गाँवो के किसान गढ़ में घुस गये और उन्हे जो कुछ भी मूल्यवान वस्तुएँ मिली, उन्हे लेकर गढ में आग लगा दी, यही नहीं अंत में उसे बारूद से उड़ा दिया।

क्रोशिया के अन्य भागो की भांति जागोरिये में भी दक्षिणी स्लाव के लोगो, सर्बिया, क्रोशिया, मोन्टेनग्रो, मेसीडोनिया तथा बलगेरिया आदि के निवासियो को मिलाकर एक संयुक्त राष्ट्र बनाने की प्रबल इच्छा थी। प्राचीन शोकमय युग से ही दक्षिण स्लाव के लोगों में एकता की भावना उमड रही थी। अब आस्ट्रिया-हंगरी के पतन के साथ उन्हे यह अपनी सामर्थ्य में जान पड़ी।

पहले-पहल तो उन्हें निराश ही होना पड़ा। बुडापेस्ट और बियेना के स्थान पर कुमरोवेत्स, जागोरिया तथा समस्त क्रोशिया के किसानो के सम्मुख एक नया शत्रु उठ खड़ा हुआ था। राष्ट्रीय समितियां नगरों में शीघ्र ही संगठित की गईं, विशेष रूप से जागरेब में; इनमें मध्य वर्ग के प्रतिनिधि थे और इनका ध्येय आस्ट्रिया-हंगरी जैसे सामाजिक ढांचे को कायम रखना था।

राष्ट्रीय समिति ने अपनी आशाएँ बैलग्रेड, रीजेट अलेक्जेंडर व उसके साथियो पर बाँध रखी थीं। उन्होंने तुरंत सहायता मांगी और यह निवेदन किया कि सर्बिया की सेना को जिसने इतना मूल्य चुका कर युद्ध में अपने देश की रक्षा की थी, क्रोशिया के किसानों के आन्दोलन को दबाने के लिये भेजा जाय। अलेक्जेण्डर ने फौरन ही सर्बिया की सेना को क्रोशिया जाने का आदेश दे दिया। उनके साथ फ्रांस की उपनिवेशी सेना और एनेमाइट के कुछ दस्ते भेज दिये गये।

राष्ट्रीय समिति ने जो विभिन्न दलों के राजनीतिज्ञों द्वारा निर्मित थी, अलेक्जेन्डर को सम्मान देने के लिये एक प्रतिनिधि मंडल बैलग्रेड भेजा और सर्बिया, क्रोशिया तथा स्लोवानिया के निवासियों के संयुक्त राष्ट्र का निर्माण घोषित किया।

राष्ट्रीय समिति के जिस अकेले व्यक्ति ने इसका विरोध किया वह क्रोशिया गणराज्य-कृषक-दल (Crotian Republican Peasant Party) का नेता था। इसने प्रतिनिधिमंडल को जैसे ही वह प्रस्थान करने वाला था, ललकार कर कहा, "तुम करने से पहले सोचो ..... अपने ही लोगों का सामना अपनी इच्छित वास्तविकता से कराना एक राजनैतिक भूल होगी।"

इस प्रकार लोगों का मत लिये बिना ही एक नये राज्य का निर्माण हो गया। इनसे यह नहीं पूछा गया कि राज्य किस प्रकार का हो, विभिन्न जातियों के परस्पर सम्बन्ध क्या हों, यह एक गणतंत्र हो अथवा राजतंत्र और किस प्रकार का सामाजिक संगठन अपनाया जाय ?

संयुक्त राष्ट्र के निर्माण कीघोषणा के कुछ ही दिन बाद जागरेब में एक विद्रोह उठ खड़ा हुआ जिसमें २५वीं डोमोब्रानी (वह दस्ता जिसमें मैंने काम किया था और जिसके अधिकांश लोग जागरेब के थे) और ५३वी पैदल सेना सम्मिलित थी, जागरेब के मुख्य चौक में एक झगड़ा शुरू हुआ जिसमें हथियार काम में लिये गये और रक्त बहा कर विद्रोह दबया गया। इसमें तेरह व्यक्ति मरे तथा सत्रह घायल हुए। देश के अन्य भागों में भी इसी प्रकार के विद्रोह हुए। मॉन्टेनग्रो में भी भय छा गया, जहां पर लोगों से पूछे विना ही एकीकरण की घोषणा कर दी गई थी।

दशा अच्छी नहीं थी, युद्ध से बडी हानि हुई थी। उदाहरणार्थ, सर्बिया में जनसंख्या के इक्कीस प्रतिशत व्यक्ति मर गये थे। किसान जो राष्ट्र की सख्या के ८५ प्रतिशत थे पहले से कहीं अधिक निर्धन हो गये थे और अनेक भागो में तो वे विद्रोह कर रहे थे। औद्योगिक मजदूरो की दशा तो और भी बुरी थी। कारखाने बहुत कम थे और ये भी या तो बंद हो गये थे अथवा कुछ समय के लिये काम करते थे। इसके परिणामस्वरूप बेहद बेकारी फैल गई थी। वेतन की अपेक्षा कीमते चार गुनी अधिक बढ गई थीं।

अलेक्ज़ेन्डर ने सेट पीटर्सबर्ग कोर्ट के "कैडेटकोर' में शिक्षा पाई थी और शीघ्र ही उसने युगोस्लाविया को अपने वहा सीखे हुए नियमो पर चलाने की इच्छा प्रकट की। यहां तक कि इसका स्वप्न रोमानोव्स की गद्दी पर काराजियोर्जवित्स वंश की स्थापना करना था। सन् १९१९ में बैलग्रेड के एक प्रमुख समाचार पत्र में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि अलेक्ज़ेन्डर अपनी बहन, येलेना, जो रूस के ग्रैंड ड्यूक कोन्स्तान्तिन की पत्नी थी, के पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था (उस समय यह सोचा जाता था कि अलेक्ज़ेन्डर के सन्तान नहीं होगी) इस प्रकार रोमानोव, काराजियोर्जवित्स तथा न्येगोस वश का मेल हो जाता।

अलेक्ज़ेन्डर और उसके गुट से आरंभ होकर भ्रष्टाचार देश भर में फैल गया। सन् १९२१ में अपने पिता बादशाह पीटर की मृत्यु के पश्चात् पहला प्रश्न जो उसने उठाया वह अपने निजी खर्चे की बढोतरी का था। धारासभा की पिछली कार्यवाहियो से यह विदित होता है कि निकोला पासित्स सरकार ने राष्ट्रीय धारासभा में एक विशेष विधेयक प्रस्तुत किया था जिसमें निजी खर्चे को बढा कर प्रतिवर्ष दो करोड चालीस लाख दीनार करने का प्रस्ताव था। विधेयक को प्रस्तुत करते समय सरकार ने बताया था कि बादशाह अलेक्ज़ेन्डर बडा योग्य था कि "जब चालीस वर्ष पूर्व बारह लाख दीनार का निजी खर्च स्वीकृत किया गया था तब से राज्य की सीमायें पहले से सात गुनी बढ गई थीं" कि, "जर्मनी के विलियम को एक करोड सत्तर लाख 'मार्क्स' मिलते थे और आस्ट्रिया के फ्रांसिस जोज़ेफ को प्रतिवर्ष चार करोड बीस लाख क्राउन।"

सरकार ने यह मांग की थी कि निजी खर्च फ्रासीसी सिक्के फ्रैंक में दिया जाय। विरोधी दल (कृषक, समाजवादी और गणतत्रवादियो) ने बताया कि वास्तव में निजी खर्च छ. करोड दीनार प्रतिवर्ष था, न कि दो करोड़ चालीस लाख। अत में धारासभा ने विधेयक पास कर दिया परतु बादशाह को अपने निजी खर्च का चौथाई भाग फ्रैंक में लेने की स्वीकृति दी। इस विधेयक की उसने

परवाह नहीं की और दस वर्ष में ही सत्रह करोड़ तीस लाख दीनार लेना प्रारंभ कर दिया।

सन् १९२१ में अलेक्जेन्डर राष्ट्रीय बैंक का भी प्रमुख हिस्सेदार बन गया और उसने निर्यात बैंक, बैलग्रेड सहकारी समितियों तथा आड्रियाटिक बैंक के प्रतिनिधियों को उनके हिस्से स्वयं को सौंप देने के लिये मजबूर किया। इन हिस्सों का मूल्य उसने चार वर्ष के मुनाफे में से चुका दिया, जब कि इनका मूल्य पॉचसौ से लेकर छः हजार दीनार तक बढ़ गया था। बादशाह अलेक्जेन्डर ने अपने छोटे-छोटे व्यवसाय भी नही छोड़े। उसने टॉपसाइडर के पिछले खेत पर अधिकार जमा लिया और बैलग्रेड के बाजार में किसानों की होड़ मे अंडे और सब्जी बिकवाने लगा। राजसी पहरे के सिपाही बिना वेतन के उसका काम करते थे और वे सैनिक पतलून व सादे ओवरकोट पहनकर बाजार में बादशाह की सब्जी बेचा करते थे। इस बिसाती बादशाह ने शराब और बेर की ब्रांडी के कारखाने देमीर और कापीया में खोल दिये। ये सब जायदादें कर से मुक्त थीं क्योंकि वे बादशाह की निजी संपत्ति थीं।

एजेण्टों द्वारा बादशाह ने विदेशी पूंजी से भी संबंध स्थापित कर लिया, विशेषकर फ्रांस की पूंजी से, जिसने नये राज्य में अंधाधुंध मुनाफ़ा कमाना आरंभ कर दिया था।

नेतृत्व की दुर्बलता के होते हुए मजदूर आरंभ में आगे बढ़ने लगे। आठ घंटों का दिन मान लिया गया, मजदूर संघ में ढाई लाख मजदूर थे। नये मजदूर दल में साठ हजार सदस्य थे और वह अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी संघ में तीसरा अथवा चौथा समझा जाता था। उस समय के युगोस्लाविया की दशा बैलग्रेड की रक्षक-सेना के उदाहरण से भली प्रकार चित्रित होती है, जिसने अपने सब कर्मचारी दल की सहायता के लिये प्रस्तुत कर दिये।

जब हंगरी में बलवा हुआ तो युगोस्लाविया ही एक ऐसा पड़ोसी देश था जो अपनी सशस्त्र सेना नही भेज सका। निस्संदेह सरकार सेना भेजना चाहती थी परंतु २१ व २२ जून सन् १९१९ को पूर्ण हड़ताल हो जाने के कारण उसे यह विचार छोडना पड़ा। हंगरी और रूस में हस्तक्षेप रोकने के लिये ब्रिटेन, फ्रांस, इटली व अन्य योरुपीय देशों में एक साथ विरोध प्रदर्शक हड़तालें की गईं। समस्त देश का जीवन शिथिल पड़ गया। जागोरिया में किसानों और सैनिकों ने मिलकर पड़ोस की वाराजदीन की जेल पर आक्रमण किया। वहां उन्होंने तीन सौ बंदी किसानों को मुक्त किया जिन्हें बड़े जमींदारों की जायदाद पर कब्जा तथा भूमि का दुबारा बँटवारा करने के लिये कैद किया गया था। इस

के पश्चात् अलेक्जेन्डर ने युगोस्लाविया की सेना को हंगरी भेजने का साहस नहीं किया।

नये समाजवादी मजदूर दल का नेतृत्व, जिसके मंत्री प्रोफेसर सीमा मार्कोवित्स थे, इतना लचर था कि सन् १९२० में अलेक्जेन्डर की धाक फिर जम गई। पहले मई दिवस से कई दिन पूर्व रेल्वे कर्मचारियो और मल्लाहो की एक बडी हडताल असफल रही थी। हडताल इसलिये आरभ हुई थी कि परिवाहन मंत्री कैथलिक पादरी एन्टन कोरोसेत्स ने मजदूरो के प्रतिनिधि और उनके व्यवस्थापको में हुए समझौते को भग किया था। संघ को तोड़ने के लिये पहले तो उसने मक्कारी से मल्लाहो की मागें स्वीकार कर ली थीं फिर उसने रेल्वे कर्मचारियो पर बल-पूर्वक प्रहार किया। युवयाना में उसने पुलिस को उन हडतालियो पर गोली चलाने का आदेश दे दिया जो सभा में सम्मिलित होने जा रहे थे। दस व्यक्ति मारे गये और इक्कीस बुरी तरह घायल हुए। सीमा मारकोवित्स तुरंत पीछे हट गया और उसने यह नारा लगाया, "हमें उत्तेजित नही होना चाहिये।" हडताल असफल होगई। दो दिन पश्चात् मई दिवस पर समाजवादी मजदूर दल (Socialist Workers Party) की केन्द्रीय समिति ने सीमा मारकोवित्स के प्रभाव में यह कह कर मजदूरो को छुट्टी मनाने से रोका कि, "मई दिवस पर घर बैठो।"

श्रमजीवी जनता लड़ना चाहती थी जैसा कि उसने उसी वर्ष हुए चुंगी के चुनाव के समय प्रदर्शित किया था। बैलग्रेड में तथा सर्बिया के पांच बड़े नगरो, जागरेब व अन्य शहरो में साम्यवादी सफल रहे। जब जागरेब की नव-निर्वाचित नगर समिति ने शहर के भवन में अपना अधिवेशन किया तो पुलिस घुस आई और साम्यवादी मेयर डेलित्स मंच पर बोल ही रहा था कि उसे पकड कर ले गई। इसी प्रकार की घटनाएँ बैलग्रेड में भी हुई।

यह सब कुछ मेरे आने से पूर्व सन् १९१८, १९१९ और १९२० में हुआ था। लगभग छः वर्ष से मैंने अपनी मातृभूमि नही देखी थी। अपने देश मे बिताये हुए बाल्यकाल, और योरुप में अपनी यात्राओ तथा विभिन्न कार्यों ने मुझे पहले से ही समाजवादी बना दिया था, परंतु अब भी मुझे बहुत कुछ सीखना था। एक सैनिक, युद्ध बंदी, रूस की अक्तूबर क्रान्ति के दर्शक और ख़ानाबदोश ख़िरगीज लोगो में एक शरणार्थी के रूप में बिताये हुए वर्षो ने मुझे अनुभवी बना दिया था और उन वस्तुओ को समझने के लिये अधिक समर्थ भी बना दिया था जिन्हे मैं अब देखता था।

मैने अनेक हडतालो में भाग लिया, विशेष रूप से जागरेब के बैरो की

एक सफल हड़ताल में। अक्तूबर क्रांति के मनाये जाने के समय मैंने जागरेब के मजदूर-संघ के मुख्य कार्यालय मे भाषण दिया और इस नारे से अपना भाषण समाप्त किया कि, "मजदूर केवल शस्त्रों से ही विजय प्राप्त कर सकते हैं।"

यह उस समय की बात है जब देश का संविधान बनाने के लिये प्रतिनिधि चुने जा रहे थे। युगोस्लाविया के नव-निर्मित साम्यवादी दल ने ऐसे मजदूरों, किसानों और बुद्धिजीवियों की सूची प्रस्तुत की थी जो मजदूरों के आन्दोलन में काफी समय से सक्रिय भाग लेते रहे थे। मैंने जागरेब के आन्दोलन मे भाग लिया। हम लोगो को शानदार विजय मिली क्योंकि हमने उनसठ स्थान जीते थे। चुनाव लड़ने वाले दर्जन भर दलो मे से हम तृतीय थे।

अलेक्जेन्डर ने उसका उत्तर कुछ सप्ताह पश्चात् एक ऐसी घोषणा से दिया जिसके द्वारा मजदूर संघ व हमारे दल को गैर कानूनी ठहरा दिया गया और उनकी समस्त जायदाद जब्त करली गयी। जागरेब मे हमने एक विरोध-प्रदर्शक हड़ताल का आयोजन किया परंतु देश के अन्य भागों मे नेताओ को डराया-धमकाया गया था जिससे वे चुप थे।

हजारो मजदूर गिरफ्तार कर लिये गये थे। वेतन भी कम कर दिये गये थे। हमारे साथियो मे बड़ी गड़बड़ मच गई। आने वाली गर्मियो में वोयवोदीना के युवक साम्यवादियो के एक समूह ने, जिसका नेतृत्व बात्सो स्तेयित्स नामक एक राज कर रहा था, एक अधूरी बनी इमारत से ठीक उस समय एक बम फेंका जबकि संसद से बादशाह की सवारी लौट रही थी। बम टेलीफोन के तारों से टकराया और बादशाह के पीछे जा गिरा। उससे कुछ सैनिक तो घायल हुए पर अलेक्जेन्डर बेदाग बच गया। बात्सो स्तेयित्स उसी जगह पकड़ लिया गया, और आजन्म बन्दी बना लिया गया।

एक मास के पश्चात् क्रोशिया के एक गर्मियों के पहाड़ी-भ्रमण स्थान पर जागरेब के युवक साम्यवादियों की एक टोली ने 'घोषणा' के निर्माता तथा गृहमंत्री, मिलोराद द्राश्कोवित्स की हत्या कर दी। ये निजी रूप से किये गये काम थे। दल के नेताओं ने इनकी आज्ञा नही दी थी फिर भी सरकार ने फौरन संसद से साम्यवादी सदस्यो को निकाल दिया और मजदूरो को पकड़ना और प्रत्येक उग्र विचार वाले संदिग्ध व्यक्ति को दंड देना आरंभ कर दिया। आलीया आलीयादित्स नामक मजदूर को मृत्यु दंड दिया गया, जिसने गृहमंत्री की हत्या में भाग लिया था। जब न्यायालय के प्रधान ने उससे पूछा कि क्या वह अपने आपको अपराधी मानता है? आलीयादित्स ने उत्तर दिया, "पत्नी को पति से, और बच्चो को बाप से वंचित करने के लिये मैं अपने आपको दोषी समझता

हूँ। एक मनुष्य होकर दूसरे मनुष्य के प्राण लेने के लिये मै अपराधी हूँ परन्तु एक साम्यवादी के नाते साम्यवादियो को दड देने वाले गृहमंत्री की हत्या करना मै अपराध नहीं मानता। मैने अपना कर्त्तव्यपालन किया है।"

उसे क्षमा करने के लिये जनता की ओर से माग की गई परन्तु उसे फांसी पर चढा ही दिया। उसके मृत्यु दिवस पर ज़ागरेब में उसकी क़ब्र पर इतने यात्री आये कि पुलिस ने एक रात को उसके शव के संदूक को खोद कर चुपके से उसे बोसनिया के निकट के मुस्लिम क़ब्रिस्तान में गाड दिया।

मै फिलिप नाम की दुकान पर काम करता था। ताले बनाने वाले का वेतन इतना कम था कि उसे तीन क्राउन प्रति घंटा मिलता था। परन्तु एक छोटे से कमरे का मासिक किराया ६ सौ क्राउन था। मै शीघ्र ही निकाल दिया गया। ज़ागरेब में रहने से कोई लाभ नहीं था जहा कि मज़दूर सघो को तोड दिया गया था और मज़दूरो की गिरफ्तारियां हो रही थीं। मैने एक समाचार पत्र के विज्ञापन में पढ़ा कि वेलिको त्रोयस्तवो नामक गाँव में जो यहा से ६० मील की दूरी पर था, एक आटे की चक्की के मालिक को एक मिस्त्री की आवश्यकता थी।

मै सन् १९२१ के आरंभ में ही इस गाँव में चला गया। वेलिको त्रोयस्तवो जो एक रेल्वे लाइन पर बसा हुआ है और जिसके चारो ओर बडी उपजाऊ भूमि है, में लगभग ३३० अच्छे बने हुए मकान थे। मिल मालिक एक उदार-हृदय यहूदी था जिसका परिवार काफी बड़ा था। उसकी मिल मध्यम पैमाने की थी जिसमें पाँच मज़दूर काम करते थे। इसमें प्रतिदिन दस टन अनाज पीसा जा सकता था। मुझे एक ५० हॉर्सपावर के कोयले से चलने वाले एजिन पर नियुक्त कर दिया।

गाँव के किसानो में विद्रोह की भावना धधक रही थी। मेरे वहा जाने से एक वर्ष पूर्व उस प्रदेश में एक बडा बलवा हो चुका था। गाँव के इस झगडे में तीन व्यक्ति मारे गये थे।

मिल में मेरा काम एजिन की देख भाल करना था; या फिर मै दालान में बैठा उन किसानो से बाते करता रहता था जो अनाज पिसवाने आते थे। हम हर विषय पर बातचीत करते थे जैसे फसल की पैदावार, औद्योगिक वस्तुओं की ऊंची कीमते तथा करो आदि के सबंध में। किसान सुन चुके थे कि मै क्रान्ति के दिनो में रूस मे था इसलिये वे बडी उत्सुकता से तरह-तरह की बाते पूछते थे।

मैने उन्हें बताया कि किस प्रकार सफेद सेना ने लोगो के पिछड़ेपन और धार्मिक अंधविश्वासो पर भरोसा किया। साथ ही किस प्रकार उन्होंने यह अफवाह उड़ा दी कि स्वयं ईसामसीह बॉलशेविको के विरुद्ध लड़ने आयेंगे।

मोर्चे के एक भाग में सफेद सेना ने पादरियों की सहायता से बड़े-बड़े तंबू लगाये और उनमें रोशनी की। तब ईसामसीह का आकार सूली सहित प्रकट हुआ। यह सब लाल सेना को यह जताने के लिये किया गया था कि सफ़ेद सेना की ओर से ईसामसीह स्वयं लड़ रहे थे। बॉलशेविक फौरन ताड़ गये कि यह एक भली प्रकार अभिनीत धोखा था और फौज की उस टुकड़ी पर आक्रमण कर दिया। "ईसामसीह" घेर लिये गये। पादरी और झूठे "ईसामसीह" का छल तंबू में खोल कर रख दिया गया और सम्पूर्ण मोर्चे ने इस अनुचित कपट का पता लगा लिया।

एक दिन एक लंबा, गंभीर और मैत्रिकभाव का स्तेवोसावित्स नामक व्यक्ति मिल में आया। वह मेरा घनिष्ठ मित्र बन गया। वह भी मेरी भांति रूस में युद्ध के समय रहा था। वह आस्ट्रिया-हंगरी सेना का एक अधिकारी रहा और सन् १९१५ में कारपेथिया में बंदी बना लिया गया था। जब क्रांति प्रारंभ हुई तो सावित्स लालसेना में भर्ती होगया और जल्दी-जल्दी प्रगति करने लगा। यहां तक कि वह पिछले ज़ार के समय के जनरल मुरावयेव की सेना में एक दस्ते का मुख्य अधिकारी हो गया। जब मुरावयेव सफ़ेद सेना को पूरे मोर्चे में से रास्ता देने की व लाल सेना के साथ विश्वासघात करने की तैयारी कर रहा था तब सावित्स ने उसका भंडा फोड़ने और गिरफ्तारी करने में भाग लिया। युगोस्लाविया लौटने पर उसे राजसी युगोस्लाविया की सेना में भर्ती करने से इन्कार कर दिया और लैफ्टीनैन्ट की पेंशन मिलने लगी। सावित्स तथा आस पास के कुछ अन्य मजदूरों और किसानों की सहायता से, जो 'बोरबा' के पूर्व बड़े उत्साही थे, हमने चुपचाप राजनैतिक काम फिर शुरू कर दिया।

उन्होने मुझे एक थैली भर पन्ने दिये। मैंने उन्हे बांट दिया और उनका विश्वास-पात्र बन गया। हमने अपना सपर्क बनाये रखा और अपना काम किसानो में फैला दिया। कुछ समय पश्चात् मै जिला दल समिति का सदस्य चुन लिया गया।

इसी समिति में एक योसिप वालेन्ता नामक बढई था, जिसकी ब्येलोवार नगर में बडी प्रतिष्ठा थी। वह एक खेती वाडी सबधी औजार बनाने वाले कारखाने में काम करता था और उसने बडी सफलतापूर्वक चार हडताले भी आयोजित की थी। वालेन्ता को क्षय रोग था जिससे सन् १९२४ में उसकी मृत्यु हो गई। प्रादेशिक समिति ने उसे उचित् ढग से दफनाना चाहा। वह मजदूरो की एक विशिष्ट श्रेणी का लडने वाला था और समाजवादी प्रजातात्रिक लोग उसे अपना ही आदमी मानते थे क्योकि सन् १९१० से वह समाजवादी प्रजातात्रिक दल का सदस्य रहा था। इस प्रदेश में प्रथम बार एक मजदूर की अर्थी पर हँसिये और हथौड़े के साथ एक माला रखी गई। शव के जुलूस के आगे-आगे फूलो का हार ले जाने से मजदूरो पर बडा प्रभाव पडा। जब अर्थी घर से निकली तो उस समय समाजवादी प्रजातात्रिक दल के एक सदस्य को भाषण देना था परन्तु कैथोलिक पादरी ने इस पर आपत्ति की। इस बात का समर्थन वालेन्ता के माता-पिता ने किया जो बड़े दकियानूसी विचारो के थे, इसलिये सामाजिक प्रजातत्रवादी को पीछे हटना पडा।

जब जुलूस कब्रिस्तान पहुँचा तो एक साम्यवादी की भाषण करने की बारी थी। मैं अर्थी के निकट गया और कहा, मृत साथी को विदा और मेरा भाषण इन शब्दो से समाप्त हुआ, "साथी हम इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अत तक उन आदर्शो के लिये लड़ेंगे जो तुम्हे प्रिय थे।"

उस क्षण वालेन्ता की क़ब्र पर एक लाल झडा फहराया गया।

इसके साथ क्रिया कर्म समाप्त हो गया, परन्तु कैथोलिक पादरी ने फौरन पुलिस की चौकी मे जाकर शिकायत की कि एक साम्यवादी का क्रिया-कर्म किया गया था जिसमे वह गिरजे की विधि पूरी नही कर सका। पुलिस ने जाच-पड़ताल की और यह पता लगा लिया कि मेरे द्युरो सेग्वित्स नामक एक ताले बनाने वाले मित्र ने उसमें भाग लिया था। उन्होने उसे गिरफ्तार कर लिया और पूछा कि भाषण किसने दिया था पर उसने बताने से इन्कार कर दिया। किसी प्रकार पुलिस को यह पता चल गया कि वक्ता एक मिल वाला था। तब वे पकडे हुए सेग्वित्स के साथ ब्येलोवार के आसपास की सब मिलो मे घूमते फिरे। वे वेलिको त्रोयस्तवो पहुँचे और जब उन्होने मुझ से पूछा कि कही मैंने तो उस अवसर पर भाषण नही दिया था। मैंने उत्तर में बताया कि मैंने ही भाषण दिया

विया का साम्यवादी दल कभी भी सत्ता प्राप्त नहीं कर सकेगा।"

युवो रादोवानोवित्स को मेरी बात पसद नहीं आई। प्रेदोयेवित्स नामक वढई सघ के मत्री ने मुझे एक सभा में बताया कि बातचीत करने के पश्चात् युवो रादोवानोवित्स मुझ से डरा हुआ था और वह मुझे जासूस समझता था।

इसी समय सन् १९२५ के प्रारभ में देश के राजनैतिक जीवन में महत्व पूर्ण परिवर्तन हुए। क्रोशिया के प्रजातात्रिक-कृषक-दल के सब नेता गिरफ्तार कर लिये गये। रादित्स कुछ समय तक अपने जागरेव के घर में छिपा रहा परतु बाद में उसने अपने आपको अधिकारियो को सौंप दिया। देशभर में खल-बली मच गई। मजदूरो और किसानो के विरुद्ध आतक वढ गया। युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति ने एक गैर कानूनी समाचार-पत्र प्रकाशित करने का निर्णय किया। इसका सपादक और प्रकाशक मोजा पिजादे को रखा जो बैलग्रेड के प्राचीन यहूदी वश का एक बुद्धिजीवी व्यक्ति तथा चित्रकार था। यह छरहरे वदन का फुर्तीला व्यक्ति था जो सन् १९२२ की 'घोषणा' से पूर्व दल के विभिन्न समाचार-पत्रो में प्रकाशित अपने अच्छे लेखो के कारण प्रसिद्ध था। उसने बैलग्रेड की एक वस्ती के एक कमरे में एक मुद्रणालय लगा दिया और 'कम्युनिस्ट' के तीन सस्करण प्रकाशित किये। इतने ही में व्लादामितित्स नामक एक जासूस ने, जो स्वय ही वढई-सघ का एक अधिकारी था, पता लगा लिया कि मोजा पिजादे किस स्थान पर 'कम्युनिस्ट' छापता था और उसने इसकी सूचना पुलिस को दे दी।

मोजा पिजादे का मुकदमा क्रोशिया के गणतंत्रवादी-कृषक-दल के विरुद्ध किये गये सघर्ष के दौरान में प्रारंभ हुआ। अनेक न्यायाधीश जो शासन के विश्वासपात्र थे बदल कर बैलग्रेड-न्यायालय में भेज दिये गये जिससे वे राजसी घराने की इच्छानुसार मोजा पिजादे को दड दे सके। प्रिस्तीना के कोस्तित्स नामक एक न्यायाधीश ने तो मृत्यु दड की मांग की; न्यायाधीश मारिकोवित्स ने तीस वर्ष का कठिन कारावास दिया और न्यायाधीश बुकायलोवित्स ने जो गणतंत्रवादी विचारो का था पन्द्रह वर्ष के दड की सिफारिश की। बीस वर्ष के दंड पर समझौता हो गया। जब पिजादे के भाई ने अपील सुनने वाले न्यायालय में जाकर यह पूछताछ की कि इतना कडा दड क्यो दिया गया, तब उसके एक मित्र ने बताया कि राजसी घराने की इच्छा थी कि क्रोशिया के गणतंत्रवादी-कृषक-दल के नेताओ को आतंकित किया जाय।

फर्वरी सन् १९२५ में संसद के चुनाव हुए। क्रोशिया के गणतंत्रवादी-कृषक-दल ने ६७ स्थान जीते और उन्हे क्रोशिया में पूर्ण रूप से बहुमत प्राप्त

विया का साम्यवादी दल कभी भी सत्ता प्राप्त नहीं कर सकेगा।"

युवो रादोवानोवित्स को मेरी बात पसद नहीं आई। प्रेदोयेवित्स नामक बढई सघ के मत्री ने मुझे एक सभा में बताया कि बातचीत करने के पश्चात् युवो रादोवानोवित्स मुझ से डरा हुआ था और वह मुझे जासूस समझता था।

इसी समय सन् १९२५ के प्रारभ में देश के राजनैतिक जीवन में महत्व पूर्ण परिवर्तन हुए। क्रोशिया के प्रजातान्त्रिक-कृषक-दल के सब नेता गिरफ्तार कर लिये गये। रादित्स कुछ समय तक अपने जागरेब के घर में छिपा रहा परतु बाद में उसने अपने आपको अधिकारियो को सौंप दिया। देशभर में खलबली मच गई। मजदूरो और किसानो के विरुद्ध आतक बढ गया। युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति ने एक गैर कानूनी समाचार-पत्र प्रकाशित करने का निर्णय किया। इसका सपादक और प्रकाशक मोजा पिजादे को रखा जो बैलग्रेड के प्राचीन यहूदी वश का एक बुद्धिजीवी व्यक्ति तथा चित्रकार था। यह छरहरे बदन का फुर्तीला व्यक्ति था जो सन् १९२२ की 'घोषणा' से पूर्व दल के विभिन्न समाचार-पत्रो में प्रकाशित अपने अच्छे लेखो के कारण प्रसिद्ध था। उसने बैलग्रेड की एक बस्ती के एक कमरे में एक मुद्रणालय लगा दिया और 'कम्युनिस्ट' के तीन सस्करण प्रकाशित किये। इतने ही में व्लादामितित्स नामक एक जासूस ने, जो स्वय ही बढई-सघ का एक अधिकारी था, पता लगा लिया कि मोजा पिजादे किस स्थान पर 'कम्युनिस्ट' छापता था और उसने इसकी सूचना पुलिस को दे दी।

मोजा पिजादे का मुकदमा क्रोशिया के गणतंत्रवादी-कृषक-दल के विरुद्ध किये गये सघर्ष के दौरान में प्रारंभ हुआ। अनेक न्यायाधीश जो शासन के विश्वासपात्र थे बदल कर बैलग्रेड-न्यायालय में भेज दिये गये जिससे वे राजसी घराने की इच्छानुसार मोजा पिजादे को दड दे सके। प्रिस्तीना के कोस्तित्स नामक एक न्यायाधीश ने तो मृत्यु दड की मांग की; न्यायाधीश मारिकोवित्स ने तीस वर्ष का कठिन कारावास दिया और न्यायाधीश बुकायलोवित्स ने जो गणतंत्रवादी विचारो का था पन्द्रह वर्ष के दड की सिफारिश की। बीस वर्ष के दंड पर समझौता हो गया। जब पिजादे के भाई ने अपील सुनने वाले न्यायालय में जाकर यह पूछताछ की कि इतना कडा दड क्यो दिया गया, तब उसके एक मित्र ने बताया कि राजसी घराने की इच्छा थी कि क्रोशिया के गणतंत्रवादी-कृषक-दल के नेताओ को आतंकित किया जाय।

फर्वरी सन् १९२५ में संसद के चुनाव हुए। क्रोशिया के गणतंत्रवादी-कृषक-दल ने ६७ स्थान जीते और उन्हे क्रोशिया में पूर्ण रूप से बहुमत प्राप्त

हुआ, परंतु रादित्स शीघ्र ही क्रोशिया के किसानों के प्राप्त विश्वासघात करने वाला था। २७ मार्च १९२५ को पावले रादित्स ने स्त्येपान रादित्स के कहने पर जो जेल में था, संसद मे एक वक्तव्य दिया जिसके द्वारा राजतंत्र और अलेक्जेंडर के सन् १९१२ के विधान को मान लिया। शीघ्र ही रादित्स के दल के सब व्यक्ति मुक्त कर दिये गये और सन् १९२४ की गर्मियों मे वह तथाकथित आर० आर० सरकार में सम्मिलित हो गया जिसका नेतृत्व निकोला पासित्स कर रहे थे।

क्रोशिया के किसान दंग रह गये और हताश हो गये। जिस व्यक्ति ने उनका नेतृत्व किया था उसने अब उनके हितों से विश्वासघात किया। किसानों की संघर्ष भावना दब गयी थी और किसी भी स्थानीय नेता ने रादित्स की कार्य-वाही का कड़ा विरोध नही किया। ब्येलोवार के आसपास भी ऐसी ही भावना फैल गई थी। किसान निराश, दबे हुए और हताश थे।

मिल में भी परिवर्तन हो गया था। मिल मालिक वृद्ध सेमुअल पोलक भी मेरे राजनैतिक कार्यो में हस्तक्षेप नहीं करता था। उसने कहा कि, "तुम एक अच्छे मिस्त्री हो और मिल के बाहर जो कुछ करते हो उससे मेरा कोई संबंध नहीं।"

किसी प्रकार शीघ्र ही पोलक बीमार पड़ा और मर गया। उसका जामाता ऑस्कर रोजेन्बर्ग, जो ब्येलोवार में एक दुकान पर काम करता था मिल का मालिक बन गया। वह बड़ा घमंडी आदमी था जो ठाटबाट से रहना पसंद करता था। उसने देखा कि उसके खर्चे बहुत बढ़ गये हैं तो उसने उन्हें मजदूरों के वेतन कम करके पूरा करना चाहा। इससे मेरा और उसका झगड़ा हो गया। एक दिन उसने मुझे बुलाकर कहा कि, "या तो तुम राजनीति मे भाग लो या काम करो।" उस समय पुलिस अधिकारी मेरे कमरे में प्रायः हर शनिवार को आते थे और मेरी चीजो की तलाशी लेते थे। इसका भी प्रभाव रोजेन्बर्ग पर पड़ता था।

प्रान्तीय समिति के कुछ साथियों की सलाह से मैं गॉव छोड़कर उत्तरी आड्रियाटिक पर बसे क्रालयविका नामक नगर में बंदरगाह के कार्यकर्ताओं को संगठित करने गया। साढ़े चार वर्ष पश्चात् मैंने मिश्रित भावना से वेलिको त्रोयस्तवो गाँव छोड़ा। मेरे सब साथी और मित्र मुझे विदा देने आए। हमारे वेलिको त्रोयस्तवो में ठहरने के दौरान मे मेरी पत्नी के तीन बच्चे हो गये थे। एक लड़की ज्लातीत्सा और दो लड़के हिंको और ज्ञार्को थे। पहला लड़का संग्रहणी के कारण सप्ताह भर में ही मर गया। छोटी बच्ची ज्लातीत्सा जिसके बड़े सुन्दर सुनहरे बाल थे डिप्थीरिया (गले का रोग) से मर गई। उस समय

उसकी आयु दो वर्ष थी। उसके शव को मैं स्वयं क़ब्रिस्तान ले गया और अपने हाथों से गाड़ा। जैसे ही मेरे पास पैसा आया मैंने उनकी कब्रों पर स्मारक-शिलायें लगवा दी। मेरा पुत्र जार्को जीवित रहा और वह मेरे पौत्रों, योसिप और ज्लातीत्सा का पिता है जो मेरे जीवन के महान् आनन्द की वस्तुओं में से हैं।

प्रकरण चार

"मैंने भूख हड़ताल करना निश्चित किया"

मैं सन् १९२५ की शरद् ऋतु मे आलयेवित्सा के जहाजों के स्थान पर चला आया। यह उत्तरी आड्रियाटिक में एक सुन्दर व प्राकृतिक बंदरगाह था।

जब मैंने आलयेवित्सा में काम करना आरंभ किया तो उस समय जहाजों की मरम्मत के लिये दो सौ से भी कम मजदूर थे।

हमें उन विध्वंसक नावों की मरम्मत में और भी अधिक कठिनाई जान पडती थी जो युगोस्लाविया को आस्ट्रिया-हंगरी से मिली थी।

यहां आने पर पहले दिन से ही मैंने मजदूर संघ की शाखा संगठित करने का काम ले लिया था। कुछ ही सप्ताह पश्चात् दुकान के कारिन्दों के लिये चुनाव हुए और मै चुने हुए लोगों मे से एक था। जहाज की मरम्मत करने वाले मजदूरों से संपर्क बढ़ा लेने के पश्चात् मैंने अपने दल की एक ऐसी संस्था को पुनर्जीवित किया, जो वर्षो से पुलिस के डर से बंद कर दी गई थी। हमने मजदूरों के लिये एक खेल-कूद की संस्था बनाई। मुझे याद है कि मै सांस्कृतिक विभाग के लिये सितार खरीदने जागरेब गया था। त्रोयस्तवो से मैं अपनी पुस्तकों का संग्रह अपने साथ लेता आया था जिसमें लगभग ५० पुस्तके थीं। जैक लंदन की 'दी आयरन हील', बेबेल की 'वीमेन एण्ड सोशलिज्म, तथा गोर्की की 'मदर' भी इन पुस्तको में सम्मिलित थी। मेरे नये मित्र इन्हे मुझ से मांग कर ले जाते थे। मेरा घर तो जैसे मजदूरो का पुस्तकालय बन गया था।

जहाजो के मरम्मत के व्यवस्थापक धीरे-धीरे मजदूरो के वेतन देने में देर करने लगे और जब हमने विध्वंसक-नाव की मरम्मत पूरी करदी उस समय हम लोगो को सात सप्ताह से वेतन नही मिले थे। हमारे दल के लोगों ने दो घटे के लिये काम रुकवा दिया। बिगुल के बजते ही हड़ताल घोषित हो गई, मजदूर एकत्रित हो गये और मैंने भाषण दिया।

"वे हमारे वेतन रोक रहे हैं। वे हमारा रुपया रोक कर पूंजी की भांति काम मे लेते हैं जो केवल हमें लूटना है। दूसरी ओर दुकानदार हमें उधार खाद्य-सामग्री बड़ी ऊँची क़ीमत पर देता है, जो नक़द के मूल्य से कही अधिक होती है।

इस प्रकार हम दुकानदारो को उधार का व्याज दे रहे है जबकि व्यवस्था विभाग हमारे रुपयो को काम में लेकर भी कोई व्याज नहीं देता ।"

हडताल को रोकने के लिये व्यवस्था विभाग ने हमें कई दिन का वेतन दे दिया परन्तु अव भी काफी वेतन मिलना शेष था। निर्देशक ने विरोध प्रकट करते हुए कहा कि जल-सेना विभाग ने विध्वसक-नाव की मरम्मत की मजदूरी तव तक नही चुकाई थी।

मजदूर सघ की शाखा की ओर से मैंने तुरत एक पत्र बैलग्रेड की धातु-मजदूर संघ की आम समिति को भेजा। उसमें यह निवेदन किया गया था कि समिति श्रम-नरीक्षण-विभाग द्वारा मजदूरो के वेतन की माग युद्ध-कार्यालय के जल-सेना विभाग से करे। कुछ दिनो पश्चात् यह उत्तर मिला कि जल-सेना-विभाग ने सारी मजदूरी चुका दी थी। हमको धोखा दिया गया था और व्यवस्था-विभाग ने हमसे झूठ बोला था। विगुल फिर बजा और मजदूरो ने फिर हड़ताल घोषित कर दी। नौ दिन तक हडताल जारी रही और व्यवस्था-विभाग को झुकना पडा। हमको हमारा पिछला वेतन मिल गया। कुछ दिन पश्चात् व्यवस्था-विभाग ने कुछ ऐसे मजदूरो की सूची लटका दी जिनकी 'आवश्यकता नहीं थी'। मैं भी इनमें से एक था।

अक्तूबर सन् १९२६ में मैं जागरेब लौटकर बैलग्रेड चला गया। मैंने सुना कि राजधानी से चालीस मील दूर स्मेदरवस्का पालंका के रेल के डब्बे बनाने वाले कारखाने में मजदूरो की आवश्यकता थी। यह कारखाना युगोस्लाविया और फ्रांस की मिली-जुली पूंजी से सन् १९२३ में खोला गया था। जब मैं वहा पहुँचा तो उसमें नौ सौ मजदूर काम करते थे।

बड़ा कठिन समय था। मुझे दुकान का कारिन्दा चुन लिया गया। मैंने जागरेब के एक मजदूर संघ के समाचार-पत्र में इस उद्योग की कठिनाइयो पर एक लेख लिखा। अपने जीवन में समाचार-पत्र के लिये लिखा हुआ यह मेरा प्रथम लेख था।

यह लेख १७ मार्च को प्रकाशित हुआ था। उसके दस दिन बाद ही मुझे नौकरी से अलग कर दिया गया। दुकान का कारिन्दा होने के नाते मने क्रोशिया के एक युवक मजदूर के मामले में हस्तक्षेप किया था और उसका पक्ष लिया था क्योकिउस पर एक अनुचित जुर्माना किया गया था। उसी दिन दोपहर को मुझे हटा दिया गया।

मैं सीधा जागरेब चला गया और मुझे इजीनियरिंग के बड़े कारखाने में नौकरी मिल गई। वहा कोई मजदूर सघ नही था। मैंने एक मजदूर सघ

योसिप ब्रोज़ (पीछे बायें से दूसरे) १९ वर्ष की अवस्था में स्लोवीनिया में कामनिक के मजदूरों की एक टोली के साथ

बनाने का प्रयत्न किया परन्तु व्यवस्थापक मुझ से क्रुद्ध हो गया। वह दिन भर मेरे पीछे पड़ा रहा और उसने मुझे एक अनाड़ी मिस्त्री सिद्ध करना चाहा। इस से मुझे बड़ा दुख हुआ। एक बार तो उसने सब मजदूरो के सामने मुझसे अशिष्ट व्यवहार करना चाहा जिसका उसे कोई अधिकार नहीं था। मैंने अपना हथौड़ा उसके सामने फेंक दिया और कहा कि उसे मुझ पर क्रोध करने का कोई अधिकार नहीं था और मैंने शीध्र उससे मजदूरों का रजिस्टर मांगा। व्यवस्थापक डर कर नम्र हो गया और हमारी मजदूर-संघ शाखा संगठित हो गई। मैंने तुरंत इस कारखाने को छोड़ दिया क्योंकि मुझे व्यवस्थापक का व्यवहार असह्य था।

मजदूर संघों और मेरे दल के संगठन के कार्य को अधिक समय देने की आवश्यकाता थी। मेरे दल ने यह निश्चय किया कि मुझे जागरेब के धातु-मजदूर संघ और तत्पश्चात् समस्त क्रोशिया के मंत्री पद का कार्य-भार सौंप दिया जाय। उस समय मेरी आयु ३५ वर्ष थी। यह घटना मेरे जीवन के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे मैं मजदूरों के आन्दोलन का नियमित रूप से अधिकारी बन गया। मेरे नये काम को सम्भालने के कुछ दिन पश्चात् पुलिस ने धातु-मजदूर संघ के दफ्तर में छापा मारा। उस समय मैं वहां अकेला था। सादे वस्त्र पहने व्यक्ति ने मुझे बताया कि मैं गिरफ्तार कर लिया गया था। मैंने पूछा, "क्या आप मुझे बतायेंगे कि मुझे क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है।"

उसने उत्तर दिया, "ब्रोज़! तुम पर इतने आरोप है कि हम तुम्हें किसी भी समय पकड़ सकते है। तुम एक दर्जन आरोपों में से किसी को भी समझ लो।"

मैंने दफ्तर मे ताला लगाया और जेल चला गया। प्रारंभ में मेरे साथी बड़े क्रुद्ध हुए क्योकि उनको यह नहीं मालूम था कि पुलिस मुझे कहां ले गई थी। कुछ समय तक मुझे स्वयं भी यह पता नही था कि मुझे क्यों पकड़ा गया है और कहां ले जाया जायगा। वेलिको त्रोयस्तवो, बैलग्रेड अथवा स्मदरवस्का पालंका? क्रालयेविका के जहाजों के स्थान का तो मुझे ध्यान तक नही था।

यही तो वह स्थान था जहाँ मुझे ले जाया गया। जिन मित्रों को मैं पुस्तकें दिया करता था उनमें से कुछ गिरफ्तार हो गये। एक १८ वर्षीय युवक ने तो स्वीकार किया कि मैंने उसे एक पुस्तक दी थी। पुलिस ने इस मामले को बढ़ा-चढ़ा दिया था और बैलग्रेड में गृह-मंत्रालय को यह प्रभावशाली रिपोर्ट भेजी थी कि उसने सरकार का तख्ता उलटने वाले साम्यवादी षड्यंत्र का पता लगाया हैं। मंत्रालय ने सूचना प्राप्त करने के पश्चात् पूरी जॉच पड़ताल करने की आज्ञा देदी थी।

इस प्रकार हथकडियां पहनाकर मुझे दो आदमी जून सन् १९२७ की गर्मियो में एक दिन वाकर शहर ले गये जो कालयेविका से कुछ मील की दूरी पर था। वहाँ मेरी भेंट अपने जहाज पर काम करने वाले ६ साथियो से हुई। हमने जेल में नौ-दिन व्यतीत किये और उसके पश्चात् जांच के लिये ऑगुलिन की स्थानीय जेल में भेजे गये। पुलिस के आदमी वाकर से हम सातो को जजीरो से बाँधकर ले गये। सबसे पीछे हमारा लगडा साथी रादे सेलर था। उसके लिये हमारे बराबर चलना असंभव था। शाम को जब वाकर के किनारे पर आदमियो की भीड लगी थी तो हमें बाहर लाया गया। जैसे ही हमने भीड से निकलने के लिये तेजी से कदम बढाये कि हमारा लगडा साथी लड़खडाकर नीचे गिर गया और अन्य छ साथी भी इसके साथ गिर पडे। यह एक अपमानजनक दृश्य था। जब हम ऑगुलिन की गाडी में बैठे तब हमारी जान में जान आई।

ऑगुलिन कोर्ट हाउस की जेल फ्रेन्कोपान टॉवर में थी, जो शहर के बीचो-बीच बाजार में पन्द्रहवी शताब्दी में बनी थी। यह दुमजली इमारत थी जिसमें तख्ते लगी हुई कुछ खिडकिया भी थी। मुझे दूसरी मजिल में ६ नबर की कोठरी में डाला गया। मेरा कोई भी साथी उसमें नही रखा गया और मैंने अपने आपको स्थानीय चोरो और अपराधियो से घिरा पाया।

दिन बीतते गये परतु स्थानीय न्यायालय ने कुछ भी नही किया और प्रतिवादियो से कोई प्रश्न नही किये गये। जेल का खाना बड़ा खराब था और मैं कुछ भी नहीं खाया करता था। मैंने आरभ से ही विरोध किया परंतु पहरेदार मेरा सदेश न्यायाधीशो तक पहुँचाते ही नही थे।

मैं अपना समय अपनी कोठरी के आदमियो से बातचीत करके बिताया करता था। मैं उन्हे समझाता था कि मजदूर वर्ग को देश की परिस्थिति के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिये। मेरी बातो को सब बडे चाव से सुनते थे विशेषकर कुछ युवक। एक बार रविवार की दोपहर को जेल के सामने चौगान में एक सभा हुई जिसमें ऑगुलिन के प्रमुख नागरिक स्थानीय न्यायालय के न्यायाधीश व जिला अधिकारी के नेतृत्व मे एकत्रित हुए।

मुझे विश्वास सा हो गया कि स्थानीय न्यायालय हमारे मुकद्दमे पर विचार नहीं करेगी। इसलिये मैंने भूख हडताल करना आरभ किया।

भूख हडताल द्वारा मैं जेल में इस प्रचलित प्रथा का विरोध करना चाहता था। मुझे बडी विकट परिस्थितियो में एक जेल से दूसरी जेल मे फेक देते थे। खाने के स्थान पर मुझे रसोईघर की साधारण बची-खुची चीजें दी जाती थी। उस पर तुर्रा यह था कि न्यायालय मेरी सुनवाई तक नही करता था। यह हड़-

ताल मेरा विरोध स्वरूप थी। पहले दिन तो पहरेदारों ने कोई ध्यान नहीं दिया परन्तु दूसरे दिन खलबली मच गई। भूख हड़ताल के दूसरे दिन ही संकट आता है। शरीर मेदे से भोजन नही लेता और भीतरी शक्ति खीचने लगता है। उस समय आपको बड़ी जोर की भूख लगती है। यदि आप इस संकटकाल को पार कर ले तो आपके मस्तिष्क में हल्की सी मूर्च्छा आजाती है और फिर आपको भूख इतना नही सताती। स्वभावतः आपको पर्याप्त आत्म-शक्ति की आवश्यकता होती है। शरीर यथाक्रम अपनी भीतरी शक्तियों को चूसने लगता है। सबसे पहले वह कमर के चारों ओर व अन्य भागो पर एकत्रित मोटापे को समाप्त करता है तब मासपेशियो, मज्जा और अंत मे हृदय व मस्तिष्क को खा डालता है। उसी समय पीड़ा का प्रारंभ होता है। भूख हड़ताल बीस दिन तक जारी रह सकती है तब प्रायः मृत्यु तक हो जाती है। जब भूख हड़ताली पानी भी नही पीता और सात दिन तक जीवित रहता है तो उसे बलवान् समझना चाहिये।

युगोस्लाविया के बंदीगृहों तथा जेलो मे हम भूख हड़तालो के अभ्यस्त हो जाते है। कभी-कभी तो टोली की टोली संघर्ष मे सम्मिलित हो जाती है। ऑगुलिन मे तो केवल मैं ही हडताल पर था। तीसरे दिन जब मैं चेतनाशून्य होने लगा तो न केवल पहरेदार चौकन्ने हो गये बल्कि मैं स्वयं भी अपनी कोठरी के अपराधियो के कारण कठिनाई में पड़ गया। वे मुझे अपना भोजन देने लगे और मुझे यह कह कर समझाने लगे कि "ईश्वर के लिये जान मत दो।" मैंने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया कि मैं हड़ताल द्वारा क्या प्राप्त करना चाहता था। हम किस प्रकार के साम्यवादी है और किस प्रकार की लड़ाई लड़ रहे है!

मै पांच दिन तक हड़ताल पर रहा। मैं शांत भाव से लेटा रहा क्योंकि बाकर जेल में रहने के कारण पहले से ही बड़ा दुर्बल हो गया था। पांचवे दिन दोपहर में स्थानीय न्यायालय का अध्यक्ष स्त्येपान बाकारित्स मेरी कोठरी मे आया।

मैंने उससे कहा, "या तो मुझे न्यायालय मे प्रस्तुत करो या छोड़ दो पर एक साम्यवादी होकर मैं ऐसी अमानवीय दशा मे अधिक नही रह सकता।" न्याया-धीश ने मुझसे अपनी भूख हड़ताल समाप्त करने का अनुरोध किया और कहा कि मेरा जीवन साम्यवादी दल के लिये मूल्यवान् है परन्तु मैं तो यही रट लगाता रहा "या तो मुझे न्यायालय में प्रस्तुत करो या छोड़ दो।" अंत मे उसने मेरी शर्तें स्वीकार करली और वचन दिया कि जांच पड़ताल शीघ्र ही समाप्त हो जायगी। इस प्रकार मेरी हड़ताल का अंत हुआ।

वृद्ध बाकारित्स ने कहा "मैं अपने घर से तुम्हारे लिये थोड़ा बढ़िया शोरवा भेजूंगा, इस हड़ताल से क्षीण तुम्हारे शरीर के लिये वह अत्युत्तम रहेगा।

वास्तव में उसने अपना वचन पूरा किया। जांच-पडताल भी बाद में शीघ्र ही पूरी हो गयी और न्यायाधीश वाकारित्स कुछ दिन पश्चात् मुझे अपने घर ले गया और उसने अपना पुस्तकालय दिखाकर कहा, "मेरे पास यहा मार्क्स संबंधी पुस्तके भी है। मै समझता हूँ कि एक साम्यवादी होने के नाते तुम इसमें दिलचस्पी लोगे।

तब कहीं जाकर मै जागरेव आया। युगोस्लाविया में सन् १९२८ के आरभ होते-होते तो मजदूरो के रहन-सहन की दशा और भी गिरती जारही थी। २००,००० से भी अधिक मजदूर बेकार थे और इनके वेतन योरुप में सबसे गिरे हुए थे। खेतो की उपज का तो कोई मूल्य ही नहीं था। गेहूँ के एक 'किलोग्राम' का मूल्य पूरा एक दीनार था। किसानो के तीन घरो के लिये एक ही दियासलाई खरीदी जाती थी। कृषको पर ऋण तेजी से बढता जा रहा था। उस वर्ष भयंकर सूखा पडने के कारण देश के बहुत से भागो में लोग भूखो मरने लगे, विशेषकर हर्जगोवीना में। इसके प्रत्युत्तर में अलेक्जेंडर के शासन ने खुल्लमखुल्ला तानाशाही की तैयारी कर दी। मजदूर वर्ग पर पहले प्रहार किया; वेतन और भी नीचे गिरने लगे, हडतालो को निर्दयता से भंग किया गया, मजदूरो का छापाखाना भी राज्याधीन कर लिया गया।

सन् १९२८ में 'बोरबा' के ८५ में से ५२ संस्करण जब्त कर लिये गये। आतंक बढ गया, विशेषकर मैसीडोनिया और क्रोशिया में। कुछ साधारण मध्यम वर्ग के राजनीतिज्ञ तो बिलकुल घबरा गए।

पुलिस मजदूर सघो को दबाने में विशेष रूप से लगी हुई थी। इसी कारण मुझे ऑगुलिन के मुकद्दमे के समाप्त होने के पश्चात् न केवल धातु-मजदूर-संघ का मन्त्री बनना पडा बल्कि चमड़े के मजदूर संघ का भी काम संभालना पड़ा। इसी समय मै युगोस्लाविया के साम्यवादी-दल की जागरेब शाखा की स्थानीय समिति का सदस्य चुन लिया गया। उस समय साम्यवादी-दल के नेता किसान और मजदूरो को उन्नत बनाने के लिये संघर्ष में अपनी पूर्ण शक्ति लगाने के स्थान पर दायें और बायें पक्ष की दलबंदी में फंसे हुए थे। यह दलबदी आदर्शों पर निर्धारित नहीं थी बल्कि पदलोलुपता के कारण थी। जागरेब के अनेक मजदूर इस दलबंदी से उत्पन्न हुए झगड़ो से बड़े चिन्तित थे जिनसे साम्यवादी-दल को ही नही प्रत्युत् देशभर के मजदूर दल को हानि पहुँची थी। इसने मजदूर संघ के उस आन्दोलन को बडा धक्का पहुँचाया जिसके द्वारा मजदूर वर्ग अपने रहन-सहन की दशा व जीवन को उन्नत बनाने के लिये संघर्ष करना चाहता था।

जागरेब के स्थानीय दल के सगठन में मजदूरो की एक ऐसी शक्तिशाली टोली थी जो इन दोनो ही दलो के विरुद्ध थी। यह बात स्पष्ट थी कि दल में

एकता के बिना हमारे कार्य का कोई भविष्य नहीं था।

मुझे स्मरण है कि किस प्रकार हम रात से लेकर पौ फटने तक दल को इस बीमारी से मुक्त करने के उपायों के वादविवाद मे व्यस्त टहला करते थे। हम इसी परिणाम पर पहुँचे कि दल की शक्ति नीचे से उसके सदस्यों द्वारा ही मिल सकती है और हम बड़े उत्साह से इसी दिशा में काम करने लगे। हमने जागरेब-दल-संगठन को दलबंदी के रोग से बचाना, उसे संगठन तथा राजनीति की दृष्टि से सुदृढ़ बनाना और तब दाये और बायें दलों के विरुद्ध आन्दोलन करना अपना मुख्य काम समझा।

हमें सर्वप्रथम बड़ा अवसर तब मिला जब कि फरवरी सन् १९२८ में जागरेब दल का आठवां सम्मेलन हुआ था। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह गुप्त रूप से हुआ था क्योंकि साम्यवादी दल को गैर कानूनी ठहरा दिया गया था और पुलिस बराबर हम पर अत्याचार करती थी। जागरेब की पहाडी बस्तियों मे एक छोटा-सा घर ढूंढा गया और पांच जिलों की सभाओं मे सम्मेलन के प्रतिनिधि चुने गये। मैं धातु मजदूरों की ओर से प्रतिनिधि था।

फरवरी सन् १९२५ की संध्या को हम एक-एक करके चुपचाप एकत्रित हुए, हमें भय था कि कही पुलिस के दूत हमारा पीछा तो नही कर रहे है। अंत में बत्तीस के बत्तीस निर्वाचित प्रतिनिधि इस छोटे-से घर मे जमा हुए जो पुलिस के अचानक छापे से बड़ा सुरक्षित रखा गया था।

रात्रि के नौ बजे कार्यवाही प्रारंभ हुई। केन्द्रीय समिति के सदस्यो ने दोनों दलों का प्रतिनिधित्व किया। सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था के प्रतिनिधि युक्रेनिया निवासी मिल्कोवित्स ने बराबर भाग लिया। अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था की ओर से उन्हे विशेष रूप से यह काम सौंपा गया था कि वे युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की परिस्थिति की जांच-पड़ताल करे और उनकी दलबंदी के झगड़ों को समाप्त करने का कोई उपाय बतायें।

जब समिति के मंत्री ने अपनी लंबी चौड़ी सुन्दर शब्दों से भरी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमे स्थानीय समिति द्वारा काम नहीं किये जाने का निर्दोषीकरण इस बहाने से किया गया था कि पुलिस बड़ी कार्यशील रही थी, तो कमरे में सन्नाटा छा गया। यह कभी-कभी साथी पहरेदारों के चुपके से आ जाने से भंग हो जाता था जो समय-समय पर एक-दूसरे से स्थान बदलने के लिये घर में आते थे; परन्तु यह सब जैसे तूफान से पहले की शान्ति थी।

आगे के वाद-विवाद ने कठोर रूप धारण कर लिया। प्रत्येक प्रतिनिधि मंत्री के विवरण-पत्र की कड़ी आलोचना करने लगा।

"हम इस विवरण-पत्र को स्वीकार नहीं कर सकते, जो वास्तविकता से मेल ही नहीं खाती हो। सच बात तो यह है कि हम लोगो में एक ओर वायें पक्ष के और दूसरी ओर दायें पक्ष के व्यक्ति हैं जबकि, बीच में इन दोनो से अलग, कार्यकर्त्ता उपस्थित हैं। हमें इन दोनो में से एक की भी आवश्यकाता नहीं है। हमें तो एक शक्तिशाली दल-सगठन चाहिये जो इन सब दल-बन्दियो से ऊपर हो," फ्रास नामक एक मजदूर ने कहा। अन्य वक्ताओ ने उसके शब्दो की पुष्टि की। केन्द्रीय समिति क्रोधित हो गयी।

मैंने खड़े होकर विवरण-पत्र तथा स्थानीय समिति की आलोचना की। मैंने कहा कि कार्यकर्त्ताओ के बहुत से काम तो इस दलबंदी के कारण, जो दल में फैली हुई सबसे निकृष्ट बुराई है, पूरे नहीं किए जा सके। इसने दल के काम करने के अड्डे नही बनाये, न तो इसने दल के छापेखाने को उन्नत अथवा विस्तृत किया और न ही इसने दल के लिये नये कार्यकर्त्ता बनाये। स्थानीय समिति तो पद-लोलुपता में फंसी रही। अंत में मैंने यह माग की कि साम्यवादियो की अंतर्राष्ट्रीय सस्था को एक पत्र लिखा जाय जिसमें दोनो दलो की निन्दा की जाये और जागरेब दल-सम्मेलन को दलबदी के विरुद्ध मजबूत कदम उठाना चाहिये।

अत में सम्मेलन ने मंत्री का विवरण-पत्र रद्द कर दिया और कार्यकर्त्ताओ का मत स्वीकार किया। एक नयी स्थानीय समिति चुनी गयी और मैं उसका मत्री निर्वाचित हुआ।

हमने मई दिवस के प्रदर्शन के लिये शानदार तैयारियां आरंभ कर दीं। मैंने एक ऐसी योजना बनायी जिसके अनुसार सब प्रदर्शन एक साथ नगर के चार, पाँच स्थानो पर आरंभ किये जाने वाले थे, जिससे पुलिस अपनी सारी शक्ति एक ही स्थान पर नहीं लगा दे। यह बात बडी प्रभावशाली सिद्ध हुई। यह प्रदर्शन मजदूर वर्ग की बडी भारी सफलता थी और जागरेब में उनकी वास्तविक शक्ति का प्रकटीकरण भी। जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं गिरफ्तार कर लिया गया और दो सप्ताह के लिये बन्दी बना लिया गया।

इसके पश्चात् पुलिस सदा मेरा पीछा करती रही। मैं लगभग पकड़ ही लिया जाता जब मैं एक दिन धातु-मजदूर-संघ के मुख्य कार्यालय में घुसा था। मैं वहीं था कि पुलिस आ गई। उनमें से एक, जो मुझे नहीं जानता था, सलाम कर पूछने लगा, "क्या योर्सिप ब्रोज यहाँ है ?" मैंने आश्चर्य से हाथ फैलाकर उत्तर दिया," क्या आप देख नही रहे हैं कि वह यहाँ नही है !" उन्होने सब उपस्थित लोगो को देखा, मेरी ओर घूमे, मुझे फिर सलाम किया, धन्यवाद दिया और चले गये।

मैंने गहरे रंग का चश्मा लगा लिया और अपने कपड़े बदल दिये जिससे पुलिस मुझे पहचान नहीं सके। एक बार मुझे मुख्य कार्यालय में जाने का अवसर पड़ा तो वहाँ पुलिस खड़ी थी और इस बार मुझे उसने पहचान लिया। मै खिड़की के पास के मकान की छत पर कूद पड़ा, सीढ़ियों से उतरा और भीड़ में मिल गया।

मुझे अपना निवास-स्थान बदलना पड़ा। मैंने जागरेब की एक मजदूर बस्ती, ४६ विनोग्रादस्का स्ट्रीट में एक कमरा किराये पर ले लिया जहाँ कभी-कभी अपनी रात्रि व्यतीत किया करता था। इसी स्थान पर कुछ और भी साथी रहते थे जिनके पीछे पुलिस थी। मै सदा अपने साथ एक रिवॉल्वर रखता था। ४ अगस्त सन् १९२८ को रात के ११ बजे मै विनोग्रादस्का स्ट्रीट के अपने कमरे में प्रवेश कर रहा था जब अचानक मुझ पर दो आदमी टूट पड़े। वे सादे कपड़े पहने पुलिस के आदमी थे। उन्होंने मेरे हाथ इतने कस कर बांध दिये कि वे नीले पड़ गये, तब उन्होंने मेरे कमरे की तलाशी ली और उसी रात को मुझे जेल मे ले गये। वहाँ मुझे हथकड़ी पहनाई गयी और प्रश्न किए गए। मेरे व्यवहार से एक जासूस चिढ़ गया और उसने मेरे मुंह पर इतने जोर का घूंसा मारा कि मुझे चक्कर आगया। जब मैंने किसी भी बयान पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया तो उसने दफ्तर की कुर्सी उठाकर मेरी छाती में दो बार मारी। मैंने उसकी ओर घृणा से देखकर कहा, "कितने शक्तिशाली हो तुम जो एक बँधे हुए व्यक्ति को मार सकते हो।" मैंने डाक्टरी सहायता की माँग की परन्तु वह नहीं दी गई। उसके पश्चात् काफ़ी समय तक मेरे थूक में रक्त आता रहा।

प्रकरण पाँच

"मैं अपने को केवल अपने साम्यवादी दल के प्रति उत्तरदायी मानता हूँ...."

मै पुलिस के कारावास में तीन मास से भी अविक समय तक रहा। कुल मिलाकर पुलिस ने पन्द्रह आदमी पकडे थे, उनमें फ्रान्जो नोवोसेलित्स नामक एक मजदूर भी था जो अनेक वार मेरे कमरे में सोया था। एक वार फिर जेल में मार-पीट और पुलिस द्वाराज़ ाच-पडताल में विलम्ब की प्रथा ने मुझे भूख हड़ताल के लिए विवश किया। उसके तुरन्त पश्चात् मुझे कचहरी की जेल में भेज दिया गया और मेरे मुकद्दमे की घोषणा कर दी गयी। सरकारी वकील ने मेरे अलावा पाँच अन्य व्यक्तियो को दोषी ठहराया मजदूर नोवोसेलित्स, पावले ब्रायर नामक एक विद्यार्थी, जो एक दिन मेरे कमरे में भी आया था तथा तीन घर में रहने वाले व्यक्ति।

जव अप्रैल सन् १९४५ के अत में युगोस्लाविया की नवीं सेना ने क्रोशिया की राजधानी ज़ागरेव को मुक्त किया तो उन्होने इस मुकदमे की कार्यवाही का विवरण राजसी न्यायालय के प्राचीन वस्तुओ के संग्रहालय में पाया। उनसे यह विदित होता था कि यह मुकदमा ६ नवबर १९२८ को प्रारभ हुआ।

न्यायालय में पांच न्यायाधीश थे। १४ नवबर को दंड की आज्ञा सुनाई गई। मुझे पॉच वर्ष का कठोर कारावास दिया गया था, फ्राजो नोवोसेलित्स को तीन वर्ष का और आन्द्रीय बोजिक्कोवित्स को दो वर्ष का। ईवा कोप्रिवन्याक और पावले ब्रायर को निर्दोष पाया। इसके पश्चात् पघान न्यायाधीश ने प्रतिवादियो को लेजा कर वन्दी वनाने का आदेश दिया।

६ जनवरी सन १९२९ को वादशाह अलेक्जेंडर ने पूर्ण रूप से तानाशाही स्थापित कर दी।

सब राजनीतिक दलो पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। संसद् भंग कर दी गयी थी। १९२१ का विधान रद्द कर दिया गया। सब समाचार-पत्रो और प्रकाशनो के लिए एक कठोर तथा वाधक निरीक्षण का प्रारभ किया गया, जिसके अतर्गत दैनिक पत्रो के 'प्रूफ' पहले कोतवाली में लेजाने पड़ते थे जहाँ उनका

निरीक्षण अर्द्ध-शिक्षित पुलिस के क्लर्क किया करते थे। इन निरीक्षकों के पास वर्जित शब्दों की एक सूची थी जिन्हे देखते ही निकाल दिया जाता था चाहे वे किसी भी प्रसंग मे क्यो न हों।

आर्थिक संकट के समय तानाशाही का प्रारंभ हुआ। औद्योगिक कारखाने घाटे पर चल रहे थे और काम पर लगे लोगो की संख्या दिन प्रतिदिन गिरने लगी। वित्त-मंत्री द्वारा प्रचलित विना रोकटोक मुद्रा के विनिमय से विदेशी पूंजी ने बड़ा लाभ उठाया और दस खरब विदेशी मुद्रा देश मे फैल गई। इससे देश का आर्थिक संकट और भी बढ़ गया और विशेष रूप से विदेशी ऋण चुकाना कठिन हो गया।

खेतों की उपज का निर्यात गुण और मात्रा दोनो में गिर गया, मूल्य प्रायः नहीं के बराबर हो गया। दस दीनार मे तेतीस अंडे मिलते थे। लगभग ढाई पाव दूध की कीमत आधा दीनार और इतनी ही शराब की एक दीनार थी। क्रोशिया के अनेक भागो मे किसानो को अपने पशु बाजारों मे छोड़ने पड़ते थे क्योकि न तो उन्हे वे खिला सकते थे और न ही बेच सकते थे।

मजदूरो के रहन-सहन की दशा तेजी से बिगड़ने लगी। वेतन वहुत नीचे गिर गये; सब के सब मजदूर संघों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और मिल-मालिकों ने इस अवसर को मजदूरों के विरुद्ध नई युक्तियाँ सोचने मे लगाया। चारों ओर वेकारी फैल गई और राज्य की ओर से कोई सहायता नहीं दी जाती थी।

युगोस्लाविया का साम्यवादी दल तानाशाही के इस आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार नही था। कुछ ही मास पूर्व ड्रेस्दन मे चुपचाप गिये गये दल के एक सम्मेलन मे उसके नेतृत्व का निर्वाचन हुआ और धातु-चादर के कारीगर द्यूरो द्याकोविल्स इसके नेता बने। इतने कम समय मे वे एक दल-बंदीपूर्ण संस्था में अनुशासन नही ला सके और न ही इस दल को ऐसी तानाशाही से टक्कर लेने योग्य बना सके जो साम्यवादियों के पीछे हाथ धोकर पड़ी थी।

मेरे दण्ड मिलने के पश्चात् मैंने कुछ समय जागरेब मे कचहरी की जेल मे विताया और लेपोग्लावा के कारागृह मे बदले जाने की प्रतीक्षा करने लगा। एक दिन एक पहरेदार ने मुझे चुपचाप दल का संदेश दिया जिससे ज्ञात हुआ कि मुझे जेल से छुटकारा दिलाने की योजना बनायी जा रही है। पहरेदार एक ताला वनाने वाला था जिसने वेकारी के कारण जेल की नौकरी कर ली थी परन्तु वह साम्यवादी दल से सहानुभूति रखता था और उसने अनेक साम्यवादी बंदियों की वड़ी-वड़ी सेवायें की थी। इस व्यक्ति ने मुझे एक रोटी लाकर दी जिसमें चिट्ठी छिपी हुई थी।

मेरी कोठरी की छोटी सी खिडकी में ६ सलाखें लगी हुई थीं। पहले ही दिन प्रात.काल मैंने पहली सलाख को काटना आरभ किया। वह पांच और छः वजे के वीच का समय था जव वदी उठने लगे थे क्योकि दरवाजे खुल गये थे, टीन और कूडा वाहर निकाले जा रहे थे और काफी शोर हो रहा था। पांच रातों में मैंने पांच सलाखें काट डालीं। एक और गई नहीं कि मैं मुक्त था। जेल के सामने मेरे मित्र साइकिल लिए मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। सव कुछ तैयार था और मैंने अतिम सलाख काटनी आरंभ की। आवाज को मिटाने के लिए मैंने भीगी रोटी और चिट्ठी सलाख के चारो ओर रख दी परतु अचानक मुझे अपने दरवाजे के ताले में चावी के घुमाये जाने की आवाज सुनाई दी। मैं खिड़की से कूद कर विस्तर पर वैठ गया। पहरेदार अंदर आये, उनमें से एक ने मुझसे चिल्लाकर कहा, "वाहर निकलो, तुम दूसरी कोठरी में वदले जा रहे हो।"

दुर्भाग्य ! मैं सव वन्दियो के साथ उस भाग से निकल आया क्योकि आँगन में किसी को फासी की तैयारियाँ हो रही थीं। नई कोठरी से भाग निकलने की कोई सभावना नही थी। कुछ दिन पश्चात् अपनी अवधि पूरी करने के लिए मुझे लेपोग्लावा कारागृह में भेज दिया गया।

यहाँ मैं सन् १९२९ में एक दिन जनवरी की दोपहर में आया था। अन्य नये वंदियो तथा मुझे जेल के अधिकारी के पास ले जाया गया जिसने हमें व्यवहार का ढंग और दैनिक कार्य समझाया। जैसे ही वह बोला कि मैं सोचने लगा कि मैं इसे पहले कही से जानता हूँ। तव मैंने उसे पहचान लिया; वह बोहाशेक था जो कारपेथियन्स में मेरे दस्ते में था और किसी समय रूस में युद्ध-वंदी भी रहा था। उसने मुझे पहचान लिया। हम दोनो में कोई वातचीत नहीं हुई।

उसके विशाल कमरे से निकाल कर हम एक छोटे से कमरे में ले जाये गये जिसे वे 'स्नानागार' कहते थे। यहाँ सबसे निकृष्ट अनुभव हुआ जिसे शायद ही कोई मनुष्य सह सकता हो। हमारा सिर मूड दिया गया और तब हमसे कपड़े उतारने और गदे पानी के एक बड़े टब में घुसने के लिए कहा गया जो कीचड़ के झाग और आदमी के वालो से भरा हुआ था। हम बीस व्यक्तियो को ठड से काँपते हुए एक के बाद एक उसमें जाना पड़ा। तब हम लोगो को अपराधी की वर्दियाँ दी गईं, जिनमे बेहद छेद थे और जिन्हे वर्षों से दूसरे अपराधियो ने पहन कर फाड़ दिया था। तब डाक्टरी मुआइने और वरामदो की भूलभुलैयो और अनेको लोहे के फाटको से होते हुए कोठरियो में पहुँचे। प्रत्येक कोठरी में एक मुड़ने वाली चारपाई थी जिस पर गदी चटाई और दो कंबल पड़े थे। कोने में एक छोटा स्टूल और एक बर्तन रखा हुआ था। फर्श सीमेंट का था और कमरे बेहद ठंडे।

ठंडक से नींद असंभव हो गई थी। शाम को हमें कुछ पतला शोरवा मिला। रात भर हर पन्द्रह मिनट के बाद जेल के अहाते में पहरेदारों की आवाज़ सुनाई देती थी, "होशियार, पहरेदार !" यह उन लोगों को डराने के लिए था जो भागने की सोचते हो। प्रातःकाल लगभग छः बजे कोठरियो के ताले खोले गये और पहरेदार चिल्लाये "गंदगी और कूड़ा बाहर फेंको।" नाश्ते के लिए हमें एक छोटी रोटी मिलती थी। मेरे सामने हंसो के परों से भरी हुई टोकरी रखदी गयी जिसे मुझे शाम तक साफ़ करना था। मुझे पुस्तकें मिलने की आज्ञा नही थी। इस प्रकार मैंने कारागृह में अपने पहले तीन महीने नंबर ४८३ के रूप मे विताये।

एक बार फिर मेरा मशीनो संबंधी ज्ञान लाभदायक सिद्ध हुआ। कारागृह मे एक छोटा बिजली घर था जिससे जेल और गाँव दोनों को बिजली मिलती थी। इसे मेरे अधिकार मे दे दिया गया और अपनी जिम्मेदारियो को निभाने के लिए मुझे पुस्तक पढ़ने की आज्ञा तथा अन्य सुविधाये भी मिल गयी। साथी मोजा पिजादे मेरे सहायक थे। जैसा कि मैंने पहले बताया, वे दमन की पहली लहर मे पकड़ लिये गये थे और उन्हे चौदह वर्ष का कारावास दिया गया था। हमने शीघ्र ही दल का एक अड्डा बना लिया। वहाँ अनेक साथी थे इसलिये हमने लेपोग्लावा के बंदीगृह की पुरानी दीवारो के भीतर एक विशाल तथा बढ़ने वाला संगठन आयोजित कर लिया।

वाहर शासन के दमन ने हमारे दल-संगठन को प्रायः नष्ट ही कर दिया था। हमारे लिए बंदी-गृह मे यह और भी जरूरी था कि हम अपना समय अपने लाभ मे लगाये। यह विशेष रूप से आवश्यक था कि वे नवयुवक, जो दल मे उस समय सम्मिलित हुए थे जब वह गैर कानूनी ठहरा दिया गया था और इसलिये जिनमें मार्क्सवाद के अनुभव का अभाव था, भविष्य के लिये तैयार किये जाये। कुछ ही पुस्तकों तथा सीमित साधनो के सहारे हमने पाठ्य क्रम और भाषणों का आयोजन किया। अपने साथियों के साथ मैं काफ़ी निकट का संबंध रख सका क्योंकि मैं बिजली के इंजीनियर के रूप मे एक हाथ मे जांच का बल्ब तथा दूसरे में 'स्क्रू ड्राइवर' लिये पूरे बंदीगृह मे फिर सकता था।

मुझे कभी-कभी गाँव मे भी मरम्मत करने के लिए भेजा जाता था। सदा एक चौकीदार मेरे साथ रहता था परन्तु ऐसा होने पर भी मैं जागरेब से आने वाले साथियो से मिल सकता था और बातचीत भी कर सकता था।

बंदीगृह के सामने एक कॉफी घर था और उस पर कुछ रहने के कमरे। उसकी मालकिन एक धार्मिक और दयालु स्त्री थी और वह बंदियों की सहायता के लिए जो कुछ बन पड़ता था, करती थी। इस प्रकार हर दो-तीन महीने पश्चात्

जान-बूझकर उसके घर में बिजली खराब कर दी जाती थी। जब मैं अपने चौकीदार के साथ आता तो वह उसे शराब देती और जब तक वह कॉफी घर में अपना मनोरंजन करता मैं ऊपर साथियो से बातें कर लेता था।

जब मुझ पर भागने के षड्यत्र का झूठा आरोप लगाया गया तब यह जीवन समाप्त हो गया जो विशेष असह्य नहीं था। मैं युगोस्लाविया के सबसे निकृष्ट बदीगृह में जो मारिबोर में था भेज दिया गया। जेल के दरोगा का नाम हमने 'जल्लाद' रख दिया था। मुझे एक बदबूदार कोठरी में एकान्तवास मिला। इस जेल में और भी अनेक साथी थे और हमने एक दूसरे से बातचीत करने तथा सगठन बनाने की व्यवस्था कर ली। भूख हडताल की धमकी देकर अत में हमने कुछ सुविधायें प्राप्त कर ही ली, जैसे आधी रात तक कोठरी पर बत्ती जलती रखना, जेल के आँगन में प्रतिदिन एक बार और रविवार को दो बार टहलना इत्यादि। हम लोगो को एक-दूसरे से बातचीत करने की आज्ञा नहीं थी, परन्तु हम फिर भी उँगली के सकेतो से काम चला लेते थे। देखने में तो ऐसा लगता था जैसे कोई व्यक्ति अपना सिर खुजा रहा है, परन्तु उसकी तर्जनी उँगली बराबर सकेतो द्वारा सदेश दे देती थी।

हमें अपने सबधियो और मित्रो को पत्र लिखने की आज्ञा तो थी परन्तु पत्रो का कडा निरीक्षण किया जाता था। मेरे पत्रो का उत्तर सबसे पहले स्टेवो-साविल्स ने दिया जो वेलिको त्रोयस्तवो से मेरा मित्र था।

कभी-कभी हमको खाने, पुस्तको और पत्रिकाओ के पार्सल पाने की छूट थी। केवल वे ही पत्रिकायें आ सकती थी जिनको अधिकारी उचित समझते थे जैसे कि 'लदन इकानोमिस्ट'। मैंने काफी मनोविज्ञान पढा था और दर्शन में भी दिलचस्पी रखता था। एक बार मैंने जेल के दरोगा से यूनानी दर्शन पर एक पुस्तक माँगी। उसने उत्तर दिया, "तुम्हे दर्शन की पुस्तक की आवश्यकता क्यो है। अपने चारो ओर देखो तुम्हे वह सब दर्शन दिखाई देगा जिसकी तुम्हे आवश्यकता है।" हम कुछ मार्क्सवादी साहित्य चुपचाप जेल में मगाने में सफल रहे। विशेषकर 'एन्टी-ड्यूहरिंग'। हम उनकी जिल्दें उतार कर उन पुस्तको की जिल्दे चढा लेते थे जिन्हे जेल में आने दिया जाता था। मार्क्सवाद की एक प्राचीन पुस्तक पर एक बार हमने 'अरेबियन नाइट्स' की जिल्द चढा दी थी। जब हम बदीगृह के दालान में घूम रहे थे तो पहरेदारो ने हमारी पुस्तको को उलट-पलट कर देखा परन्तु वे इतने अनभिज्ञ थे कि उन्हे पता ही नही चला कि हम किस प्रकार का साहित्य पढते थे।

इन तुच्छ सुविधाओ को छोड़ कर मारिबोर का जीवन बड़ा विकट था।

जेल के दरोगा ने अचानक नये आदेशो द्वारा हमारे सब पार्सलों और पुस्तकों का आना बंद कर दिया, यहाँ तक कि जेल के आँगन मे घूमना-फिरना भी बंद कर दिया। हम अध-भूखे रहते थे। हमारे बिस्तर घास की चटाई वाले पुराने तख्ते थे और घास लगभग तीन साल बाद बदली जाती थी। चद्दरो और तकियों का तो नाम तक नहीं था परन्तु गर्मियो में हल्का तथा सर्दियो मे एक भारी कम्बल मिलता था। गर्मी हमें केवल एक छोटी-सी अंगीठी से मिलती थी जो हमारी कोठरी के एक साथी के लिए उसके संबंधियो के भेजे हुए रुपए से खरीदी थी। पूरी जगह में खटमल रेंगते थे। वे बिस्तर के तख्तो की दरारो में छिप जाते और हम उन्हें नष्ट करने का उपाय सोचते-सोचते ही घंटों बिता देते। हमने कुछ पैट्रोल की भी व्यवस्था की पर उससे काम नहो चला। अंत में हमें समझ मे आया कि तख्ते अलग करके छेदो में सफेद गरम तार डाला जाय तभी हम खटमलों को जला सकते थे।

मेरे कमरे में आठ आदमी थे और हम प्रत्येक वस्तु मे साझीदार थे।

मुझे अपने सामने वुलवाकर पूछा, कि मैंने जमानत पर छोडे जाने के लिए क्यो प्रार्थना की। मैंने उत्तर दिया, "जमानत पर छूटने का विचार तो वह अपराधी करे जो अपने आपको सुधारना चाहता हो अथवा कम से कम ऐसा करने की इच्छा प्रकट करता हो। मै तो अपने राजनीतिक विचार छोडना नही चाहता इसलिये अपने छोड़े जाने की प्रार्थना भी नहीं करता।"

इस प्रकार एक के वाद एक वर्ष बीतते गये और पांच वर्ष हो गए। अपनी अवधि की समाप्ति के एक मास पूर्व मैंने जेल के दरोगा से कहा कि वह मेरे लिए एक पोशाक वनवाने और सिर के वाल वढाने की आज्ञा दिलवादे क्योकि हम वंदियो को अपने वाल मुंडवाने पडते थे।

एक पहरेदार के साथ मै नगर में एक दर्जी के पास गया जहाँ मेरा नई पोशाक के लिये नाप लिया गया। मेरे मित्र स्टेवो सावित्स ने इसके लिये रुपये भेजे थे।

अंत में सन् १९३३ के नवम्बर में एक दिन प्रात काल जेल के पहरेदार ने मुझे वुलाया जहाँ मैंने पाँच वर्ष वाद अपराधी की वर्दी फेंक कर सादे कपड़े पहने। मैंने अपने मित्रो से विदा ली और जेल के दरोगा के पास उसका अंतिम संदेश लेने गया, फिर वधे हुए हाथो से पुलिस वाले के साथ जेल के फाटक पर जा कर मैंने अपनी पीठ मोडी।

मेरे जाने से पहले दरोगा ने वताया कि १९२७ के मेरे ऑगुलिन के मुकदमे में दिये गये दण्ड के साढे तीन मास मुझे जेल में और विताने थे।

यह वात सोचकर मुझे वड़ा सतोष हुआ कि यह समय जेल की उस अवधि से कहीं कम था जो मै पहले ही विता चुका था। एक हल्की रोशनी वाले तीसरे दर्जे के डब्बे में जहाँ मै अपने पहरेदार के साथ, ऑगुलिन के मध्यकालीन फ्रेंकोपान टॉवर जाते समय अकेला था, तव मैंने उससे अपनी हथकड़ियो को ढीला करने की प्रार्थना की। क्षण भर झिझकने के पश्चात् उसने इसे स्वीकार कर लिया।

———

प्रकरण छः

"मुझे अपना नाम बदलना पड़ा......"

आँगुलिन के फ्रैन्कोपान टॉवर मे मैंने अपने दण्ड के शेष साढ़े तीन मास व्यतीत किये। सन् १९३४ के मार्च में कचहरी जेल के पहरेदार मेरे साथ पुलिस स्टेशन तक आये और मुझे सूचित किया गया कि अधिकारी अब यह चाहते हैं कि मै जागरेब के अपने गॉव कुमरोवेत्स मे स्थायी रूप से रहूँ और प्रतिदिन अपनी सूचना अधिकारियों को देता रहूँ। इस प्रकार का प्रतिबन्ध न केवल साम्यवादियों पर लागू होता था बल्कि मध्यवर्ग के उन दलों के प्रतिनिधियों पर भी लागू होता था जो बादशाह अलेक्जेन्डर के शासन के विरुद्ध थे।

मै मार्च के अन्त मे कुमरोवेत्स पहुँचा और सीधा घर चला गया। कुछ ही समय पूर्व मेरे भाई द्रागुतीन-कार्लो की मृत्यु हो गयी थी। अपने माता-पिता के घर में मुझे भाई की पत्नी और बच्चे मिले। उसी दिन मै कुमरोवेत्स व आसपास के गाँवों की नगरपालिका के प्रधान योसिप युराक से मिला।

जब मै उसके कार्यालय मे पहुँचा तो प्रधान ने जिसे मै बचपन से जानता था जल्दी से दरवाजा बन्द कर लिया। वह मेरे पास आया और मेरे कंधे थप-थपा कर कहने लगा, "तुमने बड़ा शानदार काम किया!" यद्यपि मै जानता था कि बादशाह अलेक्जेन्डर का शासन लोकप्रिय नहीं था फिर भी प्रधान का ढंग देख कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उसे अधिकारियों ने नियुक्त किया था, इसलिये उसे समस्त जिले के शासन का समर्थन प्राप्त होना चाहिये था। उस ने क्या किया? उसने एक साम्यवादी को उसके कचहरी और बन्दीगृह में किये गये व्यवहार पर बधाई दी जिसने अभी पांच वर्ष पूरे किये ही थे।

प्रधान ने मुझे बताया कि कानून के अनुसार मुझे प्रतिदिन प्रस्तुत होना चाहिये परन्तु उसने ऐसा कहते हुए आँख से संकेत किया। वह प्रत्यक्ष रूप से जानता था कि मै अपने गॉव में अधिक समय तक नहीं रहने वाला था। मै अपने गाँव के सब मित्रों और संबंधियों से मिलने गया और सुतला के पार अपनी चाची के पास भी गया। जिले में केवल एक ही ऐसा व्यक्ति था जो मेरे लौट आने से बड़ा अप्रसन्न था। एक रविवार को सेंट रोको के गिरजाघर में पूजा

के पश्चात् पादरी ने अपने धार्मिक उपदेश मे वताया कि गाँव में ईसामसीह का विरोधी आ पहुँचा है। कुछ दिन पश्चात् मैंने अधिकारियो के सामने अपने आपको प्रस्तुत करना वन्द कर दिया और कुमरोवेत्स छोडने का निश्चय कर लिया।

मै पहले तो जागरेव से वीस मील दूर स्थित सामोवोर नामक एक छोटे से नगर में गया जहा मै कुछ समय के लिये अपनी वहन के पास ठहरा जिसका विवाह वहा एक जूते वनाने वाले से हुआ था।

कुमरोवेत्स में मुझे अनुपस्थित पाकर पुलिस ने मेरी गिरफ्तारी का वारट जारी कर दिया। मै अपने नाम को जारी नहीं रख सकता था। यहाँ तक कि मुझे अपना हुलिया तक वदलना पडा। पहले मैंने मूंछें वढाना आरंभ कर दिया जिससे मेरी सूरत ही वदल गई। तव मैंने अपने वाल लाल कर लिये और चश्मा लगाने लगा।

इसी वीच में मैंने जागरेव के दल सगठन से अपना व्यक्तिगत सपर्क स्थापित कर लिया था। मैंने पहले यह सपर्क स्टेवो गालोगाजा नामक एक दुवले चालीस वर्ष के कमजोर लेखक द्वारा स्थापित किया। गालोगाजा द्वारा मै अन्य साथियो के सपर्क में आया जो उस समय जागरेव में थे। इस प्रकार मैंने क्रोशिया की प्रादेशिक समिति से सम्वन्ध स्थापित कर लिया। उस समय दल में यह नियम था कि अपना वास्तविक नाम नही रखा जाय जिससे पहचाने जाने की सभावना कम हो जाय। उदाहरणार्थ यदि मेरा कोई साथी पकड़ा जता और मेरा नाम वताने के लिये उसके कोडे लगाये जाते तो पुलिस वडी सरलता से मेरा पता लगा लेती। पुलिस को तो मेरे रखे हुए नाम वाले व्यक्तियो का कभी पता नही चलता जैसा कि मैंने दल में रखा था। कभी-कभी तो रखे हुए नामो को भी वदलना पडता था। जेल जाने से पूर्व ही मैंने ,अपना नाम ग्रिगोरियेवित्स और जागोराक रख लिया था जिनका अर्थ था "जागोरिये का व्यक्ति।" मैंने इस नाम से तो कुछ लेख भी समाचार पत्रो मे लिखे।

अव मुझे अपना एक नाम नया रखना था। पहले मैंने अपना नाम रूदी रखा परन्तु दूसरे साथी का भी यही नाम था इसलिये मुझे इसे वदल कर टीटो रखना पडा। प्रारंभ मे मैंने इस नाम को वहुत कम काम मे लिया था। सन् १९३७ से मैंने इसे पूर्ण रूप से धारणा कर लिया, जव मेरे लेख इस नाम से निकलने लगे। मैंने यह "टीटो" नाम क्यो रखा? क्या इसका कोई महत्व है? मैंने इसे ऐसे ही रख लिया जैसे कोई दूसरा नाम, क्योकि मुझे यही नाम उस समय सूझा। इसके अलावा यह नाम मेरे जिले मे वडा प्रचलित है।

जव मै जागरेव आकर काम करने लगा तो मेरे साथियो ने मुझे प्रादेशिक

समिति का सदस्य बना लिया जिसके हाथ मे क्रोशिया के दल का नेतृत्व था। मैंने थोड़े ही समय मे दल के संगठन की भीतरी बाते जान लीं। मैंने जेल में जो कल्पना की थी वह इस अनुभव से पूर्ण हो गयी। उस मसय दल की दशा बड़ी विकट थी परन्तु सहायक चिन्ह दूर से दृष्टिगोचर हो रहे थे।

सन् १९३३ तक टोलियां इधर-उधर बिखरी पडी थीं। अधिकतर दल के प्रमुख कार्यकर्त्ता या तो मारे गये थे अथवा जेल मे थे या फिर उन्हें देश-निकाला दिया गया था। सन् १९३३ मे बड़ी संख्या में छिपे हुए दल के अड्डे पुनर्जीवित हो रहे थे। प्रान्तीय समितियां उस समय तक बन चुकी थीं जब मैं सन् १९३४ में जेल से छूटा था।

दल के काम मे सबसे बड़ी दुर्बलता तो यह थी कि उसका नेतृत्व देश की जनता मे नहीं था। जब सन् १९२९ मे जागरेब की पुलिस ने केन्द्रीय समिति के मंत्री द्यूरो द्याकोवित्स को मार डाला, और समिति के शेष लोग सीमा के पार जाकर वियेना मे बस गये, तब अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति ने मॉन्टेनग्रो के एक बुद्धिजीवी व्यक्ति योवान मालीसित्स-मार्टिनोवित्स को वियेना मे दल का मुख्य नेता नियुक्त किया। अपने देश से दूर, युगोस्लाविया के निर्वासितों के रहन-सहन की दशा से अनभिज्ञ इस केन्द्रीय समिति ने स्थानीय संस्थाओं से संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया। इसने दल के अनेक सदस्यों को युगोस्लाविया भेजा, परन्तु जिन्होंने पुलिस के हथकंडों मे फंसकर न केवल व्यक्तियों से बल्कि संपूर्ण संस्था से विश्वासघात किया।

पुलिस ने दल के सैकड़ों सदस्य पकड़ लिये जिसके परिणाम स्वरूप स्थानीय संस्थाओं का बाहर के नेतृत्व में कोई विश्वास नही रहा। बहुतों ने तो उनसे संबंध रखना भी उचित नही समझा। दूसरी ओर पुलिस के आतंक मे कोई कमी नही आई। यह अनुमान लगाया जाता है कि सन् १९२९ से, जब बादशाह अलेक्जेन्डर ने अपनी तानाशाही घोषित की, सन् १९३४ तक लगभग पैंतीस हजार राजनीतिक बंदी युगोस्लाविया की जेल में गये। प्रायः सब को पीटा गया और बहुत कम पर राज्य की रक्षा के लिये विशेष न्यायालय मे मुकद्दमा चलाया गया।

जागरेब की प्रादेशिक समिति के सामने पहला काम था वियेना की केन्द्रीय समिति से सम्बन्ध स्थापित करना। सदस्यों ने खुल्लमखुल्ला कहना प्रारभ किया कि अवश्य कोई गडबड़ थी क्योंकि केन्द्रीय समिति जिसे भी भेजती वही पकड लिया जाता था जिसके फलस्व रूप भंडा फूट जाता था। कुछ लोगों ने तो सबंध विच्छेद कर लेने का सुझाव दिया। जागरेब के नेताओं ने यह निर्णय

किया कि मुझे लाभदायक संबंध स्थापित करने के लिये उपायो पर सोच-विचार करने के लिये वियेना जाना चाहिये।

जुलाई के आरंभ में ज़ागरेब विश्वविद्यालय के दल संगठन के लिये मैंने 'फासिज़्म' पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की और वियेना चला गया। यात्रा के दो ही साधन थे एक तो यह कि मैं किसी दूसरे के नाम से जाली निकासी-पत्र बनाऊँ, दूसरा यह कि मैं ऐसे स्थान से सीमा पार करूँ जहाँ पहरा कम हो। जाली निकासी पत्र बनाने के लिये समय बहुत कम था इसलिये मैंने चुपचाप सीमा पार करना निश्चय किया। इसके लिये मैंने स्लोवीनिया का छोटा नगर त्रज़ित्स चुना। वहा कारावान्केन पर्वत युगोस्लाविया को आस्ट्रिया से प्रथक करता है और स्लोवीनिया की पर्वतारोही संस्था का सदस्यता-पत्र दिखाने से यात्री आस्ट्रिया की सीमा में आठ मील तक जा सकते थे। मैंने इस व्यवस्था से लाभ उठाया और एक जाली पर्वतारोही आज्ञा-पत्र प्राप्त कर लिया। पर्वतारोहण के जूते तथा थैला लेकर मैं त्रज़ित्स के लिये निकल पडा। वहा मुझे एक पथ-प्रदर्शक मिला जो मुझे सीमा के पार एक छोटे मार्ग से ले जाने को तैयार था, जिससे सीमा की वे चौकियां पार नहीं करनी पड़ें जहा पर्वतारोहियो के आज्ञा-पत्र देखे जाते थे। यह काम उसने रुपए के लिये किया और चुपके से चकमक पत्थर भी निकाल ले गया जो युगोस्लाविया में अप्राप्य होने के कारण बहुमूल्य था। इसके लिये उसने तीन सौ दीनार मांगे।

संध्या समय हमने त्रज़ित्स छोडा और पहाड़ी पर चढने लगे। समय-समय पर मेरा पथ-प्रदर्शक थैले की तीन बोतलो में से एक निकालकर शराब उँडेल लेता था। हम धीरे-धीरे जा रहे थे इसलिये आधी रात तक भी सीमा पार नही पहुँच सके। पौ फटने पर हम उसके निकट पहुँचे। पथ-प्रदर्शक ने मुझे जाच-पड़ताल करने वाली चौकी दूर से दिखलाई और कहा, "अब तुम जाओ अकेले क्योकि तुमने मुझे यहीं तक के पैसे दिये है!"

रास्ते का यह सबसे ख़तरनाक भाग था और मैंने उससे सीमा के उस स्थान तक ले जाने को कहा जहाँ से पार करना सरल हो क्योकि जो मार्ग उसने मुझे बताया था वह जाँच-पडताल की चौकी के निकट था।

"निस्सदेह" पथ-प्रदर्शक ने मुझ से कहा, "यदि तुम मुझे तीन सौ दीनार अधिक दो।"

मुझे स्वीकार करना पडा। उसने इतनी शराब पी ली थी कि वह लड़-खड़ा रहा था। अब सीमा केवल सौ गज दूर रह गई थी जहाँ उस पथ-प्रदर्शक ने फिर मुझे ठगना चाहा। मैं उस पर बरस पड़ा और उसे निकाल दिया तब अपने

आप सीमा की ओर चल पड़ा और हद-बंदी के निशान को पार कर आस्ट्रिया की सीमा में पहुँच गया। सीधे रास्ते जाने के स्थान पर मैं एक छोटे मार्ग पर चलने लगा और एक खतरनाक गहरे ढाल से नीचे लुढक गया जिससे मेरा कोट फट गया।

थकान से चूर हो कर आस्ट्रिया के एक घर में प्रातःकाल छः बजे पहुँचा। उसके निवासी स्लोवीनिया के थे। मैंने उन्हे बताया कि मै एक यात्री हूँ। एक वृद्धा जिसके गले पर बेहद मांस बढा हुआ था जो उस घर में अकेली थी मुझे सुलाने के लिये एक सूखी घास के ढेर पर ले गई। मै दोपहर के लगभग सोकर उठा और मैंने अपने ढेर पर पड़े-पड़े ही उस घर का जीवन देखा। बुढ़िया मुर्गी के बच्चों को बुला रही थी, "चिक, चिक, चिक..........."

पहुँच कर मैं क्लाजेनफर्ट की ओर एक चक्करदार रास्ते से बढ़ा। उस स्थान पर भी लड़ाई हो रही थी और हीमव्हर के सदस्यो ने वहाँ भी मुझे रोक लिया। मैंने आठ मील की दूरी तय कर ली थी जहाँ यात्रियो को विना निकासी-पत्र के जाने दिया जाता था। मैंने वताया कि मैं युगोस्लाविया में जैसेनिस की ओर जा रहा था और हिटलर के समर्थको के कारण मुझे लौटना पडा था।

इस प्रकार मैं क्लाजेनफर्ट के रेल्वे स्टेशन पहुँचा और राजधानी के लिये गाडी पकड ली।

ऐसे मैं तेरह वर्ष पश्चात् फिर वियेना पहुँचा। पिछली वार मैंने इसे रूस से वदी के रूप में आते हुए देखा था। अव मेरा काम संपर्क स्थापित करना था। जागरेव में मेरे साथियो ने वताया था कि मैं एक युगोस्लाविया की लडकी द्वारा जो जागरेव के एक डाक्टर की पुत्री थी और वियेना में नृत्य-शिक्षा ले रही थी, केन्द्रीय सदस्यो से सवंध स्थापित कर सकता हूँ। मै उससे मिला। उसने मुझे वताया कि वह दूसरे दिन उत्तर दे सकेगी। इसी वीच उसने मेरे लिये डोब्लिन-जेर्सट्रासे के उन्नीसवें जिले में किसी यहूदी के घर में एक कमरा ले दिया।

जैसा कि स्वाभाविक था मैंने पुलिस को अपनी उपस्थिति की सूचना नही दी क्योकि पिछले कुछ दिनो की आस्ट्रिया की कुछ घटनाओ के कारण पुलिस वडी कठोर हो गई थी।

दूसरे दिन मैं केन्द्रीय समिति के सदस्यो से मिला। मत्री मिलान गोर्कित्स, व्लादीमीर कोपित्स व अन्य साथियो सहित उपस्थित थे। मिलान गोर्कित्स एक तीस वर्षीय विशालकाय व स्वस्थ पुरुष था जिसका सिर लाल था और एक लहसन का भी निशान था। वह युवक संवंधी कार्यो में लगा हुआ था और लेख और पुस्तके लिखता रहता था। वह अपने मास्को ठहरने के समय यह निर्णय नहीं कर सका था कि युगोस्लाविया और जैकोस्लाविया मे से किसे चुने, क्योकि उस समय उप-कारपोथियन युकराइन जैकोस्लावाकिया की सीमा में था। अंत में उसने युगोस्लाविया को ही चुना। उसकी अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति में वडी ख्याति थी।

गोर्कित्स और केन्द्रीय समिति के अन्य सदस्य मुझ पर ऐसे गिरे जैसे शहद पर मक्खियां। वे युगोस्लाविया के विषय में तथा दल की स्थिति के सबंध में सव कुछ जानना चाहते थे। मैंने विस्तारपूर्वक उन्हे सब समझाया, उन्हे यह भी निस्संकोच बताया कि दल के सदस्यो की भावनायें केन्द्रीय समिति के सदस्यो के विदेश में होने के सबंध में क्या थी, साथ ही निरन्तर गिरफ्तारियो

तथा केन्द्रीय समिति द्वारा युगोस्लाविया भेजे गये व्यक्तियों का भंडा फूटने के संबंध में भी।

वियेना में केन्द्रीय समिति का कार्य करते हुए कई सप्ताह बीत गये थे, तब मुझे बताया गया कि मुझे दल के सर्वोच्च नेताओं की पंक्ति में स्थान दे दिया गया है। यह सन् १९३४ मे अगस्त के अंतिम दिनों की बात है। मुझे क्रोशिया और स्लोवीनिया में दल के सम्मेलन आयोजित करने का काम सौंपा गया था, साथ ही समस्त युगोस्लाविया का सम्मेलन आयोजित करने का। तब मैं बिना किसी विशेष कठिनाई के जिस रास्ते से आया था उसी से घर लौट गया। जैसे ही मैं जागरेब पहुँचा मैंने वह कार्य करना आरम्भ कर दिया जो मुझे सौंपा गया था।

सन् १९३४ में मैंने वियेना में केन्द्रीय समिति को अनेक विवरण-पत्र भेजे। इन पत्रों को ले जाने का काम अधिकतर आस्ट्रिया की राजधानी में पढ़ने वाले विद्यार्थी किया करते थे।

जागरेब में कुछ समय रहने के पश्चात् मैं स्लोवीनिया के दल-सम्मेलन की तैयारी के लिये युबयाना गया। मैं वहां एक नाटक प्रस्तुतकर्त्ता बोजान स्तुपिका तथा उसकी पत्नी सावा सेवेरोवा जो युगोस्लाविया की एक कुशल अभिनेत्री थी, के यहाँ ठहरा। उसी समय मैंने स्लोवीनिया की प्रान्तीय समिति को पुनः संगठित किया। स्लोवीनिया में सन् १९३४ में सितम्बर के अंतिम पन्द्रह दिनों में होने वाला दल का सम्मेलन मेडवोदे में स्लोवीनिया के पादरी रोजमैन के गर्मियो के निवासस्थान में हुआ था, जो युबयाना से लगभग आठ मील की दूरी पर था। नगर के बाहर एकांत में स्थित यह एक विशाल घर था।

मेरे सहित लगभग तीस प्रतिनिधियों ने इसमे भाग लिया था जो दो दिन और रातों तक चलता रहा था।

स्लोवीनिया के संघर्ष के विकास के लिये यह सम्मेलन बड़ा महत्व रखता था। यह निश्चय किया गया कि दल को श्रमजीवी वर्ग की एकता के लिये अपना कार्य-क्षेत्र विस्तृत करना चाहिये। साथ ही उसे प्रजातांत्रिक और राष्ट्रीय अधिकारों के लिये और तानाशाही के विरुद्ध जनता का एक संगठित आन्दोलन चलाना चाहिये।

इसी सम्मेलन में प्रथम बार एडवर्ड कार्देय से मिला था जो सन् १९३२ के प्रारंभ में जेल से छूट कर आया था और तब से दल में सक्रिय भाग ले रहा था। मुझे यह भेंट भली भांति याद है।

साथी कार्देय बड़े शान्त स्वभाव का व्यक्ति था और उसके इस गुण से

मै बड़ा प्रभावित हुआ था। वह ऐसे समय में एक सच्चा क्रान्तिकारी था जब अन्य साथियो में दलबदी के कारण भ्रष्टाचार फैला हुआ था।

सम्मेलन के पश्चात् मुझे वियेना में केन्द्रीय समिति के सम्मुख उपस्थित होने का आदेश मिला। मेरे पुराने अनुभव ने मुझे दुबारा चुपचाप सीमा पार करने से निरुत्साहित किया। इसके स्थान पर मैंने एक जैकोस्लोवाकिया का निकासी-पत्र प्राप्त कर लिया था जिस पर मैंने अपनी तस्वीर भी लगा ली थी। मैंने वीसा की जाली मोहर लगा ली और एक साधारण यात्री की भाति चल पड़ा। इस प्रकार मैं किसी विशेष कठिनाई के विना वियेना पहुँच गया और वहाँ युगोस्लाविया के कलाकारो की सहायता से फिर केन्द्रीय समिति के संपर्क में आ गया। वियेना में मुझे वहुत-सा काम करना था। केन्द्रीय समिति के कार्य में सहायता देने के अलावा मुझ से विभिन्न समस्याओ पर लिखने के लिये कहा गया विशेष कर सैनिक मामलो पर। मुझे यह काम इसलिये सौंपा गया कि केन्द्रीय समिति के सब सदस्य मुझे इस काम के लिये सब से अनुभवी समझते थे।

इस काम की समाप्ति पर मैंने युगोस्लाविया लौटने की तैयारी की। प्रस्थान से पूर्व मैंने गोर्कित्स से समस्त युगोस्लाविया के लिये दल के चौथे सम्मेलन के संवध में विचार-विमर्श किया। मुझे घर पर सम्मेलन की पूरी तैयारी करने का काम सौंपा गया।

लौटते समय मैं युवयाना में ठहरा और प्रान्तीय समिति से मिला तब वियेना के लिये ९ अक्तूवर को एक विवरण-पत्र भेज दिया।

जिस दिन शाम को मैंने यह पत्र भेजा उसी दिन सूचना मिली कि बादशाह अलेक्जेन्डर की मारसिलीज में हत्या कर दी गयी है। उस्ताशी ने उसकी हत्या की थी जो एक आतंकवादी संस्था थी और जिसका नेतृत्व मुसोलिनी के संरक्षण में आन्टे पावेलित्स कर रहे थे। युगोस्लाविया की पुलिस ने संकटकालीन उपाय अपनाये। घरो की तलाशी ली गयी और साम्यवाद विरोधी कार्यक्रम प्रचण्ड कर दिया गया।

ऐसी दशा में मुझे केन्द्रीय समिति ने वियेना जाने का आदेश दिया और वहाँ से सोवियत संघ। पुराने ढंग से सीमा पार करना खतरे से खाली नही था। क्योकि नियंत्रण और भी कड़ा हो गया था। मैंने फिर एक जाली निकासी-पत्र जैकोस्लाविया के इंजीनियर के नाम वनवा लिया और उस पर अपनी तस्वीर चिपका ली। 'वीसा' भी जाली बना लिया। जालसाजी चतुराई से नहीं की गई थी इसलिये मुझे यात्रा करते समय वड़ा सदेह था। रेलगाडी का वातावरण — ाजनक था। सीमा पर निकासी-पत्रो की जांच न केवल पुलिस

द्वारा की गई बल्कि युगोस्लाविया की एक अर्द्ध 'फासिस्ट' संस्था चैटनिक्स द्वारा हुई। मेरे डब्बे में आस्ट्रिया की एक महिला अपने ६ महीने के बच्चे के साथ बैठी थी।

पुलिस सीमा के जैसेनिस स्टेशन पर गाड़ी मे घुस गई और उसने हमसे निकासी-पत्र मांगे। आस्ट्रिया की महिला उठी और उसने बच्चा मेरे हाथ में देते हुए क्षण भर पकड़ने के लिये कहा। मैंने उसे अपने घुटनों पर बिठा लिया और अपने खुले हुए हाथ से पुलिस वाले को निकासी-पत्र दे दिया। बच्चे ने अचानक पेशाब कर दिया। घबराकर मैंने उसे घुटनों पर से उठा लिया और पुलिस वाला यह देखकर हँसने लगा। इस घटना से उनका ध्यान बँट गया इसलिये उन्होंने अपनी जांच में कड़ापन नहीं दिखाया। उन्होंने मेरे निकासी-पत्र पर मोहर लगा दी और चले गये।

मैं वियेना बिना किसी दुर्घतना के पहुँच गया और १९ नवम्बर को मैंने केन्द्रीय समिति की एक बैठक में भाग लिया। उस समय वियेना में दमन बढ़ गया था और केन्द्रीय समिति की बैठक वहाँ नहीं हो सकी। इसलिये जैकोस्लोवाकिया के ब्रनो में एकत्रित होने का निश्चय किया गया। मैंने एक जाली आस्ट्रिया का निकासी-पत्र यौरेचेक नामक एक नाई के नाम प्राप्त कर लिया। केन्द्रीय समिति ने निर्णय किया कि मुझे एक लम्बे काल के लिये सोवियत संघ जाना होगा। पहला प्रस्ताव यह था कि मैं मास्को के अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ में युगोस्लाविया की ओर से प्रतिनिधि के रूप में भाग लूं। यह प्रस्ताव छोड़ दिया गया और यह सुझाव दिया गया कि मुझे अंतर्राष्ट्रीय-साम्यवादी समिति में युगोस्लाविया संबंधी काम करना चाहिये।

इसी वीच में युबयाना के एक मकान में समस्त युगोस्लाविया के दल का चौथा सम्मेलन हुआ जिसका आयोजन मैंने किया था। इसमें ग्यारह प्रतिनिधियों ने भाग लिया। २५ दिसम्बर को इस सम्मेलन में गोकित्स के नेतृत्व में एक नई केन्द्रीय समिति का निर्माण हुआ। मै भी इसके लिये चुना गया और केन्द्रीय समिति की राजनैतिक उप-समिति में शामिल हो गया।

कुछ ही समय पश्चात् मै मास्को के लिये चल पड़ा परन्तु उससे पूर्व मै लगभग पुलिस के हाथो पड़ ही चुका था। मै एक चार बच्चों वाली यहूदी स्त्री के घर में रहता था। उसकी एक लड़की कारखाने में काम करती थी तो दूसरी एक बड़ी फैशन की दुकान में। यह कमरा उन्नीसवे जिले की एक इमारत की चौथी मंजिल पर था। मैंने पुलिस को अपनी उपस्थिति के संबंध मे सूचित नहीं किया था इसलिये मुझे जितना चाहिये था उससे कहीं अधिक पैसा देना

पड़ता था। एक दिन जब मैं अपने कमरे में बैठा हुआ था और फर्श पर चीज़ें बिखरी पडी थीं तो किसी के दरवाजा खटखटाने की आवाज़ से चौंक उठा। मैं बरामदे में गया तो पड़ौसी ने बताया कि घर में से गैस की गंध आ रही है। दूसरे किराये-दार भी बाहर आ गये और हम सब रसोई की ओर गये जहां से गंध आ रही थी। वहा हमने मकान-मालकिन की लड़की को देखा जिसने आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था।

वह बेहोश थी। मैंने उसे तुरंत उठाया और अपने कमरे में ले गया जहां मैंने उसे कृत्रिम सांस पहुँचाया, परंतु उसमें जीवन का कोई चिन्ह शेष नहीं था। कमरा लोगो से भर गया। बहुत से कागज तथा अन्य सामग्री जिसे मैं युगोस्लाविया भेजना चाहता था, फर्श पर और मेज़ पर बिखरी पड़ी थी। परिस्थिति बड़ी गंभीर थी, विशेष रूप से जब पुलिस आ पहुँची। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ और क्या करता हूँ। मैंने बताया कि मैं वहीं रहता था और उस समय मेरे अलावा और कोई भी घर में नहीं था इसलिये मैंने लड़की को बचाने का प्रयत्न किया। पहली सहायता के स्टेशन से उसी समय एक डाक्टर आया जिसने हम सब को बाहर जाने के लिये कह कर लड़की को देखना-भालना आरंभ कर दिया।

मैं भी सब लोगों के साथ बाहर आ गया। इससे पहले मैंने किसी प्रकार ज़रूरी कागज और सामान एकत्रित करने की व्यवस्था कर ली थी। मैं तुरंत स्वेदन कॉफी-घर में चला गया जहां मैंने वृद्ध यहूदी स्त्री को देखा। मैंने उसे बताया कि उसकी लडकी की क्या दशा हुई है। उससे मैंने प्रार्थना की कि वह मेरा सामान एकत्रित करके किसी निश्चित स्थान पर पहुँचा दे। उसने वचन दिया और मेरा सामान शाम को मेरे पास लाकर इन दुःखद बातो के लिये क्षमा मांगी। उसकी लड़की शीघ्र ठीक हो गयी। तब उस स्त्री ने मुझसे समझाया कि उसने आत्महत्या का प्रयत्न क्यो किया था। वह सिनेमा जाने के लिये अपने मालिक का रुपया चुराते समय पकड़ी गई थी।

कई दिन पश्चात् मैं अपनी मास्को-यात्रा के लिये चल पड़ा।

दूसरा भाग

स्वतंत्रता-संग्राम

'फ़ासिज्म' के विरुद्ध गुप्त व खुला संघर्ष

(१९३४–१९४५)

प्रकरण सात

"मास्को में मैंने जो कुछ देखा उसके विरुद्ध मेरी आत्मा विद्रोह कर उठी......मैंने इसे एक अस्थायी आंतरिक विषय समझा"

चौदह वर्ष पश्चात् टीटो ने एक बार फिर सोवियत भूमि में प्रवेश किया। युद्ध और क्रान्ति के समय रूस की अपनी पहली यात्रा के पश्चात् पन्द्रह वर्षो में उन्होंने यह अनुभव कर लिया था कि वही मनुष्य सफल हो सकता है जो अपने संपूर्ण जीवन को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के संघर्ष मे लगाने का दृढ़ निश्चय कर ले। टीटो एक ४२ वर्ष के अनुभवी मनुष्य के रूप मे रूस आये।

रूस की राजधानी में टीटो की यह पहली यात्रा थी। युद्ध और क्रान्ति के दिनों में वे यहां तक कभी नही आये थे। वे गोर्की स्ट्रीट के लक्स होटल में गये और अपनी पहुँच की सूचना अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति में यूगोस्लाविया के साम्यवादी दल के प्रतिनिधि व्लादिमीर कोपित्स उपनाम सेंको को दी, जिसे वे वियेना से जानते थे। टीटो को लक्स होटल में एक कमरा दिया गया, जहाँ अधिकांश अधिकारी रहते थे। उसी दिन शाम को मास्को में रहने वाले युगोस्लाविया के निवासी उस व्यक्ति से नये समाचार सुनने आये जो अभी-अभी युगोस्लाविया से आया था। टीटो जब तक मास्को में रहे, लक्स होटल मे ही ठहरे।

यहां रहने के कुछ ही समय पश्चात् जिसे टीटो ने इस विशाल नगर के भ्रमण में व्यतीत किया था, उन्हे अपना काम मिल गया। केन्द्रीय समिति ने वियेना में अपनी १६ जनवरी सन् १९३५ की बैठक में यह निर्णय किया कि टीटो साम्यवादियों की अंतर्राष्ट्रीय संस्था के बलकान मंत्रालय की सदस्यता के लिये एक उम्मीदवार होगे।

केन्द्रीय समिति का यह सुझाव स्वीकार कर लिया गया और टीटो ने बलकान मंत्रालय की सदस्यता और युगोस्लाविया के संवाददाता का नया पद संभाल लिया। अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति का सब काम संसार के विभिन्न भागो में मंत्रालमों द्वारा वितरित किया जाता था, जो 'लांदर' मंत्रालय कहलाते

थे, जिनमें प्रत्येक का प्रधान अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति का सदस्य होता था।

बल्कान मन्त्रालय में टीटो को विभिन्न कार्य करने पडते थे। उनके पास युगोस्लाविया के सम्पूर्ण समाचार आ जाते और जब कभी बैठक में युगोस्लाविया के संबंध में विचार-विमर्श होता टीटो इन समाचारो का विवरण तैयार करते यहाँ तक कि आवश्यकता पडने पर विशेष विवरण भी तैयार करना पडता था। जब टीटो अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति में काम करने आये तब उन्हे एक नया नाम दिया गया, वाल्टर, उसी से उन्हें उस समिति तथा मास्को का प्रत्येक व्यक्ति जानता था।

बल्कान मंत्रालय में काम करते समय टीटो अधिकतर पालमीरो तोगलियात्ती-ईर्कोली, जियोर्गी दिमित्रोव तथा फिनलैंड के ओत्तो कुउसिनेन व विल्हेम पीक से मिला करते थे। अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति में मानुइल्स्की और क्नोरिन, सोवियत साम्यवादी दल के प्रतिनिधि थे।

"बंदी-गृह में एकांतवास की आदत पड जाने से कारण मैं मास्को में बहुत कम घूमा," टीटो ने कहा, "दफ्तर का काम समाप्त होते ही मैं लक्स होटल चला जाता। मैं अपनी इस यात्रा का पूरा लाभ उठाना चाहता था। जो पुस्तकें मुझे कारागृह में नहीं मिल सकीं वे सब यहा उपलब्ध थीं। कुछ साथियो ने तो सुझाव दिया कि मैं यदि नियम सबधी पाठ्य-क्रम का अध्ययन करूँ तो बडा लाभ हो, परन्तु मैंने विचार किया कि मैं अकेले काम करके अधिक सीख सकता हूँ। प्रत्येक मनुष्य भली भाति जानता है कि उसकी सब से बडी आवश्यकता क्या है। मैंने वह साहित्य चुना जिससे मैं उचित रूप से अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकूं। मैंने अपना समय अधिकतर अर्थशास्त्र और दर्शन पर लगाया परंतु सैनिक साहित्य का भी अध्ययन किया। सबसे पहले—फ्रुंजे, रूसी लेखको की कृतिया विशेष रूप से जर्मनी के प्राचीन साहित्य, क्लाजेवित्स आदि का अध्ययन किया। अपनी इसी यात्रा के समय मैंने सैनिक समस्याओ सबंधी ज्ञान में बड़ी वृद्धि की। वैसे मैंने अपने कार्यालय तथा कमरे के बाहर बहुत कम मास्को देखा था। बॉलशोई नाटक घर जहाँ मैं सुन्दर नृत्य और सगीतमय नाटक देखने गया, एक अपवाद था परन्तु ऐसा अधिकांश नहीं, कभी-कभी होता था।"

मॉस्को में पहुँचने के तुरत पश्चात् टीटो युगोस्लाविया के समस्त साम्यवादियो की बैठक में भाग लेने के लिये गये। विषय था युगोस्लाविया की राजनैतिक परिस्थिति। टीटो ने अपने देश की ओर से युगोस्लाविया की नवीन घटनाओ का एक विवरण-पत्र समिति के सम्मुख प्रस्तुत किया।

अवकाश के समय वह अतर्राष्ट्रीय लेनिन स्कूल और पश्चिम की राष्ट्रीय

अल्पसंख्यक जातियों के साम्यवादी विश्वविद्यालय में भाषण भी दिया करते थे।

टीटो मजदूर संघ संबंधी विषयों पर भाषण देते थे और उन्हें बीस रूबल प्रति भाषण मिला करते थे।

मास्को में अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति के सातवें सम्मेलन की लंबी-चौड़ी तैयारियां हो रही थीं, जिससे संसार के साम्यवादी दलों के कार्यक्रम में एक बड़ा भारी परिवर्तन होने वाला था। सम्मेलन के सम्मुख मौलिक प्रश्न था 'फासिज्म' के विरुद्ध लोकप्रिय आन्दोलन का संगठन करना। प्रोफसोयुज महल के कॉलोनेड हॉल में यह सम्मेलन प्रारंभ हुआ। स्तालिन उसके नियमानुसार उद्घाटन के अवसर पर येजहोव के साथ उपस्थित था, जो बाद में ओझल हो गया। टीटो युगोस्लाविया-प्रतिनिधि मंडल के सात सदस्यों में से एक थे जिन्होंने स्तालिन को उस समय पहली बार देखा। कार्यवाही के विवरण से पता चलता है कि गोर्कित्स को जुलाई सन् २७ की बैठक में प्रतिनिधि मंडल का प्रधान चुना गया था और टीटो को मंत्री। १४ अगस्त की बैठक में अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति की कार्यकारिणी समिति की उम्मीदवारी का प्रश्न उठाया गया। कार्यवाही के विवरण के छठे अवतरण से ज्ञात होता है कि युगोस्लाविया के प्रतिनिधियों के अनुरोध पर प्रतिनिधि-मंडल ने टीटो को अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति की कार्यकारिणी समिति का सदस्य और गोर्कित्स को उम्मीदवार प्रस्तावित करने का निर्णय किया था।

हुआ और दल ने स्वतंत्र रूप से भाग लेना पसंद किया। किसी प्रकार गोर्कित्स ने वियेना से नवीन आदेश भेजे जिसमें उसने स्वतन्त्र रूप से भाग लेने की बात पसद नहीं की थी और साम्यवादियो को सयुक्त विरोधियो के उम्मीदवारो के पक्ष में मत देने की राय दी थी जिसमें मध्य वर्ग के वे सब दल सम्मिलित थे जो ताना शाही के विरुद्ध थे, अब प्रिंस पॉल जिसके नेता थे। दल के जो प्रतिनिधि संयुक्त विरोधी दल के नेताओ के पास मिले-जुले रूप से भाग लेने की व्यवस्था के लिये गये थे, उन्हे बराबरी के स्तर पर बातचीत करने से मना कर दिया गया। इससे गोर्कित्स सहित सब सदस्यो में घोर असंतोष फैल गया। यद्यपि मत गुप्त रूप से नहीं लिये गये थे फिर भी सरकार अपने बहुमत के होते हुए भी साम्यवादियो की सहायता से हरा दी गयी। प्रधानमत्री ने त्याग-पत्र दे दिया और इस स्थान पर मिलान स्तोजादिनोवित्स आ गया।

इससे केन्द्रीय समिति में गुटबंदी बढ़ गई। एक गुट ने, जिसके मुखिया कोपित्स थे, वियेना में अपने सदस्यो की एक गुप्त बैठक आयोजित की थी जो प्राग में भी जारी रही। अनेक अनुपस्थित सदस्यो में से गोर्कित्स भी था जो मास्को जा रहा था साथ ही वे भी जो सोवियत संघ में थे और जिनमें टीटो भी सम्मिलित थे।

सब सदस्यो की इस बैठक की जो सन् १९३६ के प्रारंभ हुई थी अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति पर बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इसने केन्द्रीय समिति को समाप्त कर एक नई समिति का नामकरण किया जिसके राजनैतिक विभाग ने गोर्कित्स को मंत्री तथा टीटो को व्यवस्था मंत्री नियुक्त किया।

सन् १९३६ में टीटो अंतिम रूप से मास्को छोड कर युगोस्लाविया आये। वे गोर्कित्स से सतर्क रहते थे क्योकि वह उनके विचार पसंद नही करता था। उन्होने कहा, "गोर्कित्स ने मुझे तुरंत युगोस्लाविया जाने के लिये कहा। उसने मेरे लिये निकासी-पत्र प्राप्त किया और मुझे युगोस्लाविया में प्रवेश करने का अनुरोध किया परन्तु मैंने दूसरा निकासी-पत्र प्राप्त कर लिया और बिलकुल भिन्न मार्ग पर चला गया, क्योकि अन्य साथी जिन्होने गोर्कित्स द्वारा निकासी-पत्र प्राप्त किये थे युगोस्लाविया की सीमा पर पकड़े गये। ....

"मास्को से मैं प्राग और वहाँ से वियेना गया। उस समय केन्द्रीय समिति वियेना से पेरिस जा रही थी जहा उसका नया केन्द्र स्थापित होने वाला था। यह परिवर्तन फ्रास की बदली हुई राजनैतिक परिस्थिति से हुआ जहाँ लोकप्रिय मोर्चे को सत्ता प्राप्त थी। काम करने की सुविधायें वहाँ वियेना से कहीं अधिक उपलब्ध थीं, जहाँ 'फासिस्ट' पुलिस का आतक धीरे-धीरे बढ़ गया था।

"मास्को छोड़ने पर मुझे स्पेन के लिये स्वयं-सेवक भर्ती करने का विशेष काम सौंपा गया।"

कुछ समय आस्ट्रिया और फ्रांस मे व्यतीत करने के पश्चात् टीटो सन् १९३६ के अंत में कहीं युगोस्लाविया आये। दल की परिस्थिति अब भी विकट थी। पुलिस द्वारा प्रायः भंडा फूट जाता था। जैसे ही दल की समितियाँ बनती और काम प्रारंभ होता वैसे ही पुलिस सब सदस्यों का पीछा कर पकड़ लेती। यह परिस्थिति पुराने "लिक्विडेटर्स" के पक्ष में थी जिनका मत था कि ऐसा काम करने से क्या लाभ जिसके परिणामस्वरूप जेल में जाना पड़े। टीटो के युगोस्लाविया आने से पूर्व समस्त प्रान्तीय समिति और डेढ़ सौ से अधिक सदस्य पकड़े जा चुके थे। टीटो ने जागरेब से एक संदेश भेजा जिसमें बैलग्रेड के एक साथी से राय लेने की बात थी और मिलोबान द्यीलास, जो अभी जेल से छूटा था, जागरेब भेज दिया गया।

टीटो ने सब से पहला काम जो द्यीलास को सौंपा वह सर्विया से स्पेन के लिये स्वयंसेवकों को भेजने की व्यवस्था करना था। फ्रेंकों के विरुद्ध संघर्ष ने पूरे युगोस्लाविया के मजदूरों को उत्तेजित कर दिया था। युगोस्लाविया की सीमाओ पर हिटलर और मुसोलिनी का भय छाया हुआ था इसलिये लोग स्पेन को 'फ़ासिज़्म' के विरुद्ध संघर्ष का मैदान समझते थे। हजारों लोग स्पेन जाने के लिये तैयार थे यदि उन्हे जाने दिया जाता।

सन् १९३७ मे टीटो ने कई बार पेरिस की यात्रा की क्योंकि उनके संबंध केन्द्रीय समिति से थे और उन्हें युगोस्लाविया से स्पेन के लिये स्वयंसेवक भेजने का काम करना था। पहले वे लातीन क्वार्टर के एक होटल में रहे। उन्हें पेरिस घूमने का अवकाश नहीं मिलता था परंतु वे पेर लाचेज़ के कब्रिस्तान में प्रायः जाया करते थे जहां १८७१ में 'कम्युनार्ड्स' को फांसी लगी थी। उन्होंने फ्रांसीसी भाषा सीखना प्रारंभ कर दिया और 'ह्यूमानिते' पढ़कर समाचारपत्रों में राजनैतिक लेख पढ़ने योग्य ज्ञान प्राप्त कर लिया। एक बार टीटो फ्रांस की पुलिस द्वारा पकड़ ही लिये जाते। जब बादशाह जॉर्ज षष्ठ पेरिस आये तो पुलिस ने बड़ी सतर्कता से काम लिया। उसने सब संदेहजनक व्यक्तियो तथा उन लोगों की तलाशी ली जिनके पास उचित निकासी-पत्र नहीं थे इसलिये टीटो को शीघ्र होटल छोड़ना पड़ा। इस घटना से भी कष्ट का अन्त नहीं हुआ।

टीटो के निर्देशन में संस्था किसी प्रकार आस्ट्रिया और स्विटजरलैंड के मार्ग से स्वयंसेवक भेजती रही। लगभग डेढ़ हजार युगोस्लाविया के निवासी जिनमें अनेक बुद्धिजीवी भी सम्मिलित थे, भेजे गये। स्पेन में युगोस्लाविया के

लोगों ने भारी हानि उठाई। लगभग उनमें से आवे तो मारे गये, तीन सौ घायल हो गये और साढे तीन सौ स्पेन के पतन के पश्चात् फ्रांसीसी सीमा के निकट बंदी-गृह में डाल दिये गये। इनमें से तीन सौ निकल भागे और युगोस्लाविया पहुँच गये जहाँ वे बाद में युद्ध में लडे। जो व्यक्ति स्पेन की स्वाधीनता के लिये लड रहे थे उन्हे बहुमूल्य सैनिक अनुभव प्राप्त हुआ। यह उन्हें अपने देश के लिये बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ। आजकल २४ 'स्पेन निवासी', जैसा कि उन्हें पुकारा जाता है, युगोस्लाविया की सेना में जनरल और अनेक उच्च अधिकारी हैं।

टीटो पेरिस में कुछ समय के लिये रहे और जहां तक संभव हुआ, समस्यायें सुलझाते रहे। साथ ही उन्होने 'यूरोपेश स्तीमे' और 'इम्प्रोकोर' के लिये अनेक लेख लिखे जिनमें योरुप के प्रमुख साम्यवादियो और वामपक्षियो की राजनैतिक समीक्षाएँ प्रकाशित हुआ करती थीं। सन् १९३७ के अंत में टीटो आस्ट्रिया होकर दो पेरिस में पढने वाली युगोस्लाविया की लडकियो के साथ युगोस्लाविया आये। वे अपने साथ साहित्य, छोटी-छाटी पुस्तिकायें और दल का पत्र 'प्रोलेतर' लाये थे जो बेलजियम में प्रकाशित होता था। यहा पर आने पर टीटो को मास्को जाने का आदेश फिर मिला।

"मैं शीघ्र ही चल पडा। मास्को में मैंने दिमित्रोव से बातचीत की। मुझे ज्ञात हुआ कि गोर्कित्स को मत्री के पद से हटा दिया गया था और फिर पकड़ लिया गया था।

"दिमित्रोव ने बातचीट के दौरान में बताया कि मुझे केन्द्रीय समिति का, जो बिल्कुल बदली जाने वाली थी, अंतरिम मंत्री नियुक्त किया गया था।

"मैंने यह पद कैसे ग्रहण किया? दल का नेतृत्व पाने की मुझे कोई आकाक्षा नहीं थी और न ही मुझे यह मिला, परन्तु मैं शक्तिशाली, दृढ और क्रान्तिकारी नेतृत्व चाहता था। मैंने कभी प्रधान बनना नहीं चाहा, परंतु मैं ऐसे व्यक्ति को प्रधान के रूप में देखना चाहता था जो काम कर सके। मेरे लिये महत्वपूर्ण बात यह थी कि समह को शक्तिशाली और नेतृत्व को दृढ होना चाहिये, एक व्यक्ति को नही बल्कि पूरे समूह को।

"दिमित्रोव से बातचीत करते समय मुझे पोलैंड और कोरिया की भाति युगोस्लाविया के साम्यवादी दल को भी छिन्न-भिन्न करने की प्रवृत्ति दिखाई दी।

"मैंने दिमित्रोव का सुझाव स्वीकार करते हुए कहा; 'हम इस कलंक को मिटायेंगे।'

" 'काम पर लग जाओ!' उसने उत्तर दिया।

"मैं मास्को में कई मास रहा। बॉलशेविक दल का इतिहास अभी-अभी

"पांचवें, व्यक्तियों की विचारधारा संबंधी शिक्षा की ओर ध्यान देना भी आवश्यक था। यह भी आवश्यक था कि सामाजिक-विकास के मूल-भूत नियमो को पूर्ण रूप से समझने में उनकी सहायता की जाय जिससे वे किसी प्रकार भी पिछड़े नहीं रहे और पक्षपात से रहित हो जाय जिनका शिकार हममें से प्रत्येक हो सकता है और जिसे हम दवा नहीं सके।

"छठे, समस्त युगोस्लाविया में दल का संगठन करना आवश्यक था।

"सातवें, दल के सदस्यो से एक नया संबंध स्यापित करना भी आवश्यक था। किसी को इसलिये गाली देने की प्रथा कि उसने भूल की थी छोड दी गई। उसे वताया जाता था कि उसने भूल क्यो की। उसकी सहायता की जाती थी और उसे अपनी भूल को सुधारने का अवसर दिया जाता था। यह दूसरी वात है कि वह ऐसा करने के लिये विल्कुल तैयार न होता हो या फिर वह शत्रु की ओर से ही हमारे पास भेजा गया हो।

"आठवें, हमने वर्ग-संघर्ष के प्रति अपने सदस्यो का रवैया स्पष्ट कर दिया। वादशाह अलेक्जेन्डर के समय में युगोस्लाविया में जो तानाशाही और आतक ने घर कर लिया था वह १९३७ से १९४१ तक प्रिंस पॉल के समय में भी नही वदला।

"नवें, १९३७ से १९४१ तक सोवियत संघ ही एक ऐसा समाजवादी देश था जहा मजदूरो ने सत्ता प्राप्त कर ली थी।

"ये थे वे उद्देश्य जिन पर युगोस्लाविया के साम्यवादी दल ने उस समय काम करना प्रारम्भ किया जब मै १९३७ के अंत में जिस समय मेरे देश में महत्व-पूर्ण घटनायें घटने वाली थीं, इसका प्रधान बन कर आया था।"

"पांचवें, व्यक्तियों की विचारधारा संबंधी शिक्षा की ओर ध्यान देना भी आवश्यक था। यह भी आवश्यक था कि सामाजिक-विकास के मूल-भूत नियमो को पूर्ण रूप से समझने में उनकी सहायता की जाय जिससे वे किसी प्रकार भी पिछड़े नहीं रहे और पक्षपात से रहित हो जाय जिनका शिकार हममें से प्रत्येक हो सकता है और जिसे हम दवा नहीं सके।

"छठे, समस्त युगोस्लाविया में दल का संगठन करना आवश्यक था।

"सातवें, दल के सदस्यो से एक नया संबंध स्थापित करना भी आवश्यक था। किसी को इसलिये गाली देने की प्रथा कि उसने भूल की थी छोड दी गई। उसे वताया जाता था कि उसने भूल क्यो की। उसकी सहायता की जाती थी और उसे अपनी भूल को सुधारने का अवसर दिया जाता था। यह दूसरी वात है कि वह ऐसा करने के लिये विल्कुल तैयार न होता हो या फिर वह शत्रु की ओर से ही हमारे पास भेजा गया हो।

"आठवें, हमने वर्ग-संघर्ष के प्रति अपने सदस्यो का रवैया स्पष्ट कर दिया। वादशाह अलेक्जेन्डर के समय में युगोस्लाविया में जो तानाशाही और आतक ने घर कर लिया था वह १९३७ से १९४१ तक प्रिंस पॉल के समय में भी नही वदला।

"नवें, १९३७ से १९४१ तक सोवियत संघ ही एक ऐसा समाजवादी देश था जहा मजदूरो ने सत्ता प्राप्त कर ली थी।

"ये थे वे उद्देश्य जिन पर युगोस्लाविया के साम्यवादी दल ने उस समय काम करना प्रारम्भ किया जब मैं १९३७ के अंत में जिस समय मेरे देश में महत्व-पूर्ण घटनायें घटने वाली थीं, इसका प्रधान बन कर आया था।"

प्रकरण आठ

"जैसे ही हमारा राजनैतिक प्रभाव बढ़ा, हमारा गुप्त कार्य सरल हो गया...."

अपने पैंतालीसवे वर्ष मे, मजदूरों के आन्दोलन में सत्ताईस वर्ष काम करने, प्रथम विश्व युद्ध और अक्तूबर क्रान्ति के संकटों व ओजस्तवो में किसानों के साथ काम करने, युगोस्लाविया के लगभग सब औद्योगिक नगरों के मजदूरो की हड़तालो में भाग लेने; अपनी गिरफ्तारी और जेल में साढ़े पांच वर्ष व्यतीत करने; तथा अपने रूस मे बिताये गये अठारह वर्षो के अनुभव के पश्चात् योसिप ब्रोज टीटो अपने जीवन के अत्यन्त महत्वपूर्ण काम पर लगे, एक ऐसे काम पर जिसमे उनसे पूर्व न जाने कितने लोग असफल रहे थे। वे युगोस्लाविया के साम्य-वादी दल की केन्द्रीय समिति के मंत्री बन गये।

यह सन् १९३७ की बात है जब दूसरे महायुद्ध के भाग्य-निर्णायक दिन आ रहे थे।

"युगोस्लाविया के साम्यवादी दल ने जनता का ध्यान शीघ्र अपनी ओर आर्कषित कर लिया क्योंकि यह युगोस्लाविया की स्वाधीनता व सीमाओ की रक्षा के लिये तथा जातियों में समानता के लिये, प्रजातांत्रिक स्वतन्त्रता और मज़-दूर वर्ग के रहन-सहन की दशा सुधारने के लिये प्रत्यक्ष रूप से लड़ रहा था। जैसे हमारा राजनैतिक प्रभाव बढ़ा हमारा गुप्त कार्य सरल हो गया। अब दल के नेता देश में ही रहते थे इसलिये दल युगोस्लाविया की बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार काम कर सकता था। जिन जिलों मे दल की शक्ति नष्ट हो चुकी थी वहाँ सहायता पहुँचाई गई। संस्थायें बनाई गईं, स्थानीय समितियो से लेकर समस्त राष्ट्र के सम्मेलनो से विचार विमर्ष किया गया। सन् १९३९ की गर्मियों में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसमें बोसनिया के लिये प्रथम प्रान्तीय समिति का निर्वाचन हुआ; मेसीडोनिया में भी प्रान्तीय नेता चुने गये। इस प्रकार युगो-स्लाविया के सब भागों में दल के संगठन स्थापित हो गये। केन्द्रीय समिति के सदस्य जनता के साथ रहते और दल के संगठनों का बराबर दौरा करते थे। जागरेब मेरा प्रमुख कार्यालय था क्योंकि उस केन्द्रीय स्थान में रह कर समस्त

देश से संपर्क रखा जा सकता था ।

"पुलिस से बचने के लिये मैंने अपना नाम ईवान कोस्तानयसेक रखा । इसी नाम से मैंने अपना एक परिचय-पत्र बनवा लिया और अपने आप को जगलात और खानो के मत्रालय में काम करने वाला इंजीनियर बतलाने लगा । उसके पश्चात् सन् १९४० में मैंने एक अधिकृत इजीनियर का नाम और पदवी अपना ली और स्लावको बाबित्स के नाम से अपने सब कागजात बनवा लिये । मैंने जागरेब में एक छोटा-सा मकान किराये पर ले लिया और मेरे सब पड़ौसी मुझे इंजीनियर समझने लगे ।

"हमने 'फासिज्म' से देश को बचाने और रहन-सहन का स्तर उन्नत करने के लिये जनता में एक लोक-प्रिय मोर्चा बनाने का आन्दोलन चलाया । जनता इस मोर्चे में सम्मिलित हो गई और साम्यवादी दल देश में एक प्रमुख स्वदेशप्रेमी तथा क्रान्तिकारी शक्ति बन गया ।

"हमने एक साथ युगोस्लाविया का युद्ध में चैम्बरलेन और डेनेडियर की कठपुतली की भाति घसीटे जाने के प्रयत्न का विरोध और आतरिक रक्षा के सब उपायो का समर्थन किया । जब युगोस्लाविया में छोटे पैमाने पर भर्ती की घोषणा हुई तब हमने लोगो को इसका समर्थन करने की सलाह दी । उसी समय हमने सेना में शत्रु के जासूसो के विरुद्ध भयंकर लडाई की, विशेष रूप से उन देशद्रोही जनरलो के विरुद्ध जो इस सीमित भर्ती को पूरा नहीं होने देना चाहते थे ।

"मैं सन् १९३८ और ३९ के दौरान में दो बार मास्को गया । वहाँ कुछ समय ठहरने के पश्चात् मैंने दिमित्रोव से बातचीत की । वहाँ अब भी युगोस्लाविया के साम्यवादियो के संबंध में अविश्वास की भावना फैली हुई थी । मुझे याद है कि लक्स में भोजन के समय मैं एक मेज पर वेल्यको व्लाहोवित्स के पास बैठा था जो मॉन्टेनग्रो का विद्यार्थी था और जिसकी एक टाँग स्पेन में तरामा पर जाती रही थी । वह मास्को में अन्तर्राष्ट्रीय समिति में हमारे प्रतिनिधि के रूप में आया था । व्लाहोवित्स ने कहा, "तुम देखते हो किस प्रकार कोई भी हमारी मेज पर बैठना नहीं चाहता ।"

" 'यह कोई बात नहीं,' मैंने उत्तर दिया, एक दिन वे हम लोगो के पास बैठने के लिये कुर्सियां झपटते दिखाई देंगे ।'

"मेरी सन् १९३९ की मास्को यात्रा बहुत थोड़े समय के लिये थी क्योकि मैं उसी वर्ष मार्च में युगोस्लाविया लौट आया था । मैं अंतिम बार युद्ध से पहले सन १९३९ के पिछले दिनो में मास्को गया था और १९४० के आरंभ में वहाँ

चार महीने से अधिक रहने के पश्चात् लौट आया।

"युगोस्लाविया में मुझे नये और महत्वपूर्ण काम करने थे। दल का एक समस्त देशीय सम्मेलन आयोजित करने की आवश्यकता थी, जो युगोस्लाविया की परिस्थिति और उसके उचित उपायों पर विचार कर सके।

"यह सम्मेलन जिसे पाचवां राष्ट्रीय सम्मेलन कहा जाता था, ऐतिहासिक महत्व रखता था। यह भाग्य-निर्णायक दिवसों के पूर्व की हमारी अंतिम समीक्षा थी। सम्मेलन के चार मास पश्चात् ही हिटलर समर्थक जर्मनों ने और इटली के फासिस्टों ने युगोस्लाविया पर आक्रमण किया। सन् १९३७ के पश्चात् जो कुछ हमने युगोस्लाविया के लोगों के लिये संकेत किया था वही होकर रहा। सम्मेलन में इस खतरे पर कई बार ज़ोर दिया गया था।

प्रकरण नौ

"हिम्मत मत हारो, एकता बढ़ाओ...."

दूसरे महायुद्ध में युगोस्लाविया बारहवां योरुपीय देश था, जिस पर हिटलर और मुसोलिनी ने आक्रमण किया। उन्होने एक बार तो सोचा कि वे युगोस्लाविया में अपने जासूसों की सहायता से एशिया और योरुप को मिलाने वाले इस महत्व-पूर्ण पुल को उसी प्रकार छीन लेगे जैसे उन्होंने हगरी, रूमानिया और बलगारिया में किया था। युगोस्लाविया के सबंध में हिटलर और मुसोलिनी की आशायें मुख्य रूप से उन लोगो पर निर्धारित थीं जो उस प्रिस पॉल काराजियोर्जविल्स के चारो ओर घूमते रहते थे और जो बादशाह अलेक्जेन्डर का, जिसकी हत्या मार्सिलीज में सन् १९३४ में कर दी गई थी, चचेरा भाई था। (प्रिस पॉल राज्य प्रतिनिधि बना दिया गया था क्योकि बादशाह अलेक्जेन्डर का पुत्र पीटर, अभी नाबालिग था।)

यद्यपि प्रिस पॉल अपने आप को "ब्रिटेन जैसा प्रजातंत्रवादी" होने का दिखावा करता था परन्तु वह युगोस्लाविया में लोक-प्रिय नही था। आतरिक विषयों में उसने एक ऐसी नीति अपनाई जो वास्तव में अलेक्जेन्डर की नीति से भिन्न नहीं थी। क्रोशिया के मध्यवर्गीय लोगो को, जिनका नेतृत्व डा० व्लात्को माशेक कर रहे थे, अनेक सुविधायें देने के लिये बाध्य होने के कारण उसने मैसी-डोनिया तथा मॉन्टेनग्रो के निवासियो पर अत्याचार जारी रखा। वह तानाशाही विधान जिसे १९३१ में बादशाह अलेक्जेंन्डर ने लागू किया था और जिसके द्वारा जनता के साधारण प्रजातात्रिक अधिकार भी कम कर दिये गये थे, अब भी प्रचलित था। चुनाव अब भी सार्वजनिक मत से होता था। इसके अलावा बादशाह अले-क्जेन्डर ने युगोस्लाविया में बंदीगृह खोले और उसके शासन मे राजनैतिक बंदियो का पीटा जाना जारी रहा।

प्रिस पॉल की विदेशी नीति जर्मनी और इटली की चापलूसी पर आधारित थी। इसमें वह क्लाइवेडेन सेट द्वारा प्रोत्साहित किया गया जब कि चैम्बरलेन ब्रिटेन का प्रधानमत्री था। बड़े देशो के प्राचीन संग्रहालयो के खुलने से ही यह विदित हो सकता है कि १९३९–४० की शरद् ऋतु में प्रिस पॉल की हिटलर

से भेंट का वास्तविक परिणाम क्या हुआ ? उस समय युगोस्लाविया में यह विश्वास किया जाता था कि जर्मनी और उसके कुछ विरोधियों में संधि कराने के लिये प्रिंस पॉल हिटलर के साथ मध्यस्थ बन गया था।

अपनी नीति को जारी रखते हुए प्रिंस पॉल ने हिटलर को, जिसे वह १ मार्च सन् १९४१ से मिला था इस बात की स्वीकृति दे दी कि युगोस्लाविया को तीन शक्तियो के समझौते में सम्मिलित होना चाहिये, दूसरे शब्दो मे उसे हंगरी, रूमानिया और बलगारिया के मार्ग पर चलना होगा जिससे वह संयुक्त राष्ट्र के विरुद्ध एक मोर्चा बन सके। यह जानना अत्यन्त रुचिकर होगा कि वह क्या बात थी जिसने प्रिंस पॉल को धुरी राष्ट्रो का साथ देने के लिये प्रभावित किया। वाशिंगटन स्थित युगोस्लाविया के भूतपूर्व राजदूत, कोन्स्तान्तिन फोतिश ने अपनी 'दी वार वी लॉस्ट' नामक पुस्तक में लिखा है कि हिटलर ने प्रिंस पॉल को १९४१ में सूचित किया था कि वर्ष के अन्त में जर्मनी की सेना सोवियत संघ पर आक्रमण करेगी। इससे प्रिंस पॉल ने निश्चय किया कि युगोस्लाविया को तीन शक्तियो के समझौते में सम्मिलित हो जाना चाहिये। अन्य सूत्रो के आधार पर यह पता चलता है कि हिटलर ने १ मार्च सन् १९४१ मे प्रिंस पॉल से मिलने पर रूस के भावी शासक का प्रश्न उठाया था। उसने यह संकेत किया था कि कि यह काराजियोर्जवित्स के घराने का भी एक सदस्य हो सकता है।

प्रिंस पॉल ने सोचा कि दूसरे विश्वयुद्ध मे युगोस्लाविया का भाग्य इस प्रकार निर्मित हो चुका था। उसने अपने देश के हितो और स्वाधीनता को अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओ के आधीन कर दिया। इस कार्य में उसे उन लोगो से प्रोत्साहन मिल रहा था जिनकी सहायता पर उसे विश्वास था। उसके वर्ग के हित देश के हितो से बढ़कर थे यहाँ तक कि वे संयुक्त राष्ट्र से भी ऊंचे थे। २५ मार्च सन् १९४१ मे युगोस्लाविया के प्रधान मंत्री, द्रागीसा स्वेत्कोवित्स ने वियेना मे रिब्बेनट्रॉप तथा काउन्ट सियानो से यह तय किया कि युगोस्लाविया तीन शक्तियो वाले समझौते पर जमा रहेगा। युगोस्लासिया मे लोगों ने इस दिन को शोक-दिवस घोषित कर दिया। उसी दिन युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति ने एक घोषणा निकाली जिसमें वियेना मे किये गये विश्वासघात की निन्दा की गयी थी। उसी दिन संध्या को बैलग्रेड, स्प्लिट, क्रागुयेवाक तथा देश के अन्य भागो मे शक्तिशाली प्रदर्शन किये गये। लोगो के क्रोध की लहर समस्त देश मे दौड़ गई।

२७ मार्च १९४१ में एक हवाई अफसरों की टोली ने राजसत्ता छीन ली। प्रिंस पॉल को गिरफतार कर देश-निकाला दे दिया गया और जनरल

दुसान सिमोवित्स के नेतृत्व में स्वेत्कोवित्स माशेक के स्थान पर एक नई सरकार बन गई। बैलग्रेड और अनेक नगरो में जैसे प्रदर्शन हुए वैसे पहले कभी नहीं हुए थे। सब से लोक-प्रिय नारा था, "इस समझौते से तो युद्ध ही अच्छा।" बैलग्रेड की बडी-बड़ी सभाओ में खुले रूप से साम्यवादी दल के नेताओ ने भाषण दिये, जिन्होंने अब तक गुप्त जीवन बिताया था। टीटो २७ मार्च को जागरेब में थे परन्तु वे बैलग्रेड में दूसरे ही दिन आ गये।

जब हिटलर को यहां घटी हुई घटनाओ के विषय में बताया गया तो पहले उसने इन पर विश्वास ही नहीं किया, उसने इसे परिहास समझा। बैलग्रेड से आने वाले तारो द्वारा ही उसने स्थिति की गंभीरता जानी। उसी शाम को उसने जर्मनी के पैदल दस्तो के नेताओ को हुक्म दिया कि युगोस्लाविया की सेना व राज्य को नष्ट करने के लिये उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही की तैयारी की जाय। इस बारहवीं जर्मनी की सेना को बलगारिया में एकत्रित किया गया जिससे वह युगोस्लाविया की फौज के किनारे के भाग पर आक्रमण कर सके और युगोस्लाविया तथा यूनान अलग-अलग हो जायें। दूसरी जर्मन सेना को कर्नल जनरल वॉन वेत्स के नेतृत्व में आस्ट्रिया व हंगरी की ओर से युगोस्लाविया के उत्तर में आक्रमण करने का आदेश दिया गया।

हिटलर ने मुसोलिनी को तुरंत अपने निर्णय की सूचना दी। इस प्रकार हिटलर को युगोस्लाविया के विरुद्ध आक्रमण करने के लिये इटली की सहायता मिल गई। इसी तरह के आश्वासन हगरी, बलगारिया और रूमानिया से भी प्राप्त हुए।

एक प्रश्न जिस पर हिटलर ने गोरिंग से विशेष रूप से विचार-विमर्ष किया वह यह था कि युगोस्लाविया की राजधानी बैलग्रेड को किस प्रकार दंड दिया जाय। यह निश्चय किया गया कि बैलग्रेड पर भयंकर हवाई आक्रमण किये जायं। हिटलर को जिस बात से क्रोध आया वह यह थी कि युगोस्लाविया की घटनाओ से उसकी रूस के विरुद्ध आक्रमण करने की योजना बिगड गई थी। युगोस्लाविया के विरुद्ध सैनिक आक्रमण के कारण हिटलर ने आदेश दिया कि रूस पर हमला पहले चार और बाद में छ. सप्ताह के लिये स्थगित कर दिया जाय। इसी बिलम्ब के कारण मास्को की लड़ाई रूस की कडाके की सर्दी में हुई।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नही कि सिमोवित्स की सरकार न तो आतरिक विषयो में और न ही विदेश नीति मे कोई ठोस मार्ग अपना सकी। इसका पहला काम यह था जैसा इसने बताया कि वह जर्मनी और इटली के समझौते पर दृढ़ रहेगी। नई सरकार के विदेश-मंत्री डॉ० मोमसिलो निनशित्स ने

जर्मनी, इटली तथा अन्य धुरी राष्ट्रों को यह पत्र लिखा जिसमें स्पष्ट रूप से बताया गया था कि युगोस्लाविया अपने सब अंतर्राष्ट्रीय आश्वासनो को मान्यता देगा। इसमे युगोस्लाविया का धुरी राष्ट्रों का साथ देना भी शामिल था। सरकार ने यह भी निश्चय किया कि उपप्रधान मंत्री स्लोबोदान योवानोवित्स के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल मुसोलिनी से मिलने के लिये तुरंत रोम भेजा जाय और एक बार फिर युगोस्लाविया की धुरी राष्ट्रों के प्रति अपनी सच्चाई जता दे। इसी प्रकार के एक प्रतिनिधि मंडल को बर्लिन भेजने की संभावना पर विचार किया गया। उसी समय स्तालिन और मोलोतोव से मित्रता और परस्पर सहायता की संधि के संबंध में बातचीत करने के लिये एक प्रतिनिधि मंडल मास्को गया।

सरकार देश की रक्षा के लिये उपाय करने में असफल रही। २७ मार्च के पश्चात् पहले दिन ही पूरी भर्ती करने की घोषणा के स्थान पर युगोस्लाविया के विरुद्ध हिटलर के आक्रमण के एक दिन पश्चात् तक अर्थात् ७ अप्रैल तक कोई कदम नहीं उठाया गया। न ही देश की एकता को बढ़ाने के लिये कोई कदम उठाया गया।

६ अप्रैल को रविवार के दिन धूप अच्छी खिली हुई थी। बैलग्रेड मे प्रायः लोग रविवार को भी सुबह जल्दी उठ जाते है, इसलिये बैलग्रेड के सब बाजारों में भीड़ थी। ५ और ६ अप्रैल के बीच की रात को मास्को मे युगो-स्लाविया और रूस मे एक-दूसरे पर आक्रमण नहीं करने की संधि पर हस्ताक्षर हो गये। हजारों मजदूर सड़कों पर खड़े इस संधि के पक्ष मे बड़े-बड़े प्रदर्शनों की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रातःकाल सात बजे से कुछ पूर्व पहले हवाई जहाजों की घरघराहट सुनाई दी जिनकी भीड़ की भीड़ उत्तर से रूमानिया की सीमा की ओर से आ रही थी। बहुतों ने उन्हें बड़ी शान्ति से देखा और यह समझा कि वे युगोस्लाविया की हवाई सेना के जहाज थे और तब बम गिरने लगे। उसके बाद तो प्रलय ही हो गया।

पहला आक्रमण डेढ़ घंटे तक जारी रहा। इससे बड़ी बर्बादी हुई। लोग अपने घर छोड़ कर शीघ्रता से घायल और मृत व्यक्तियों के ऊपर से कूद कर आसपास की बस्तियों में भागने लगे। ११ बजे दूसरा हमला हुआ जो पहले से भी अधिक भयंकर था। शहर में पूर्ण रूप से अराजकता फैल गई थी। आसपास के खानाबदोश नगर के केन्द्र मे घुस गये और दुकानों पर टूट पड़े और वहां से कीमती फर, खाने की वस्तुएं यहां तक कि डाक्टरी औजार भी ले भागे।

जब आक्रमण प्रारंभ हुआ उस समय मै एडवर्ड कार्देय के साथ था। मै उसे जलती हुई सड़को से नगर के बाहर अपने एक समर्थक के घर ले गया जहाँ

में उसकी रक्षा की व्यवस्था करना चाहता था। कार्देय और मैं नगर से भागकर बाहरी बस्तियो में पहुँचे और एक खुली खाई में छिप गये। इस प्रकार ६ अप्रल को गोरिंग के हवाई हमले शीघ्रता से एक के बाद एक होते ही रहे।

उस दिन बैलग्रेड के हजारो लोगो की मृत्यु हो गयी, परन्तु सर्बिया के लोगो की एक जाति के रूप में भी भारी हानि हुई। बैलग्रेड में एक राष्ट्रीय पुस्तकालय था जिसमें मध्यकाल की हस्तलिखित प्रतिया मौजूद थीं साथ ही विरली पत्रिकायें थीं जिनके बिना मेरे देश के इतिहास व सस्कृति का अध्ययन करना असंभव है, सिमोवित्स सरकार ने इन बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने की कोई व्यवस्था नहीं की और जब बैलग्रेड पर बम गिराये गये तब एक जर्मनी का आग लगा देने वाला बम राष्ट्रीय पुस्तकालय की छत पर गिरा। इस प्रकार बहुमूल्य पुस्तके जल कर भस्म हो गईं।

बैलग्रेड पर बम गिरा कर हिटलर ने अपना मतलब पूरा कर लिया था। उसने युगोस्लाविया की राजधानी के निवासियो को २७ मार्च के लिये दड देने का निश्चय किया था। इस माली हानि के अलावा उसने युगोस्लाविया सरकार के दिल को भी तोड दिया था। जैसे ही बैलग्रेड में बम गिरने प्रारंभ हुए तब मंत्रिमडल के अनेक सदस्य अपनी मोटरो में बैठकर तेजी से जलती हुई राजधानी से भाग खडे हुए। परिस्थिति पर विचार और निर्णय करने के लिये सरकार कही भी नहीं रुकी। हाईकमाण्ड भी ऐसा ही घबराया हुआ था। युगोस्लाविया में कोई भी ऐसा केन्द्र नही था जहाँ से देश की रक्षा के काम में ताल-मेल किया जा सके।

६ अप्रैल के उस भाग्यनिर्णायक प्रात.काल में टीटो, कार्देय, दि्यलास और राकोवित्स कहाँ थे? केन्द्रीय समिति के अधिकांश सदस्य बैलग्रेड में थे।

जब बैलग्रेड जल गया तो जर्मन सैनिक नगर की ओर बढे।

६ अप्रैल को जब युद्ध प्रारभ हुआ उस समय टीटो जागरेब में नगर के बाहर बने एक मकान के अपने कमरे में थे, जिसे उन्होने स्लाव्को बाबित्स के नाम से किराये पर ले रखा था। उन्होने ११ बजे युद्ध प्रारंभ होने का समाचार अपने एक पड़ौसी से सुना जो जर्मन रेडियो सुन रहा था क्योकि बैलग्रेड रेडियो स्टेशन ने सुबह ही काम करना बन्द कर दिया था। टीटो तुरंत ही नगर में अपने साथियो से मिलने गये। सब तरफ गडबड़ मची हुई थी।

शहर में अपने साथियो की खोज करते समय टीटो माशेक के क्रोशिया के कृषक-दल के सैनिको की बैरको के पास से गुजरे। सैनिको से बातचीत करते समय उन्हे पता लगा कि ये लोग जर्मनो के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसी

कारण टीटो ने तुरंत जागरेब के प्रमुख मजदूरों का एक प्रतिनिधि मंडल जिसमें युगोस्लाविया की साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति के सदस्य भी सम्मिलित थे, चौथी सेना के मुख्य कार्यालय मे भेजा। इस प्रतिनिधि मंडल ने सेना के मुख्य अधिकारी, जनरल ओर्लोवित्स से यह प्रार्थना की कि मजदूरो को अपना नगर जर्मन और उस्ताशी के आक्रमण से बचाने के लिये हथियार दिये जायं।

दस अप्रैल को हिटलर के टैंक बोसनिया के दक्षिण में जाते हुए मार्ग मे जागरेब की सड़कों से युगोस्लाविया की बची हुई सेना को नष्ट करने के लिये गरजते हुए निकले। उसी दिन टीटो ने युगोस्लाविया की साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति की ओर से युगोस्लाविया की जनता के नाम एक घोषणा लिखी जो निम्न प्रकार थी :

"आप लोग जो इस स्वतन्त्रता संग्राम के लिये लड़ रहे है, और मर रहे है, विश्वास रखिये इसमे आपकी सफलता होगी..........हिम्मत मत हारो, एकता बढ़ाओ और अपना सिर उन भारी कष्टों के आगे मत झुकाओ जिनसे आप पीड़ित है........।" कुछ दिन पश्चात् सिमोवित्स सरकार ने शत्रु के आगे हथियार डाल देने का निश्चय किया। जनरल कालाफातोवित्स को बिना किसी शर्त के पराजय-पत्र पर हस्ताक्षर करने का आदेश मिला। बादशाह, सरकार और हाईकमांड निक्शित्स नगर मे आये जहां हवाई जहाज उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे और वे अपने देश तथा लोगों को उनके महान् संकट के समय में छोड़ कर चले गये।

अपने पीछे उन्होंने एक पराजित सेना और शत्रुओं से घिरा देश छोड़ा। जनरलों और बड़े अधिकारियों ने अपने आदमियों को हथियार डाल देने और शरणागत होने की आज्ञा दी, परंतु छोटे अधिकारियो ने ऐसा करने से मना कर दिया। उनमें से कुछ तो अपने सैनिक लेकर जंगलो मे चले गये या अपने हथियारों को सुरक्षित स्थानों में छिपा गये।

कुछ ही सप्ताह में हिटलर ने अपनी धमकी पूरी कर डाली। युगोस्लाविया को न केवल सैनिक दृष्टि से नष्ट किया बल्कि एक राज्य के रूप में भी। इस प्रकार युगोस्लाविया के टुकड़े हो गये। हिटलर को इससे भी संतोष नहीं हुआ। उसने चापलूस पावेलित्स को क्रोशिया मे सर्बियो को भारी संख्या में नष्ट करने के लिये उकसाया।

अप्रैल सन् १९४१ के अंत मे जब टीटो ने जागरेब मे युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति की बैठक बुलाई तो उस समय ऐसी दशा थी। इस बैठक मे भाग लेना बड़ा कठिन था। समस्त युगोस्लाविया नई सीमाओ

में विभाजित हो गया था इसलिये एक नगर से दूसरे नगर में विशेष रूप से एक सैनिक इलाके से दूसरे सैनिक इलाके में जाने के लिये विशेष आज्ञा-पत्र की आवश्यकता पडती थी । सतर्क तैयारियो और जाली आज्ञा-पत्रो की व्यवस्था करने के पश्चात् युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति के सदस्य जागरेब के एक कमरे में केवल एक दिन के लिये मिले । सब से पहिले टीटो ने देश की परिस्थिति का एक विस्तृत विवरण दिया, तब वाद-विवाद प्रारभ हुआ । आक्रमणकारियो के विरुद्ध विद्रोह करने का प्रश्न उठाया गया । साथ ही यह निर्णय किया गया कि विद्रोह का क्षेत्र विस्तृत हो और उसमें उन्हे भी सम्मिलित किया जाये जो नाजियो और फासिस्टो से लड़ने के लिये तैयार हो । अत में इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे की नींव रखी गयी । एडवर्ड कार्डेय ने बताया कि इस विषय में स्लोवीनिया में क्या हुआ था । २२ अप्रैल को एक बैठक स्लोवीनिया के साम्यवादी दल के प्रतिनिधियों, ईसाई समाजवादियो, सोकोल की शक्तिशाली व्यायाम-सस्था और सास्कृतिक कार्यकर्त्ताओ के समूह के बीच बुलाई गई जिसमें आक्रमणकारियो के विरुद्ध एक सयुक्त मोर्चा बनाने का निर्णय किया गया ।

जो लोग हिटलर और मुसोलिनी का साथ दे रहे थे उनके प्रति विरोध की बड़ी तीव्र भावना थी । इन कारणो से आक्रमणकारियो के विरुद्ध विद्रोह को शत्रु के जासूसो की लड़ाई के साथ जोड़ दिया जाना चाहिये था । इसका अर्थ यह था कि पहिले सिविल अधिकारियो को नष्ट करके उनके स्थान पर जनता के नये अधिकारियो को नियुक्त किया जाय । टीटो के भाषण का वह अंश इस प्रकार था, "आक्रमणकारियो के विरुद्ध अपने सघर्ष में सर्बिया के लोगो को अपने उन विद्रोहियो के विरुद्ध भी बड़ी दृढता से लडना होगा जिन्होंने जनता की इच्छा के विरुद्ध आक्रमणकारियो की सहायता से विभिन्न सरकारी पद प्राप्त कर लिये और जो अब भी जनता पर जर्मन विजेताओ की इच्छा लाद कर सर्बिया के श्रेष्ठ लोगो पर आक्रमणकारियो की आज्ञा से अत्याचार करना और उन्हे लूटना चाहते हैं ।" बैठक में यह भी निर्णय किया गया कि देश भर मे हथियार एकत्रित करने का काम जारी रखा जाय जिससे नगरो और गावो में जुम्मेवार व्यक्तियो के नेतृत्व में छिप-छिप कर आक्रमण करने वाली टोलियां बना ली जायं और नर्सिग व पहली सहायता की शिक्षा के पाठ्य-क्रम चलाये जायं । अप्रैल १९४१ के अत में केन्द्रीय समिति का ऐसा दृष्टिकोण था ।

उस समय युगोस्लाविया का साम्यवादी दल ही एक ऐसी संस्था थी जिसने आक्रमणकारियो के विरुद्ध संघर्ष किया और यही अकेली संस्था थी जो युगोस्लाविया के सब प्रातो में काम कर रही थी और जो एक सयुक्त युगोस्लाविया

के पक्ष में थी। इससे युगोस्लाविया के साम्यवादियों की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई और "साम्यवादी" का अर्थ "राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिये लड़ने वाला स्वदेश प्रेमी" समझा जाने लगा।

टीटो ने तुरंत ही मास्को में दिमित्रोव को इन निर्णयों की सूचना दे दी। जागरेब ट्रांसमीटर से टीटो का संपूर्ण भाषण मास्को भेज दिया गया।

अप्रैल की सब सदस्यो वाली बैठक में यह तय हुआ था कि केन्द्रीय समिति को बैलग्रेड जाकर आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष का केन्द्र बनाना चाहिये। टीटो के जागरेब से बाहर जाने के लिये यह सब से उपयुक्त समय था। वे मई के प्रारंभ में भली-भांति बैलग्रेड पहुँच गये।

युगोस्लाविया के समस्त भागों में समाचारों से विदित हुआ कि विद्रोह की तैयारियां संतोषजनक ढंग से हो रही हैं।

बीच मई में जर्मन सेना के दस्ते यूनान से बैलग्रेड होकर रूमानिया जाते समय बड़ी तेजी से युगोस्लाविया से गुजरे। एक बड़े जर्मन अधिकारी ने एक रूसी शरणार्थी को बताया कि हिटलर रूस पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था। यह सूचना टीटो को मिली जिसने रेडियो द्वारा मई के अंत में दिमित्रोव को यह संवाद भेज दिया। २२ जून के आते-आते युगोस्लाविया की ऐसी दशा थी।

जनता पूर्णरूप से विद्रोह के पक्ष में थी। पिछले डेढ़ सौ वर्षों में युगोस्लाविया के विभिन्न भागों में आक्रमणकारियों के विरुद्ध अट्ठाईस विद्रोह और दस स्वतन्त्रता संग्राम हुए। १९४१ की गर्मियों में जब युगोस्लाविया परास्त पड़ा था तो लोग इस घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे थे जो उन्हे बताती कि शस्त्र उठाने का समय आ गया है।

प्रकरण दस

“रूस के विरुद्ध आक्रमण से ही हमारा संघर्ष शीघ्र प्रारंभ हुआ....”

दूसरे विश्वयुद्ध के अत्यन्त संकटपूर्ण समय में युगोस्लाविया का विद्रोह प्रारभ हुआ। हिटलर ने रूस पर आक्रमण कर दिया था। उसकी सेना नें रूस की सीमा में बडे दूर तक घुस कर लाल सेना के बड़े-बडे दस्तो को घेर लिया था। ब्रिटेन को छोड़ कर समस्त योरुप हिटलर के नियत्रण में था।

२१ जून सन् १९४१ को योरुप के उन सब नगरों में, जो जर्मनो के अधिकार में थे, हिटलर का जर्मन सेना को सोवियत सघ के विरुद्ध आगे बढने का आदेश लाउड-स्पीकर से पढकर सुनाया जा रहा था। उस दिन दोपहर को युगोस्लायिवया की केन्द्रीय समिति की राजनैतिक उपसमिति की बैठक बैलग्रेड के आसपास एक मकान में हुई। यह सर्वसम्मति से निश्चत किया गया कि विद्रोह का समय आ पहुँचा था। बैठक अभी चल ही रही थी कि टीटो युगोस्लाविया के निवासियो के लिये जर्मनी, इटली, हगरी और बलगारिया के आक्रमणकारियो के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये एक घोषणा-पत्र लिखने लगे। उसी रात को यह घोषणा-पत्र बैलग्रेड के गुप्त छापेखानो में छापा गया और हरकारे द्वारा युगोस्लाविया के सब भागो में पहुँचा दिया गया।

२२ जून सन् १९४१ की घोषणा जारी होने के कुछ ही दिन पश्चात् आक्रमणकारियो के विरुद्ध कार्यवाही प्रारभ हो गयी। २३ जून और २४ जून के बीच की रात को तोड-फोड का पहला काम बैलग्रेड-जागरेब की रेल्वे लाइन पर हुआ। केन्द्रीय समिति की बैठक फिर २७ जून को बैलग्रेड में हुई। आक्रमणकारियो के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह का मुख्य कार्यालय ‘नैशनल लिबरेशन पार्टीसन डिटैचमैट्स’ के ‘जी एच क्यू’ (GHQ) के नाम से पुकारा जाने लगा। दल की सैनिक समिति ने काम करना बन्द कर दिया और इसके प्रधान ने नये ‘जी एच क्यू’ का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया। राजनैतिक उपसमिति ने सर्वसम्मति से टीटो को इस ‘कमाड’ में ले लिया। यह भी निर्णय किया गया कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का झंडा युगोस्लाविया का झडा माना

जाय जिसके बीच मे पॉच सितारे हो। टीटो ने टुकड़ियां बनाने के लिये पहले ही उनके कार्य और क्षेत्र, तोड़-फोड़, आक्रमण, रसद की व्यवस्था तथा डाक्टरी सहायता की हिदायते तैयार कर ली थी। यह भी निर्णय किया गया कि 'जी एच क्यू' को शीघ्र ही एक अधिकृत सूचना-पत्र निकालना चाहिये।

उन दिनो बैलग्रेड के वातावरण मे विशेष रूप से उदासी छाई हुई थी। जर्मन प्रचार ने उन विज्ञप्तियों का बड़ा विज्ञापन किया जिनमें हाईकमांड ने अपना रूस मे आगे बढ़ना बताया था। चापलूस अखबारो ने विशेष संस्करण निकाले।

इसके विरुद्ध बैलग्रेड के साम्यवादी युवकों ने इन चापलूस समाचार पत्रों को जनता के सामने जलाने का निश्चय किया। वे तीन-तीन की टोलियो बनाकर सौ से भी अधिक समाचारपत्रो की बिक्री के अड्डों पर गये; एक ने अखबार पकड़े, दूसरे ने उन पर पैट्रोल डाला और तीसरे ने इस ढेर को दियासलाई दिखा दी। दूसरे ही दिन प्रातःकाल तीनों नवयुवक जर्मन कमांड द्वारा गोली से उड़ा दिये गये।

दो दिन पश्चात् साम्यवादी युवको ने इसी प्रकार की कार्यवाही एक बड़े पैमाने पर करने का निश्चय किया। इस संगठन के नेता स्वयं नगर के सबसे व्यस्त स्थानों पर इस काम में अग्रसर होने गये।

तोड़-फोड़ का काम बड़ी तेजी से होने लगा। जर्मनों के टेलीफोन के तार काट दिये गये। अंधेरी गलियों में जर्मन सैनिकों पर हमले होने लगे और उनके हथियार भी छीने जाने लगे। जर्मनो की सैनिक गाड़ियाँ और मोटरें भारी संख्या में जलने लगी। सबसे प्रभावशाली हथियार एक छोटा-सा गोला था जो थोड़ी देर में ही पैट्रोल मे आग लगा देता था।

जर्मन कमांड ने भी करफ्यू लगा दिया। नगर के विभिन्न भागो मे अधिकांश मकानों की तलाशी ली जाने लगी। इसके उत्तर में अनियमित सेना के जत्थो ने निश्चय किया कि युगोस्लाविया के सब पुलिस वालों को मृत्यु-दंड दिया जाय।

ऐसी परिस्थिति मे ४ जुलाई को बैलग्रेड की एक धनाढ्य बस्ती देदीन्ये मे दल के एक समर्थक के घर में 'जी एच क्यू' की एक बैठक हुई। पुलिस की आँख से बचने के लिये दल के सदस्य एक-एक करके पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद घर में प्रवेश करने लगे। इस विद्रोह को आगे बढ़ाने के लिये इस बैठक में विस्तारपूर्वक एक योजना बनाई गई और टीटो ने संघर्ष के इस रूप की मुख्य बाते समझाईं।

विद्रोह की सफलता के लिये सब से पहले यह आवश्यक था कि पुरानी युगोस्लाविया सरकार के शासन को नष्ट किया जाय जिसने अपने आपको

पूर्ण रूप से आक्रमणकारियों की सेवा में अर्पित कर दिया था। विशेष कर पुलिस, चुगी-व्यवस्था इत्यादि को।

इस बैठक में यह निर्णय किया गया कि देश के विभिन्न भागो में विद्रोह का निर्देशन करने के लिये नेताओ को कहाँ-कहाँ जाना था। सर्बिया के विद्रोह के नेतृत्व का भार स्वय टीटो तथा अलेकसेन्डर राकोवित्स-मार्को ने लिया।

देश के अन्य भागो में भी विद्रोह होने लगा। किसी स्थान में अधिक, तो किसी में कम, पर समस्त युगोस्लाविया में जर्मनी, इटली, बलगारिया और हगरी के निवासियो का डटकर सामना करने की भावना फैल गई। दो दिन और दो रातो में तीन नगरो को छोड़ समस्त मॉन्टेनग्रो इटली निवासियो के अधिकार से मुक्त हो गया।

मॉन्टेनग्रो में विद्रोह का तेजी से फैलना बहुत कुछ इस विश्वास का परिणाम था कि शीघ्र ही लाल सेना की हिटलर की सेना पर विजय से युद्ध समाप्त हो जायगा।

बोसनिया और हर्जेगोविना तथा क्रोशिया के कुछ भागो में भी विद्रोह बड़ी शीघ्रता से फैल गया। देश के अनेक भागो में जनता पुलिस को चारो ओर से घेर कर खुरपो और काटो से प्रहार करने लगती। पुलिस प्राय. इनके सामने झुक जाती थी। क्रोशिया के उस भाग में जहा अधिकतर सर्बिया के लोग रहते थे विद्रोह विशेष तीव्रता से बढ़ा।

बैलग्रेड से टीटो ने समस्त देश के विद्रोह में ताल-मेल उत्पन्न किया। वे देदीन्ये की ग्लैडस्टन स्ट्रीट में रहते थे और नगर में बिना किसी विशेष आवश्यकता के नही जाते थे। वे सदा अपने साथ एक रिवॉल्वर और दो हथगोले रखते थे। १० अगस्त को 'जी एच क्यू' का सूचना-पत्र निकला जिसमें टीटो के नाम के स्थान पर "टी टी" (T T) लिखा हुआ था। सूचना-पत्र के पहले अंक में टीटो ने अपने "दी टास्क ऑफ दी नैशनल लिबरेशन पार्टीसन डिटैचमैन्ट्स" नामक लेख मे विस्तारपूर्वक बताया था कि विद्रोह किस प्रकार फैलाया जाय।

उस लेख में सोलह छोटे-छोटे विषय थे। इसमें यह घोषणा की गई थी कि दल के अनियमित सैनिक जत्थो का मुख्य ध्येय युगोस्लाविया के लोगो को स्वतन्त्र करना था साथ ही उन लोगो के विरुद्ध संघर्ष करना जो लोगो को दबाने और आतकित करने में सहायता दे रहे थे। टीटो ने इस बात पर जोर दिया कि दल के अनियमित सैनिक जत्थे ही "नैशनल लिबरेशन डिटैचमैन्ट्स" कहलाये जायं क्योंकि वे लड़ाकू दस्ते थे, किसी राजनैतिक दल अथवा गुट की ओर से

नहीं—साम्यवादी दल की ओर से भी नहीं—यद्यपि साम्यवादी संघर्ष में अग्रसर थे—परंतु वे युगोस्लाविया के लड़ाकू सैनिक थे, इसलिये इसमें सब देशभक्त सम्मिलित हो सकते थे, चाहे उनके विचार कुछ भी क्यों न हों, पर जो आक्रमण-कारियों के विरुद्ध सशस्त्र लड़ाई लड़ सकते थे।

युगोस्लाविया के समस्त भागों से आने वाले समाचारों से ज्ञात होता था कि विद्रोह निरंतर बढ़ रहा है।

एक दिन जुलाई के अंत में अलेक्सेन्डर रांकोवित्स, जो केन्द्रीय समिति का सदस्य था, बैलग्रेड रेडियो स्टेशन को बारूद से उड़ाते समय गिरफ्तार कर लिया गया।

जैसे ही टीटो ने रांकोवित्स के गिरफ्तार होने का समाचार सुना तो उन्होंने तुरन्त बैलग्रेड दल संगठन को किसी प्रकार भी उसे मुक्त कराने का आदेश दिया।

जिस अस्पताल में रांकोवित्स को रखा गया था वह नगर के ठीक बीच में था। मंगलवार २९ जुलाई को प्रातःकाल १० बजे अनियमित सेना के सैनिक सादे कपड़े पहन कर तीन-तीन की टोलियों में अस्पताल के हर दरवाजे पर खड़े हो गये और दस सैनिकों का एक दल अंदर चला गया। उन्होने अपनी टोली के एक साथी को हथकड़ियां पहना दी जिससे लोग यह समझें कि वे जासूस हैं और किसी बंदी को ले जा रहे हैं। इस प्रकार वे अस्पताल में घुस गये। फाटक पर नियुक्त पुलिस ने उन्हे नहीं रोका जैसे दरवाजे पर पुलिस ने उन्हें नही रोका था परंतु बरामदे के एक पुलिस पहरेदार ने उन्हें रोकने का प्रयत्न किया। उसे तुरंत गोली मार दी गयी और अनियमित सेना के सैनिक उस कमरे मे घुस गये जहां रांकोवित्स उपस्थित था।

इस काम मे भाग लेने वाले अनियमित सैनिकों में से कोई नही मरा। इस बात से बैलग्रेड में बड़ा उत्साह फैल गया। कुछ दिन पश्चात् सर्बिया के साबत्स नामक नगर मे अनियमित सेना के एक बड़े दल ने बंदी-गृह पर आक्रमण किया और ८० साथियों को मुक्त कर दिया।

सर्बिया के अनेक गांव तथा कुछ छोटे नगर भी स्वतन्त्र हो गये। आक्र-मणकारियों को भगाकर स्वतन्त्र प्रदेश स्थापित हुआ। वह समय अब आ रहा था जब बैलग्रेड से, जहां की परिस्थिति अब अधिक संकटपूर्ण हो गई थी, 'जी एच क्यू' को हटा कर किसी स्वतन्त्र प्रदेश में ले जाया जाय। सितम्बर के प्रारंभ में टीटो ने बैलग्रेड छोड़ दिया। यह कोई सरल काम नहीं था।

टीटो ने स्वतन्त्र प्रदेश में सितम्बर में प्रवेश किया और अक्तूबर १९४४ तक बैलग्रेड वापिस नही आये जब युगोस्लाविया की राजधानी से जर्मनों को

अंतिम रूप से भगा दिया जाय। टीटो के स्वतन्त्र प्रदेश में पहुँचने पर 'जी एच क्यू' के सदस्यो और युगोस्लाविया के सब भागों की अनियमित सेना के कमाडरो की एक बैठक पश्चिमी सर्विया में हुई। इससे पहले टीटो ने युगोस्लाविया की सेना के भूतपूर्व कर्नल द्राजा मिहेलोवित्स से भी संपर्क स्थापित करना चाहा।

भेंट की व्यवस्था की गई और टीटो अनियमित सेना के कुछ सैनिको के साथ द्राजा मिहेलोवित्स से मिलने चले गये। उनकी पहली भेंट स्ट्रगारिक गाँव में एक किसान के घर में हुई जहाँ उन्होंने सीधे इस प्रश्न पर बातचीत करना आरभ किया कि आक्रमणकारियो को किस प्रकार भगाया जाय ? वास्तव में द्राजा मिहेलोवित्स की इच्छा यह थी कि युगोस्लाविया में १९४१ से पहले का ढर्रा अपनाया जाय और तब जर्मनो की पराजय के पश्चात् बादशाह पीटर और उस सरकार को, जो देश से भागी हुई थी, राजपाट सौंप दिया जाय। टीटो ने द्राजा मिहेलोवित्स के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा कि जर्मन सेना को बाहर निकालने के लिये सयुक्त कार्यवाही की जाय, परंतु, कोई समझौता नहीं हो सका।

कुछ दिन पश्चात् अनियमित सेना के कमाडरो की एक बैठक स्टोलिका नामक गाँव में हुई। मैसीडोनिया को छोड़ कर समस्त युगोस्लाविया के कमांडरो ने इस बैठक में भाग लिया।

यह बैठक कई दिन तक चलती रही। युगोस्लाविया के प्रत्येक भाग की राजनैतिक और सैनिक परिस्थिति की ब्यौरेवार जाँच की गई तथा अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

पहले यह निर्णय किया गया कि युगोस्लाविया के प्रत्येक प्रान्त में 'जी एच क्यू' स्थापित किया जाय जिससे विभिन्न अनियमित सेना के जत्थो मे सरलतापूर्वक ताल-मेल किया जा सके, जब कि वर्तमान 'जी एच क्यू' को युगोस्लाविया के 'नैशनल लिबरेशन पार्टीसन डिटैचमैंट्स' के सर्वोच्च कार्यालय का रूप दिया जाने वाला था।

दूसरे युगोस्लाविया में सर्विया की भांति नये स्वतंत्र प्रदेश बनाने के लिये एक नई योजना तैयार की गई। सर्बिया में स्वतन्त्र प्रदेशो की सीमायें बढाने की भी योजना बनाई गई। यह बात भी तय की गई कि आक्रमण किन स्थानो पर किया जाय, उनका समय क्या हो और इसके लिये किस प्रकार के सैनिक भेजे जायं।

तीसरे, यह निर्णय किया गया कि समस्त स्वतंत्र प्रदेशो में पुराने अधिकारियो के स्थान पर नवीन राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समितियाँ स्थापित की जायें।

चौथे, यह कि अनियमित सेना के जत्थे बढ़ाये जायं यहा तक

कि उनकी एक पल्टन बन जाय । उस शत्रु से मुठभेड़ नहीं की जाय जो अपनी संख्या और गोलाबारूद के सामान की दृष्टि से हमसे कहीं बढ़चढ़ कर था बल्कि उन अनियमित सैनिक जत्थों पर, जिनकी संख्या पर्याप्त हो, जो कही भी लेजाये जा सकते हों और जो एक दूसरे से भली प्रकार संबंधित हों, विश्वास किया जाय ।

पाँचवे, यह भी निर्णय किया गया कि आक्रमणकारियो के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये फिर विचार विमर्ष करने की संभावना पर द्राजा मिहेलोवित्स से आगे बातचीत की जाय ।

स्टोलिका की बैठक मे लिये गये निर्णयों का शीघ्र प्रभाव पड़ा । अनियमित सेना के चौबीस जत्थो ने अपने काम में ताल-मेल स्थापित कर लिया ।

जन समितियों ने स्थानीय अधिकारियों का काम ले लिया, जिन्होंने अपने आप को आक्रमणकारियों की सेवा में अर्पित कर दिया था । इन समितियो में वे लोग थे जो आक्रमणकारियों की सेना और उन के चापलूसो के विरुद्ध संघर्ष के पक्ष में थे । सर्बिया में समस्त सर्बिया के लिये एक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समिति का निर्माण हुआ जो भावी सरकार की एक अपूर्ण दशा का स्वरूप बन गई । स्वतन्त्र प्रदेशो में पाठशालाये खोली गयी ।

जर्मन कमांड ने सितम्बर के मध्य में और अधिक सैनिक सर्बिया मे भेजे जिससे वे उसके स्वतन्त्र प्रदेश नष्ट कर सकें, परंतु उनका प्रयत्न असफलरहा ।

द्राजा मिहेलोवित्स ने भी टीटो के ये तीन प्रस्ताव स्वीकार नही किये जो जर्मनों के विरुद्ध मिली-जुली सैनिक कार्यवाही, अन्तरिम अधिकारियों की व्यवस्था और भर्ती के संबंध मे थे ।

उस समय तक जर्मन कमांड ने स्वतंत्र प्रदेश को नष्ट करने के लिये दूसरा प्रहार किया था । इस प्रकार स्वतन्त्र प्रदेश के १२५ मील लम्बे मोर्चे पर आक्रमण हुआ ।

अनियमित सेना के जत्थे उजिस से उत्तर मे भेजे गये । अचानक उजिस में १-२ नवम्बर की रात मे खतरे की घंटी सुनाई दी । शत्रु के दस्ते शहर से केवल ढाई मील की दूरी पर थे । हमारी सेना ने पहले ही उससे टक्कर ले ली थी । अनियमित सैनिकों के जत्थे शीघ्र नगर से मोर्चे की ओर जा पहुँचे और शस्त्र बनाने वाले कारखानो के मजदूर बंदूके लिये दौड़कर लड़ाई के मैदान में पहुँच गये । पौ फटते ही शत्रु पीछे धकेल दिया गया और अनियमित सेना के जत्थों ने शत्रुओ को घेरना प्रारंभ कर दिया जो अब तेजी से भाग रहे थे ।

वे जर्मन नही थे बल्कि द्राजा मिहेलोवित्स के चेटनिक थे । हमने उन्हे जर्मनो से लड़ने के लिये जो बंदूकें और गोला बारूद दिया था उससे उन्होने

हमारे स्वतन्त्र प्रदेशो पर एक ऐसे समय में प्रहार किया जब जर्मनों का एक भीषण आक्रमण चारो ओर से हम पर हो रहा था।

यह आक्रमण गति पकडने लगा। सर्व प्रथम उजिस के उत्तर में वाल्योवो में हमारी सुरक्षा-व्यवस्था टूट गई। जर्मन पैदल दस्तो ने उसे तोडने के लिये भारी प्रहार किये थे। जर्मनो की हवाई सेना बडा ऊधम मचा रही थी क्योकि हम इसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर सकते थे। बात यह थी कि हमारे पास न तो हवाई जहाजो को गिराने वाली तोपें ही थीं और न ही तेज छोटे हथियार। जर्मन हवाई जहाज हमारे सैनिक स्थानो से सौ गज की दूरी तक उतर आते थे और उनसे बदला लेने के लिये हम केवल उन पर बंदूके चला सकते थे।

चार दिन पश्चात् जर्मन सेना के टैंक नगर में घुसने लगे और नगर निवासियो को बाहर चले जाने का आदेश दिया गया। मैं भी उजिस से बीस मील की दूरी पर ज्लातिबोर पर्वत पर आ गया।

उजिस में जर्मन टैंको के प्रवेश करने से केवल बीस मिनट पहले टीटो बाहर निकल आये थे। वे उन लडने वाले व्यक्तियो में से एक थे जो सब से अंत में बाहर आये। वे जर्मन दस्तो से जब डेढ सौ गज की दूरी पर ही थे कि उनके ठीक सामने गोलियां चल रही थीं। वे पर्वत की ओर पीछे हटने लगे और जर्मन दस्ते तेजी से उनका पीछा करने लगे।

अंधेरा हो रहा था। मैं ज्लातीबोर पर्वत पर घर के बड़े कमरे में अकेला बैठा था जिसमें एक ही बत्ती टिमटिमा रही थी। अचानक दरवाजा खुला। टीटो अंदर आये। दि्यलास उनसे चिपट गये। हर्ष के मारे कार्देय कुछ नहीं बोल सका। टीटो थकान से चूर थे। उन्होने अपनी छोटी मशीन नीचे उतार कर रखी और बैठ गये। उजिस की ऊपरी पहाडी से, जहाँ जर्मन दस्तो से उनकी मुटभेड़ हुई थी, वहां से टीटो शत्रु की गोलियो की बौछार में से होकर पहाड़ी रास्ते पर बीस मील पैदल चल कर आये थे। टीटो ने परिस्थिति का निरीक्षण करते हुए कहा, "शीघ्र से शीघ्र घायल व्यक्तियो को दूसरे स्थान पर ले जाओ। अपने सैनिक स्थानो की रक्षा करो। जर्मन यहां भी पहुँचने का प्रयत्न करेंगे।

प्रकरण ग्यारह

"यदि तुम हमारी सहायता नहीं कर सकते तो हमारे बाधक भी मत बनो......"

इस प्रकार युगोस्लाविया के विद्रोह का पहला वर्ष समाप्त हुआ। यह धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध संघर्ष की बड़ी विकट परिस्थितियों मे प्रारंभ हुआ था जब हिटलर को परास्त करने की बहुत कम संभावना प्रतीत होती थी। निस्संदेह यह संयुक्त राष्ट्रों द्वारा युद्ध के कार्य में एक भारी नैतिक देन होती यदि मित्र राष्ट्रों को यह पता होता कि यह विद्रोह किस तरह फैला, कहां तक सफल हुआ, कितना प्रदेश स्वतन्त्र किया गया और हिटलर की सेना को कितनी भारी हानि उठानी पड़ी !

उस समय युगोस्लाविया के विषय में, जहां तक राष्ट्रीय स्वतन्त्र आन्दोलन और टीटो का संबंध था, संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख राष्ट्रो द्वारा कोई प्रचार नहीं किया जाता था। मित्र-राष्ट्रो के समाचार पत्रो, रेडियो-समाचारों अथवा सार्वजनिक सभाओं मे इसके संबंध मे एक शब्द भी नही कहा गया। इस बात से हम पर कितना दुखद प्रभाव पड़ा इसे समझने के लिये यह आवश्यक था कि युगोस्लाविया की जर्मनों के विरुद्ध लड़ाई कोई आँख से देखता। इस सम्बन्ध मे चुप्पी भी सही जा सकती थी परन्तु इसके स्थान पर अनियमित सेना के विषय में भली-बुरी बातें कही गईं और सबसे अधिक प्रशंसा उस व्यक्ति की हुई जिसका सन् १९४१ में सर्बिया में से जर्मनो को मार भगाने में कोई हाथ नहीं था---वह था द्राजा मिहेलोवित्स।

मूल रूप से स्तालिन और युगोस्लाविया के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के बीच पहले ही अनबन प्रारंभ हो चुकी थी। स्तालिन इस बात से अप्रसन्न था कि हमने उसकी इच्छा के विरुद्ध नये प्रकार का शासन स्थापित कर लिया था। निस्संदेह स्तालिन यह तो चाहता था कि युगोस्लाविया में विद्रोह हो परंतु इसे वह केवल जर्मन सेना की प्रगति रोकने का एक साधन समझता था। वह यह कभी नही चाहता था कि एक ऐसा प्रगतिशील आन्दोलन चले जिसकी नीव अपनी ही हो और जो अपनी ही शक्ति पर निर्भर रह सके साथ ही अपनी मुक्ति

के लिये लाल सेना की प्रतीक्षा नहीं करे। इसी कारण से स्तालिन ने युगोस्लाविया के विद्रोह को बढावा नहीं दिया। रूसी प्रचार ने कभी अनियमित सेना की चर्चा नहीं की यद्यपि स्तालिन को जागरेव के गुप्त ट्रासमीटर द्वारा युगोस्लाविया की परिस्थिति का ब्यौरा प्रतिदिन मिल जाता था।

ये दिन युगोस्लाविया में अनियमित सेना के लिये बडी कठिनाई के थे। वे लडते समय मौत से नहीं डरते थे। वे अपना जीवन केवल अपने देश की स्वतन्त्रता के ही लिये नहीं बलिदान कर रहे थे परन्तु समस्त सयुक्त राष्ट्रों के युद्ध के कार्य के लिये भी।

इटली निवासियो और चैटनिको के विरुद्ध लडाई में शत्रु से पहले मुठभेड हुई, जिसमें प्रथम 'प्रोलेटेरियन ब्रिगेड' ने बडी सफलता प्राप्त की। इसमें १२० से भी अधिक इटली के सैनिक तथा अनेक हथियार पकडे गये। इससे अनियमित सेना के जत्थो को जर्मनो के विरुद्ध लडाई में हुई हानि के पश्चात् बडा प्रोत्साहन मिला।

इसी बीच टीटो इटली वालो के विरुद्ध लडते लड़ते लगभग अपने जीवन से हाथ धो ही चुके थे। सर्वोच्च कार्यालय ज्लातार पर्वत की तराई के गाँव द्रेनोवो में एक किसान के लकड़ी के घर में था। टीटो इसी मकान के एक बड़े कमरे में उच्च कार्यालय के अन्य सदस्यो, 'वायरलैस ऑपरेटर' और दो या तीन अंगरक्षको के साथ सो रहे थे।

दिन निकलते ही सतरी चला गया क्योकि दिन के समय सतरी रखने की प्रथा नही थी। टीटो स्रेतेन जुयोवित्स के साथ सब से पहले उठ बैठे। ऐसे समय में जुयोवित्स खिडकी के बाहर झाक कर चिल्लाया, "देखो वे सैनिक हमारी ओर बढ रहे हैं।"

टीटो ने उन इटली वालो को पहचान लिया जो युद्ध-भूमि से निकाल दिये गये थे। वे इस मकान से केवल २५० गज की दूरी पर थे। जैसे ही इटली के सैनिको ने उस मकान पर गोली बरसाना प्रारभ किया, जिसमें उच्च कार्यालय था, तो टीटो ने तुरत आवश्यक कागज तथा ट्रासमीटर हटा लेने की आज्ञा दी। टीटो ने अपनी छोटी मशीनगन उठा ली और अनेक साथियो के साथ घर से भाग कर दस गज की दूरी वाली पहाडी पर मोर्चा बनाने चले गये जब कि ट्रांसमीटर और प्राचीन वस्तुओ का सग्रह लाने वाले साथी पीछे हट रहे थे।

इसी बीच में प्रथम 'प्रोलेटेरियन ब्रिगेड' बन चुका था। टीटो उसे साथ लेकर बोसनिया चले गये। सर्दी का मौसम आ गया था।

जर्मन कमांड ने इस विकट तापमान का कोई विचार नही किया, परंतु

उन प्रदेशों पर आक्रमण कर दिया जहाँ उच्च कार्यालय और प्रथम 'प्रोलेटेरियन ब्रिगेड' स्थापित किये हुए थे। इस बार जर्मनों ने युद्ध मे अपने बर्फ पर लड़ने वाले सैनिकों को भेज दिया।

जैसे ही इस आक्रमण के पश्चात् अवकाश मिला प्रथम 'प्रोलेटेरियन ब्रिगेड' फोका नगर मे घुस गया जो इटली वालों और चैटनिको के अधिकार मे था और जहाँ उच्च कार्यालय तीन मास से भी अधिक समय तक रहा था।

फोका में यह कार्यालय एक होटल में था। दो मास में पहली बार हमने रात को सोते समय कपड़े उतारे। देश के अन्य भागो के जत्थो से रेडियो द्वारा संपर्क रखा गया। अमियमित सेना की ओर से डाकखाना प्रारंभ किया गया। स्वतन्त्र प्रदेशो मे टैलीफोन की व्यवस्था हो गई थी।

बिना रूसी सहायता के उस वर्ष समस्त युगोस्लाविया में अनियमित सेना के जत्थे शरद् व बसंत ऋतु मे लड़ते रहे। फोका नगर के आसपास स्वतंत्र प्रदेश की 'प्रोलेटेरियन ब्रिगेड' का गोला बारुद का सामान समाप्त हो गया। शत्रु ने हमारा मजाक उड़ाया और कहा, "पाँच गोली वाले लोगो", क्योंकि प्रत्येक सैनिक के पास पांच गोलियाँ थीं।

उस समय रूसी सरकार युगोस्लाविया की राजसी सरकार से अपना संबंध घनिष्ट कर रही थी। उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि मास्को मे युगोस्लाविया के राजसी प्रतिनिधि मंडल को दूतावास मे परिणित कर दिया जाय। युगोस्लाविया की राजसी सरकार के प्राचीन संग्रहालय से जो युद्ध के पश्चात् बैलग्रेड भेज दिये गये थे, यह पता चलता है कि रूस द्वारा सन् १९४२ में अनियमित सेना के जत्थों को सहायता नही पहुँचाये जाने के कारण टैक्नीकल नही, राजनैतिक थे।

सन् १९४१–४२ मे रूस और युगोस्लाविया के बीच ऐसे संबंध थे। इस प्रकार स्तालिन ने युगोस्लाविया को विद्रोह के संकटपूर्ण समय मे अनियमित सेना के जत्थों को सहायता पहुँचाने के स्थान पर द्राजा मिहिलोवित्स के उच्च कार्यालय में मुख्य स्थान प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया, जिससे वह रूस की विदेश नीति के लिये लाभदायक सिद्ध हो सके। युगोस्लाविया के लोग और वहा के प्रगतिशील आन्दोलन के हित उसके लिये इतने महत्वपूर्ण नही थे।

प्रकरण बारह

"हम बीस महीने तक बिना किसी सहायता के लड़ते रहे......"

अनियमित सेना के जत्थो के निरंतर शक्तिशाली बनते रहने तथा जर्मनो के बराबर आक्रमण करने पर भी स्वतन्त्र प्रदेशो के बढने से हिटलर और मुसोलिनी ने और भी कड़ी कार्यवाही करने का निश्चय किया। दिसम्बर १९४१ के अत में मुसोलिनी ने हिटलर को लिखा :

"जहां तक बलकान का प्रश्न है वसंत ऋतु से पहले-पहले विद्रोह के समस्त गढो को नष्ट कर देना आवश्यक है।"

फोका के चारो ओर स्वतन्त्र प्रदेशो के विरुद्ध आक्रमण की तैयारी मार्च के अंत में समाप्त हो गई और तीसरे आक्रमण की तैयारी होने लगी। इसमें इटली, जर्मनी, उस्ताशी और चैटनिक की सेनाओ ने भाग लिया। यह स्पष्ट था कि हम फोका को नही बचा सकते थे। हमारा लडाई करने का ढंग यह था कि हम रात को आक्रमण करते थे जिसमें हम शत्रु का कड़ा विरोध करते परंतु उसके सामने नही आते थे। उसके यातायात के भी सब साधन नष्ट कर देते थे। मई १९४२ के प्रारंभ में हम फोका से पीछे हट गये।

जनता के लडाकू दल बढ गये थे। सर्वोच्च कार्यालय ने एक बैठक में यह तय किया कि उत्तर की ओर दूर तक पश्चिमी बोसनिया के स्वतन्त्र प्रदेशो तक बढ़ा जाय जो लगभग दो सौ मील की दूरी पर थे। इस अवसर पर ऐसी योजना बनाई गई कि शत्रु के यातायात के महत्वपूर्ण साधनो आड्रियाटिक सागर और सारायेवो के बीच की रेल की पटरी और शत्रु के मोर्चों पर भी भारी आक्रमण किया गया।

इस प्रकार युगोस्लाविया की अनियमित सेना ने अपना लंबा कूच प्रारंभ किया। तीस मील तक फैली हुई इस रेल की पटरी पर किया गया यह आक्रमण अत्यन्त आश्चर्यजनक था। बहुत से रेल के डिब्बो को तो उनके सामान सहित कब्जे में ले लिया गया। शत्रुओ के बहुत से मोर्चे नष्ट कर दिये गये और किसी ने [illegible] रोका।

शत्रु को हमारे आक्रमण की आशा नहीं थी। टीटो ने आगे बढ़ने की सीमा बहुत सोच समझ कर बनाई थी जो इटली और जर्मनी द्वारा अधिकृत प्रदेशों के बीच में थी। अनियमित सेनाओ के जत्थो ने १९४२ की बसंत ऋतु में बोसनिया के अनेक नगर स्वतन्त्र कर डाले। यहीं पर सर्वप्रथम अनियमित हवाई सैनिको का जत्था तैयार हुआ था।

शत्रु ने स्वतन्त्र प्रदेशों पर चारो ओर से आक्रमण कर दिया। अनियमित सैनिकों के जत्थों और पचास हजार से अधिक स्त्री, बच्चो और वृद्ध पुरुषो ने कोजारा पर्वत पर शरण ली जिसे शत्रु ने तेजी से घेर लिया। कई सप्ताह घमासान युद्ध के पश्चात् अनियमित सेना के दस्ते उस घेरे को तोड़ कर स्वतन्त्र हो गये।

इसी समय पाँच जनता के सैनिक दस्ते दक्षिण की ओर जा घुसे। इस प्रकार स्वतन्त्र प्रदेश बचा लिया गया और उसकी सीमा काफी बढ़ा दी गई क्योंकि जनता के सैनिक दस्ते शत्रुओं के अनेक मोर्चों पर अधिकार कर चुके थे। सर्वोच्च कार्यालय पहले ग्लामोक के नगर में रखा गया उसके पश्चात् बोसंकी पेट्रोवाक चला गया। जन-समितियाँ स्वतन्त्र प्रदेशों के सब भागो में काम करने लगी। इनका पहला चुनाव अक्तूबर सन् १९४२ में हुआ जिसमें पहली बार स्त्रियों को मत देने का अधिकार मिला। अनेक महिलायें इन समितियो की सदस्य बन गईं जो इस पहाड़ी प्रदेश में, जहाँ लोग स्त्रियो के विषय में दकियानूसी विचार रखते थे, बड़े महत्व की बात थी। युद्ध ने अनेक परिवर्तनों के साथ-साथ इसमें भी परिवर्तन कर दिया। महिलाओं ने समितियों का काम बड़ी कुशलतापूर्वक किया।

ग्रीष्म ऋतु में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना में डेढ़ लाख सैनिक हो गये। उसी समय यह भी निर्णय किया गया कि 'ए वी एन ओ जे' (युगोस्लाविया की फासिस्ट विरोधी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समिति) का एक सम्मेलन बुलाया जाय। बिहाक में हुए इस समिति के सम्मेलन में युगोस्लाविया के समस्त भागों के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रमुख प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

इस सम्मेलन का समस्त युगोस्लाविया पर बड़ा प्रभाव पड़ा। शत्रु ने फिर एक बार अनियमित सैनिको का आन्दोलन समाप्त करने की चेष्टा की।

सब तैयारियां पूरी हो चुकी थीं और आक्रमण जनवरी १९४३ के पिछले पन्द्रह दिनो में प्रारम्भ हो गया। मुख्य प्रहार पश्चिमी बोसनिया और लीका में स्वतन्त्र प्रदेश पर होने वाला था। यह प्रदेश पहाड़ो और जंगलों से भरा पड़ा है।

शत्रु के पास शक्तिशली हवाई सेना थी । सर्वोच्च कार्यालय ने तुरत अपनी सैनिक कार्यवाही की योजना तैयार कर ली । यह तय किया गया कि शत्रु को रोकने का भरसक प्रयत्न किया जाय परतु किसी भी दशा में उसके सामने आकर नही लडा जाय । उसी समय युगोस्लाविया के अन्य भागो में दस्तो को यह आदेश भिजवा दिया गया कि शत्रु के यातायात के साधनो तथा उसके मोर्चो पर रात दिन आक्रमण किया जाय । उच्च कार्यालय ने प्रथम जल-सेना, द्वितीय जल-सेना तथा तीसरे डिवीजन को भी एकत्रित होने का आदेश दिया जिससे वे शत्रु के घेरे को तोड कर हर्जेगोविना और मॉन्टेनग्रो को स्वतन्त्र कर सके जिन पर उस समय शत्रु ने पूर्ण अधिकार कर रखा था । इसका अर्थ था शत्रु के आक्रमण का युगोस्लाविया के आक्रमण में परिवर्तित होना ।

जर्मन आक्रमण बडा शक्तिशाली था । दूसरी ओर उच्च कार्यालय द्वारा किये गये उपाय अत्यन्त सफल रहे ।

टीटो और उसके साथी उस समय नेरेत्वा नदी के निकट एक छोटी मिल में रहते थे । एक दिन मैंने इन्हे नदी के पास ऊपर नीचे टहलते देखा ।

टीटो ने तब मुझे अपनी भावी सैनिक कार्यवाहियो की योजना के विषय में बताया । हम लोगो को सब घायलो की प्रतीक्षा करनी थी और नेरेत्वा नदी के सब पुलो को नष्ट करना था, जिससे शत्रु यह समझे कि हमने उसे पार करने का विचार छोड़ दिया है । तब हम लोगो को अपनी प्रमुख सेनायें उत्तर में, जर्मनो को जहाँ तक हो सके पीछे हटाने के लिये भेजनी थी इतने में सहसा नेरेत्वा नदी के पार निकलना था ।

टीटो की आज्ञा का तुरंत पालन किया गया । उत्तर में जर्मनो की सेनाओ के डिवीजन बदले में हमारा आक्रमण देखकर चकित रह गये ।

नेरेत्वा से पार रुकने के पश्चात् अनियमित सेना के दस्ते हर्जेगोविना और मॉन्टेनगो से होकर बडी तेजी से एक के बाद दूसरे नगर को स्वतन्त्र करते हुए निकले ।

पश्चिमी बोसनिया मे घमासान युद्ध हो रहा था जहाँ जर्मन सेना के डिवीजनो ने ग्रमेस पर्वत पर अनियमित सेना के दो ब्रिगेड घेर लिये थे ।

इस आक्रमण द्वारा प्राप्त की हुई विजय तथा अन्य प्रदेशो में अनियमित सेना के आन्दोलन के आकार ने हिटलर को उनके विरुद्ध आक्रमण करने के लिये विवश कर दिया । दूसरे मित्रराष्ट्रो के क्षेत्र में यह स्पष्ट हो गया कि अनि-यमित सेना के जत्थे युगोस्लाविया में बडे शक्तिशाली थे और द्राजा मिहेलोवित्स ऐसा बलवान नही था जैसा कि समझा जाता था, विशेषकर नेरेत्वा घाटी की

पराजय के पश्चात् । इसलिये ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्र प्रदेश में एक प्रेक्षक भेजने का निर्णय किया । एक दिन रात को जब लीका के स्वतन्त्र प्रदेश पर "लिबरेटर" उड़ रहा था, ब्रिटिश वर्दी में एक अधिकारी हवाई जहाज से हवाई छतरी की सहायता से तीन बिना कमीशन वाले अधिकारियो सहित उतरा। उसने अपना नाम विलियम जोन्स बतलाया ।

सर्वोच्च कार्यालय को मेजर जोन्स ने सूचित किया कि एक विशेष ब्रिटिश सैनिक मडल उन्हें भेजा जायगा । इसी समय दोपहर मे जर्मनो ने तीन जनता के जत्थों तथा अनेक अन्य दस्तो पर भी जो मॉन्टेनग्रो और बोसनिया के किनारो के बीच सर्वोच्च कार्यालय के पास थे, भारी आक्रमण किया । शत्रु ने चारों ओर से बड़ी बुरी तरह से घेर लिया था ।

जब आक्रमण हुआ तो हम लोगों को अपनी प्रगति रोकनी पड़ी क्योंकि हम ब्रिटिश सेना-मंडल के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे । अंत मे जब वह हवाई छतरियो से उतरा तो सर्वोच्च कार्यालय दुरमितोर पर्वत पर स्थित था । विलियम दीकिन दूसरे विश्व युद्ध मे अनियमित सेना की एक अत्यन्त भयानक लड़ाई मे अपना मंडल लेकर आया था । टीटो की भुजा भी घायल हो गई थी ।

इस प्रकार पाँचवाँ आक्रमण समाप्त हुआ । टूटे हुए दस्ते नष्ट हो गये थे । हानि तो भारी हुई थी परन्तु एक नैतिक विजय प्राप्त हो गयी थी । नये लड़ाकू शीघ्र दस्तो में भर्ती हो गये ।

टीटो ने मध्य बोसनिया के मोर्चे पर हमला करने का आदेश दिया । नये हथियार पकड़े गये और फिर से जन-सेना के गीत गूंज उठे । पॉचवे आक्रमण के समय अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति को समाप्त करने का समाचार मिला ।

युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति ने मास्को से आये समाचार पर विचार किया और निम्न उत्तर भेजा :

"अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था की कार्यकारिणी द्वारा प्रस्तुत अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति को समाप्त करने के प्रस्ताव पर विचार करने के पश्चात् युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति इस प्रस्ताव का पूर्ण रूप से समर्थन करती है, यहाँ तक कि दिये हुए कारणो मे भी । युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति को पूरा विश्वास है कि इस ऐतिहासिक निर्णय का निकट भविष्य में अवश्य ऐसा परिणाम निकलेगा कि मनुष्य मात्र के शत्रु फासिस्ट आक्रमणकारियो पर इसके विरुद्ध होंगे ।

"अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति को इसकी सहायता के लिये धन्यवाद. युगोस्लाविया के साम्यवादी दल ने [illegible] दल का [illegible]

कर लिया है जो इस संकट काल में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष कर रहा है और जिसने जनताकी अथवा युगोस्लाविया के बहुमत की सद्भावना प्राप्त कर ली है ।"

स्वतन्त्र-प्रदेश निरंतर बढने लगा । पश्चिम के मित्र राष्ट्रों से केवल १९४४ के पिछले दिनो और १९४५ के प्रारभ में भारी सख्या में हथियार आने लगे, विशेष रूप से फर्वरी १९४५ के मार्शल टीटो और मार्शल अलेक्जेन्डर के बीच समझौते के पश्चात् जब यह तय किया गया कि युगोस्लाविया की चौथी सेना को सामान इटली स्थित मित्र सेनाओ द्वारा भेजा जाय ।

उसके पश्चात् इटली की पराजय हुई । यद्यपि हमारे सर्वोच्च कार्यालय को पहले से इस घटना की सूचना नहीं दी गई थी कि इटली के ग्यारह दस्ते निश्शस्त्र कर दिये गये थे परतु यह बात अनियमित सेना के जत्थो के लिये बड़ा महत्व रखती थी ।

Награда од 100.000 рајхсмарака у злату!

100.000 Рајхсмарака у злату добиће онај који доведе жива или мртва комунистичког вођу Тита.

Овај злочинац бацио је земљу у највећу несрећу. Као бољшевички агент, овај скрнавитељ цркава, попова и друмски разбојник хтео је да организује у земљи совјетску републику, а к томе је уобразио да је он позван да „ослободи“ народ. За остварење тога циља он се спрема у шпанском грађанском рату и у Совјетској Унији, где је упознао све терористичке методе ГПУ-а, методе скрнављења културе и животињског уништавања људских живота.

Ова његова „ослободилачка акција“, која је имала да утре пут бољшевизму, том најгрознијем политичком режиму на свету, одузела је имање, добра па и живот хиљадама људи. Она је само пореметила мир сељака и грађанина и бацила земљу у неописиву беду и невољу. Порушене цркве и спаљена села трагови су којима је он прошао.

Стога је овај опасни бандит у земљи уцењен са 100.000 Рајхсмарака у злату.

Онај који докаже да је овог злочинца учинио безопасним или га преда најближој немачкој власти не само што ће добити награду од 100 000 Рајхсмарака у злату, него ће тим извршити и једно национално дело јер ће ослободити народ и отаџбину од бича бољшевичког крвавог терора.

Врховни Заповедник
немачких трупа у Србији.

सर्बिया स्थित जर्मन कमाडर द्वारा "साम्यवादी नेता टीटो" को जीवित अथवा मृत पकड़ लाने के लिये १००,००० जर्मन मार्क का पुरस्कार सोने के रूप में देने की घोषणा

द्राजा मिहेलोवित्स का साथ दिया है और इस प्रकार उन्हीं पर युगोस्लाविया की जनता के साथ छल करने की पूरी जिम्मेदारी है ।

"दूसरे, हम उन्हे युगोस्लाविया लौटने नही देंगे नहीं तो गृह-युद्ध हो जायगा।

"तीसरे, हम उन लोगो के बहुमत की ओर से बोलते है जो राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समितियो पर आधारित प्रजातान्त्रिक गणतंत्र चाहते है।

"चौथे, इस समय तो जनता की अधिकृत सरकार फासिस्ट विरोधी परिषदो के अतर्गत राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समितिया है ।"

जायेस में मास्को सम्मेलन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा हो रही थी। यह सम्मेलन १३ से लेकर ३० अक्तूबर तक जारी रहा, परन्तु सोवियत सरकार ने टीटो का वक्तव्य कार्यक्रम में नहीं रखा ।

इसके उपरात युगोस्लाविया में यह तय किया गया कि जायेस में 'ए वी एन. ओ. जे' का सम्मेलन बुलाया जाय। टीटो और उसके साथियो ने इस नगर में किले के नीचे एक समतल भूमि पर जहां कार्यालयो के लिये दो बैरक बने हुए थे अपना निवास स्थान बना लिया। टीटो एक बैरक के छोटे कमरे में रहते थे जो हवाई हमलो से बचने के काम आने वाली एक सुरग के निकट था।

'ए. वी एन. ओ. जे.' की बैठक से एक दिन पहले जर्मन बमवर्षको ने नगर पर आक्रमण कर दिया। टीटो ने कुछ नगर निवासियो सहित उसी सुरग में शरण ली ।

'ए. वी. एन. ओ. जे.' की बैठक के लिये युगोस्लाविया के भीतरी भागो से प्रतिनिधि आये थे। यह बैठक भूतपूर्व व्यायाम संस्था "सोकोल" के भवन में हुई। हवाई हमलो के डर से इसका अधिवेशन रात को रखा गया।

युगोस्लाविया के लिये 'ए. वी एन. ओ. जे.' का दूसरा अधिवेशन युद्ध के दिनो में अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना थी, क्योकि वही से नये राज्य की नींव पड़ी थी। २९ नवम्बर का दिन जब अधिवेशन हुआ था, नवीन युगोस्लाविया के लिये राष्ट्रीय दिवस के रूप मे मनाया जाता है। इसी अधिवेशन में तो 'ए. वी. एन. ओ जे' की कार्यकारिणी के रूप में राष्ट्रीय समिति का निर्माण हुआ था जो अस्थायी सरकार का काम करती थी। 'ए. वी.एन. ओ. जे.' ने लंदनस्थित देश निकाला दी हुई सरकार को युगोस्लाविया की सरकार के अधिकारो से वचित करते हुए एक प्रस्ताव पास किया। यह भी निर्णय किया गया कि बादशाह पीटर और काराजियोर्जवित्स वंश के अन्य सदस्यो के भी युगोस्लाविया लौटने पर प्रतिबन्ध लगाया जाय, साथ ही राज्य के रूप का प्रश्न—वह गणतत्र हो अथवा राजतंत्र, को युद्ध के पश्चात् निर्णय के लिये छोड़ा जाय। उसका उद्देश्य घोषित किया गया कि युगो-

द्राजा मिहेलोवित्स का साथ दिया है और इस प्रकार उन्हीं पर युगोस्लाविया की जनता के साथ छल करने की पूरी जिम्मेदारी है ।

"दूसरे, हम उन्हे युगोस्लाविया लौटने नही देंगे नहीं तो गृह-युद्ध हो जायगा।

"तीसरे, हम उन लोगो के बहुमत की ओर से बोलते है जो राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समितियो पर आधारित प्रजातात्रिक गणतंत्र चाहते है ।

"चौथे, इस समय तो जनता की अधिकृत सरकार फासिस्ट विरोधी परिषदो के अतर्गत राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समितिया है ।"

जायेस में मास्को सम्मेलन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा हो रही थी । यह सम्मेलन १३ से लेकर ३० अक्तूवर तक जारी रहा, परन्तु सोवियत सरकार ने टीटो का वक्तव्य कार्यक्रम में नहीं रखा ।

इसके उपरात युगोस्लाविया में यह तय किया गया कि जायेस में 'ए वी एन. ओ. जे' का सम्मेलन बुलाया जाय। टीटो और उसके साथियो ने इस नगर में किले के नीचे एक समतल भूमि पर जहां कार्यालयो के लिये दो बैरक बने हुए थे अपना निवास स्थान बना लिया । टीटो एक बैरक के छोटे कमरे में रहते थे जो हवाई हमलो से बचने के काम आने वाली एक सुरग के निकट था ।

'ए. वी एन. ओ. जे.' की बैठक से एक दिन पहले जर्मन बमवर्षको ने नगर पर आक्रमण कर दिया । टीटो ने कुछ नगर निवासियो सहित उसी सुरग में शरण ली ।

'ए. वी. एन. ओ. जे.' की बैठक के लिये युगोस्लाविया के भीतरी भागो से प्रतिनिधि आये थे । यह बैठक भूतपूर्व व्यायाम संस्था "सोकोल" के भवन में हुई । हवाई हमलो के डर से इसका अधिवेशन रात को रखा गया ।

युगोस्लाविया के लिये 'ए. वी एन. ओ. जे.' का दूसरा अधिवेशन युद्ध के दिनो में अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना थी, क्योकि वही से नये राज्य की नींव पड़ी थी । २९ नवम्बर का दिन जब अधिवेशन हुआ था, नवीन युगोस्लाविया के लिये राष्ट्रीय दिवस के रूप मे मनाया जाता है। इसी अधिवेशन में तो 'ए. वी. एन. ओ जे' की कार्यकारिणी के रूप में राष्ट्रीय समिति का निर्माण हुआ था जो अस्थायी सरकार का काम करती थी। 'ए. वी.एन. ओ. जे.' ने लंदनस्थित देश निकाला दी हुई सरकार को युगोस्लाविया की सरकार के अधिकारो से वचित करते हुए एक प्रस्ताव पास किया । यह भी निर्णय किया गया कि बादशाह पीटर और काराजियोर्जवित्स वंश के अन्य सदस्यो के भी युगोस्लाविया लौटने पर प्रतिबन्ध लगाया जाय, साथ ही राज्य के रूप का प्रश्न—वह गणतत्र हो अथवा राजतंत्र, को युद्ध के पश्चात् निर्णय के लिये छोड़ा जाय । उसका उद्देश्य घोषित किया गया कि युगो-

स्लाविया एक राज्य-संघ हो ।

यह भी तय किया गया कि अमरीका सरकार को युगोस्लाविया के सोने को काम मे नही लेने की अपील की जाय, जिसे हिटलर से बचाने के लिये वाशिंगटन भेज दिया गया था और अब देश निकाला दी हुई सरकार राजसी स्वार्थवश जिसे व्यर्थ ही उड़ा रही थी । स्लोवीन प्रतिनिधि मंडल के प्रस्ताव रखने पर टीटो को युगोस्लाविया के मार्शल की पदवी दी गयी ।

'ए वी एन ओ जे' की कार्यकारिणी और राष्ट्रीय समिति के लिये राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के लब्ध प्रतिष्ठ प्रतिनिधि चुने गये। विद्रोह के पहले दिन से ही राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना के एक सदस्य डॉ० ईवान रिबार 'ए. वी. एन. ओ जे.' के प्रधान चुने गये । टीटो राष्ट्रीय समिति के प्रधान और राष्ट्रीय सुरक्षा के कमिश्नर चुने गये ।

'ए वी.एन.ओ.जे' का अधिवेशन भी ठीक उसी समय हुआ जब तेहरान मे रूजवेल्ट, स्तालिन और चर्चिल का सम्मेलन हो रहा था । उसमें दूसरे मोर्चे और हिटलर के विरुद्ध मित्र राष्ट्रो को सैनिक कार्यवाही की योजना के साथ-साथ युगोस्लाविया के धुरी राष्ट्रो के विरुद्ध युद्ध मे सहयोग के विषय में भी विचार विमर्ष किया गया। तेहरान मे रूजवेल्ट, स्तालिन और चर्चिल इस बात से सहमत हो गये कि युगोस्लाविया जर्मनो के विरुद्ध लड़ने वाली मौलिक शक्ति राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना थी, जिसका नेतृत्व टीटो कर रहे थें ।

'ए. वी. एन. ओ. जे.' का प्रस्ताव स्वीकार होने पर ही मास्को को उसका निर्णय ज्ञात हुआ, विशेषकर देश निकाला दी हुई राजसी सरकार को अधिकार वंचित करने और बादशाह पीटर पर युगोस्लाविया लौटने पर प्रतिबंध लगाने के विषय में। मास्को की प्रथम प्रतिक्रिया क्रोधपूर्ण थी। "स्वतन्त्र युगोस्लाविया" रेडियो स्टेशन की यह आज्ञा थी कि वह बादशाह के लौटने पर प्रतिबन्ध लगाने के प्रस्ताव का समाचार प्रसारित नहीं करे।

मानुइल्स्की ने स्तालिन का संदेश दिया :—

"स्तालिन अत्यन्त क्रोधित है । उनका कहना है कि यह सोवियत संघ और तेहरान के निर्णयो की पीठ मे छुरी भोकना है ।"

स्तालिन की इस प्रतिक्रिया से युगोस्लाविया के लोगों को आश्चर्य हुआ । उस समय यह बात उनके सामने स्पष्ट नही थी । साल भर पहले 'ए वी. एन.ओ.जे.' के अधिवेशन मे राष्ट्रीय समिति के निर्माण संबंधी स्तालिन के विरोध का स्मरण हुआ ।

राष्ट्रीय समिति का नहीं बनाया जाना अथवा युगोस्लाविया के निवा-

सियो को इस वात का स्पष्ट संकेत भी नहीं देना कि काराजियोर्जवित्स वश के अंतर्गत पुराने युगोस्लाविया से एकदम भिन्न नवीन युगोस्लाविया के लिये लड़ रहे थे, का अर्थ होता कि ढाई साल में जो कुछ प्राप्त किया था उसका त्याग कर देना। इसका अर्थ होता युगोस्लाविया की क्रान्ति का अन्त। स्तालिन का विरोध तो वहुत वाद में समझ में आया; उसने युगोस्लाविया को युगोस्लाविया के निवासियो के होने के उद्देश्य का विरोध किया; वह इस देश को किसी-न-किसी वड़ी शक्ति के 'प्रभाव का क्षेत्र' बनाना चाहता था।

पश्चिम में भी राष्ट्रीय समिति के निर्णय से आश्चर्य हुआ परन्तु विश्व के उस भाग के निवासियों को इस पूर्व निश्चय को मान लेना पडा। युगोस्लाविया की वची हुई सेनाओं के प्रत्येक यथार्थवादी राजनीतिज्ञ को यह स्पष्ट था कि युद्ध में से किस प्रकार का युगोस्लाविया निकलेगा। इसके अलावा लंदन और वाशिगटन में प्रत्येक यह मान चुका था कि जायेस के निर्णयो की घोषणा से पूर्व टीटो ने स्तालिन की सम्मति प्राप्त कर ली थी। पश्चिमी सामाचर पत्रो की टीका-टिप्पणी तो इतनी आलोचनात्मक होती थी परन्तु फिर भी वह युगोस्लाविया के पक्ष में ही थी। मास्को के दृष्टि-कोण में परिवर्तन हो चुका था और १५ दिसम्बर को 'ए.वी एन.ओ.जे.' के निर्णय ज्ञात होने के दो सप्ताह पश्चात् विदेश विभाग के कमसरिएट ने एक घोषणा निकाली। इसके साथ-साथ सोवियत सरकार ने भी अपना एक सैनिक मंडल युगोस्लाविया भेजने की घोषणा की।

उसी समय, सर्वोच्च कार्यालय का एक सैनिक मडल कैरो आया, जहाँ उसने मित्र राष्ट्रो के मुख्य कार्यालय के प्रमुख व्यक्तियो से संपर्क स्थापित किया। यह वार्ता विशेष रूप से राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना को गोलाबारूद देने के प्रश्न से संवधित थी। मुख्य निर्णय जो किया गया वह अनियमित सेना के घायल सैनिकों को इटली स्थित मित्रराष्ट्रो के अस्पतालो मे पहुँचाना था।

जर्मन कमांड के लिये युगोस्लाविया की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-सेना ने एक भय उत्पन्न कर दिया। सन् १९४३ के अंत मे हिटलर ने वाईस जर्मन डिवीजनो, नौ वलगेरिया के और बीस स्थानीय देशो के पिछलग्गू के डिवीजनो के छ. लाख आदमियो को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना के विरुद्ध लड़ने का काम सौंपा। उसने साथ-साथ राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना के उन भागो पर आक्रमण करने की योजना बनाई जिन्होंने यातायात के महत्वपूर्ण साधनो को नष्ट करने की धमकी दी थी। इस प्रकार सातवा आक्रमण प्रारभ हुआ। यह एक काफी बड़े मोर्चे पर फैला हुआ था जिसका तीसरा प्रहार पूर्वी बोसनिया में अनियमति सेना के तीसरे दस्ते के विरुद्ध किया गया। टीटो ने युगोस्लाविया के सब भागो पर आक्रमण करने

टीटो जून सन् १९४३ में घायल होने के शीघ्र पश्चात्
डॉ० ईवान रिबार के साथ

का आदेश दिया।

उसी समय टीटो ने राष्ट्रीय समिति और सर्वोच्च कार्यालय के लिये स्वतंत्र प्रदेश में एक सुरक्षित स्थान ढूंढने का निश्चय किया जिससे बढ़ती हुई राज्य-व्यवस्था का काम सुविधाजनक हो जाय। जायेस छोड़ दिया गया और कार्यालय को पश्चिम मे १२५ मील दूर एक सुरक्षित घाटी में द्रवार नामक नगर में स्थापित कर दिया।

१९४३-४४ की ठंड में लड़ने का अर्थ था हिटलर की युगोस्लाविया में पूर्णरूप से असफलता।

युगोस्लाविया की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना ने शत्रु पर एक से एक बढ़ कर जबरदस्त प्रहार किये। यह सूचना मित्र राष्ट्रों के सैनिक मंडलों के अधिकारियों ने दी जो राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना के सब दस्तों से संबंधित थे।

सोवियत का सरकारी सैनिक मंडल अंत मे एक दिन पश्चात् युगोस्लाविया आया। इसकी कैसी प्रतीक्षा की गयी, युगोस्लाविया के लोगो को लाल सेना के प्रतिनिधियो से मिलकर कितनी प्रसन्नता हुई! उसी रात को लाल सेना की वर्ष गांठ मनाने के लिये एक सार्वजनिक सभा हुई।

२४ फरवरी को सोवियत सैनिक मंडल के आने पर टीटो ने अपने राष्ट्रीय समिति के प्रधान और युगोस्लाविया के मार्शल होने के नाते विदेशी राज्य के प्रतिनिधियो के सम्मान मे अपने प्रथम विशाल स्वागत समारोह का आयोजन किया। वे पहली बार अपने कंधों और गले पर सोने से कढ़ी हुई माला वाली मार्शल की वर्दी पहनकर आये थे।

राष्ट्रीय समिति के सामने अब एक कठिन कार्य था जिसमें केवल साहस की नही बल्कि दूर-दर्शिता की आवश्यकता थी। उसे युगोस्लाविया की अधिकृत सरकार के रूप में मान्यता प्राप्त करनी थी। यह बड़ी विकट समस्या थी क्योंकि बड़े देश अब भी निर्वासित राजसी सरकार को ही मान्यता देते थे जबकि वे तेहरान के निर्णय में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना को मित्र-राष्ट्र की सेना मान चुके थे।

प्रधान टीटो ने एडवर्ड कार्देय के साथ उस वर्ष शरद् ऋतु में अपने को जीवन के एक अत्यन्त कठिन काम में लगा दिया था। इस प्रकार वे अपनी कार्यवाहियों का एक नया पृष्ठ प्रारंभ कर रहे थे। एक नई सरकार के प्रधान होने के नाते उन्होंने अन्य देशो के प्रधानों से अपनी सरकार को अधिकृत होने की मान्यता प्राप्त करने के विचार से बातचीत की।

उन्ही दिनो टीटो ने विन्स्टन चर्चिल से भी पत्र-व्यवहार किया। तेहरान

की बैठक के पश्चात् प्रधानमंत्री की बीमारी के सम्बन्ध में टीटो ने ब्रिगेडियर मेक्लीन द्वारा शीघ्र उनकी आरोग्य कामना का पत्र भेजा। चर्चिल ने उत्तर में व्यक्तिगत पत्र के साथ अपनी तस्वीर भी भेजी, जिसका टीटो ने तुरत उत्तर दिया। इन पत्रो में चर्चिल ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना की जर्मन-विरोधी संघर्ष की योग्यताओ को स्वीकार किया परतु इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्रीय समिति युगोस्लाविया की अधिकृत सरकार नही मानी जा सकती।

टीटो ने दो सैनिक मडल, एक लंदन तथा वाशिगटन और दूसरा मास्को भेजने का निश्चय किया।

जब १९४३ के अंत में चर्चिल को लगा कि अनियमित सेना युगोस्लाविया की मूल सेना थी, कि द्राजा मिहेलोवित्स से कोई आशा नहीं की जा सकती, कि वास्तव में युद्ध के पश्चात् युगोस्लाविया का एक नया रूप होगा तो उसने अपना रवैया बदल लिया और अनियमित सेना के सर्वोच्च कार्यालय से निकट सबध स्थापित करने लगा। इसके अलावा चर्चिल ने १९४४ के प्रारंभ में द्राजा मिहेलोवित्स को भविष्य मे किसी प्रकार की सैनिक सहायता नहीं देने का निश्चय किया।

सर्वोच्च कार्यालय ने भी मिलोवान द्यीलास के नेतृत्व में एक मंडल सोवियत संघ भेजा। वह वहा अधिकाश अप्रैल और मई सन् १९४४ में रहा और लौटते समय ठोस प्रभाव लेकर लौटा। स्तालिन ने उसे राष्ट्रीय समिति को युगोस्लाविया की अधिकृत सरकार मानने के संबंध में कोई वचन नहीं दिया।

कुछ ही समय पश्चात् अप्रैल के अंत में अनेक सोवियत हवाई जहाज युगोस्लाविया आये और सामान डाल कर युकरायन के हवाई मैदान को लौट गये। सोवियत सरकार भी बारी में दस सोवियत के माल ढोने वाले हवाई जहाज भेजने के हमारे सुझाव से सहमत थी जिससे सामान युगोस्लाविया पहुंचाया जा सके।

स्तालिन ने टीटो और केन्द्रीय समिति के अन्य सदस्यो की सुरक्षा के सबध में चिता प्रकट की। उसने मुझे चेतावनी दी कि हमें हत्याओ और इसी प्रकार के अन्य बाहर आयोजित किये उत्तेजनापूर्ण कामो से सावधान रहने की आवश्यकता है।

सर्वोच्च सोवियत की कार्यकारिणी ने मुझे टीटो को उपहार स्वरूप देने के लिये एक सोने की तलवार दी।

प्रकरण चौदह

"उस समय मैं जीवन में पहली बार स्तालिन से मिला........"

सन् १९४४ की ग्रीष्म ऋतु निकट थी। दूसरा मोर्चा खोलने की बात अभी चल रही थी। पूर्व में हिटलर की सेना तेजी से पीछे हट रही थी। इटली में मित्र राष्ट्रों की सेना ने कैसीनो पर अधिकार कर लिया था और रोम मे घुसने की तैयारी थी। युगोस्लाविया की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना भी बहुत बढ़ आई थी। जर्मन हाईकमांड ने एक बार फिर युगोस्लाविया मे बढती हुई संघर्ष की तैयारियों को नष्ट करने का विचार किया। पश्चिमी बोसनिया के द्रवार नगर में स्थित उच्च कार्यालय पर आक्रमण करने की तैयारी की गई।

टीटो द्रवार के ऊपरी भाग में एक गुफा के मुंह पर लकड़ी के मकान में रहते थे। २५ मई को पौ फटते ही जर्मनो ने नगर और उसके आसपास भारी हवाई आक्रमण कर दिया। उस समय वहां अनियमित सेना का एक भी जत्था नही था। जर्मन समस्त रोक-थाम को तोड़ कर नगर मे घुस आये। वे धीरे-धीरे गुफा की ओर बढे। प्रातःकाल टीटो और कार्देय ने अपने निकल भागने की व्यवस्था की। गुफा के भीतर जाने से उन्हे पता लगा कि छत में से पानी टपक रहा था। एक रास्ते के सहारे उस तंग सुरंग से उन्होंने बड़ी कठिनाई से अपना मार्ग बनाया और गुफा के ऊपर एक ऊँची समतल भूमि पर निकल आये। वहां जाकर देखा तो अलेक्जेन्डर रांकोवित्स तथा अनियमित सेना के कुछ सैनिक जर्मनो को रोके हुए थे। अंत में आक्रमण असफल रहा। सर्वोच्च कार्यालय ने अपनी प्राचीन वस्तुओं का संग्रह तथा रेडियो ट्रांसमीटर बचा लिये थे।

द्रवार में आक्रमण के दिनों में नागरिको को बड़ी हानि भारी उठानी पड़ी।

टीटो तथा युगोस्लाविया के संघर्ष के विषय में हिटलर के विश्वासपात्र क्या सोचते थे यह हिमलर के वक्तव्य से भली प्रकार ज्ञात हो जाता है। हिमलर के विचार इस प्रकार हैं :—

"यदि मै दृढ़ता का दूसरा उदाहरण दूं, तो वह मार्शल टीटो का होगा।

सचमुच मुझे कहना पडेगा है कि वह एक पुराना साम्यवादी है, यह हर योसिप ब्रोज सदा एक-सा रहने वाला व्यक्ति है । दुर्भाग्यवश वह हमारा विपक्षी है। वास्तव में वह उसे मिली मार्शल की पदवी के योग्य है । यदि हमने उसे पकड़ लिया तो उसका काम तमाम ही कर देंगे । आप विश्वास रखें । वह हमारा शत्रु है। काश जर्मनी में दर्जन भर टीटो होते जो नेतृत्व करते और अपने निश्चय के पक्के और साहसी होते कि कठिनाइयों के सामने कभी नहीं झुकते ।"

अनियमित सेना के सर्वोच्च कार्यालय पर १९४४ में हुए आक्रमण ने बडा ध्यान आकर्षित किया । द्रवार का आक्रमण सातवां था, जो केवल पश्चिमी बोसनिया में ही बढा । लड़ाई लगभग दस दिन चली । जर्मनो ने भारी आक्रमण किये और उन्हे वैसा ही उत्तर मिला । इस आक्रमण में पहली बार मित्रराष्ट्रो के हवाई जहाजो ने सहायता दी, जो भारी संख्या में आये और जिन्होने जर्मनी के हवाई हमलो को रोकने में बडी सहायता दी । इस आक्रमण में टीटो और मित्र राष्ट्रो के सैनिक मंडलो के नेतृत्व में मुख्य कार्यालय ने हमारे जत्थो का साथ दिया। टीटो ने राष्ट्रीय समिति और सर्वोच्च कार्यालय के लिये अधिक सुरक्षित स्थान ढूंढने का निश्चय किया, जहां वे सरलतापूर्वक काम कर सके । कुछ दिनो पश्चात् टीटो को ब्रिटिश हवाई जहाज द्वारा युगोस्लाविया के विस टापू में ले जाया गया जिसे अनियमित सैनिक जत्थो ने सितम्बर १९४३ में मुक्त किया था । बाद में राष्ट्रीय समिति और सर्वोच्च कार्यालय भी यहीं आ गये । यहा से युगोस्लाविया के बाहर और भीतर दोनो ही से भली प्रकार सपर्क रखा जा सकता था ।

सर्वोच्च कार्यालय उस टापू के बीच एक पहाड़ी पर स्थित हो गया । इस चट्टान में कई गुफायें थीं जिन्हे कार्यालयो के रूप में काम में लिया गया और इस के आगे तम्बुओ में सोने का प्रबन्ध किया गया ।

राष्ट्रीय समिति को युगोस्लाविया की अधिकृत सरकार मानने संबंधी राजनैतिक कार्यवाही जारी रही ।

मास्को स्थित राजसी युगोस्लाविया सरकार के राजदूत स्तानोये सिमित्स ने अपना त्यागपत्र दे दिया और शीघ्र ही राजसी सरकार पर आक्षेप करते हुए एक पत्र लिख डाला जो 'प्रवदा' में प्रकाशित भी हुआ । सोवियत संघ में हमारे लोग राष्ट्रीय समिति को मान्यता दिलवाने की कार्यवाही में लगे रहे ।

घटनायें तेजी से घटती रही । बादशाह पीटर और उसका प्रधान मंत्री बोजिदार पुरित्स लंदन बुलाये गये । राजसी सरकार को पुनर्जीवित करने के लिये विचार विमर्ष किया गया । डॉ० ईवान सुबासित्स को नया प्रधानमंत्री

बनाया गया जो क्रोशिया के एक राजनीतिज्ञ थे और सन् १९४२ तक क्रोशिया के राज्यपाल रह चुके थे।

टीटो को चर्चिल ने तार भेजा कि बादशाह पीटर का प्रतिनिधि डॉ० ईवान सुबासित्स विस आयेगा। यह बात उल्लेखनीय है कि सोवियत सरकार ने इस योजना की स्वीकृति अपने युगोस्लाविया स्थित सैनिक मंडल को दे दी थी। उस समय युगोस्लाविया में यह सुना जाता था कि ब्रिटेन और रूस में एक समझौता हो गया था जिसके द्वारा युगोस्लाविया को विभिन्न प्रभावक्षेत्रों मे बांटा जाने वाला था।

डॉ० ईवान सुबासित्स जून १९४४ में विस आया था।

टीटो की गुफा मे राष्ट्रीय समिति के सब सदस्यों की पहली बैठक हुई। उन्होंने सुबासित्स के प्रस्ताव को रद्द कर दिया। इस बैठक में सुबासित्स ने अन्त में हमारे सब सुधार मान लिये। राजतंत्र के विषय में बड़ी कठिनाई जान पड़ी।

अंत में एक समझौता हो गया जिसके द्वारा सुबासित्स ने राजसी सरकार की ओर से राष्ट्रीय समिति को देश की प्रमुख सत्ता स्वीकार कर लिया और टीटो के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना को देश की मुख्य सेना। साथ ही जर्मनों को खुले अथवा गुप्त रूप से सहायता देने वालों की निन्दा की गई और लंदन में नई सरकार बनाकर उस में प्रजातांत्रिक अंश सम्मिलित करना तय किया। राष्ट्रीय समिति ने अपनी ओर से यह वचन दिया कि वह युद्ध के दौरान में राजतंत्र का प्रश्न नहीं उठायेगी क्योकि दोनो पक्षों ने यह स्वीकार किया था कि यह प्रश्न स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् जनता द्वारा ही तय किया जायगा। लंदन मे बनाये गये नये मंत्री-मंडल में द्राजा मिहेलोवित्स को नही लिया गया— अब एक मिली-जुली सरकार बनाने का प्रश्न राष्ट्रीय समिति के सामने था।

रोम से टीटो नेपल्स आये जहां वे १२ अगस्त को विन्स्टन चर्चिल से मिले। यह भेंट उस भवन में हुई जो पहले विक्टोरिया विला के नाम से प्रसिद्ध था। टीटो ने चर्चिल से काफी बाते की, पहले एक ही दुभाषिये की उपस्थिति मे परन्तु बाद मे युगोस्लाविया की ओर से जुयोवित्स, व्लादीमीर वेलेबिता, सुबासित्स, सावा कोसानोवित्स तथा अन्य लोग आ गये थे। यह बातचीत अनेक समस्याओ पर हुई। टीटो चर्चिल की शक्ति और स्पष्टता से प्रभावित हुए।

बातचीत मुख्य रूप से बादशाह पीटर के विषय पर केन्द्रित रही। चर्चिल ने टीटो से पूछा कि वे बादशाह से मिलना पसंद करेगे या नहीं। टीटो ने इस पर 'ए वी. एन ओ जे' के निर्णय की याद दिलाई जिसमें बादशाह पीटर के लौटने पर प्रतिबन्ध था, क्योंकि वह युद्ध के समय अपने व्यवहार

द्वारा नापसंद किया जाता था। टीटो ने इस बात पर जोर दिया कि अब कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिये जिससे शत्रु के विरुद्ध संघर्ष में किसी प्रकार की दुर्बलता आ जाय।

चर्चिल ने बातचीत करते समय अचानक टीटो से यह पूछा कि कहीं हम युगोस्लाविया में सोवियत के ढग का समाजवाद तो स्थापित नहीं करना चाहते थे।

टीटो ने उत्तर दिया कि सोवियत का अनुभव लाभदायक तो रहेगा परंतु, हमे तो अपनी परिस्थितियो को ध्यान में रखना चाहिये।

"मार्शल टीटो केवल एक कुशल सैनिक ही नहीं प्रत्युत एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी हैं जिन्होनु युगोस्लाविया के लोगो में एकता स्थापित करने के लिये बड़ा प्रयत्न किया," चर्चिल ने टीटो के सम्मान मे दिये गए महान् भोज में कहा, "यह हमारी इच्छा है कि एक शक्तिशाली और संयुक्त युगोस्लाविया का निर्माण हो और मुझे विश्वास है कि हम इस लक्ष्य की ओर उत्तम मार्ग से बढ़ रहे है।"

टीटो फिर विस लौट आये। रूमानिया में सोवियत का भारी आक्रमण प्रारम्भ हो गया था। लाल सेना के दस्तो ने जर्मनो और रूमानियो को शीघ्र भगा दिया था। अब वे डेन्यूब की ओर बढ़ रहे थे। वह दिन भी निकट था जब वे युगोस्लाविया की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना से मिल जाने वाले थे। यह मिलन ६ सितम्बर को हुआ। टीटो ने इस दिन एक विशेष संदेश दिया।

इस अवसर पर इल्या इह्‌रेनबर्ग ने "टुगेंदर" नामक एक लेख लिखा जो सोवियत के समाचार पत्रो में भी प्रकाशित हुआ और मास्को रेडियो से भी प्रसारित किया गया। इस में उसने कहा :

"इस गौरवपूर्ण अवसर पर सोवियत जनता तथा सेना नवीन युगोस्लाविया की वीरता पर बड़े हर्ष का अनुभव कर दी हैं। हम लोग संकट में साथ थे—हर्ष में भी साथ रहेगे।"

सितम्बर का अन्त होने वाला था। टीटो ने सोवियत संघ जाकर लाल सेना और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना की सैनिक कार्यवाही में ताल-मेल स्थापित करने के विषय पर सोवियत प्रतिनिधियो से बातचीत करने का निश्चय किया।

जैसे ही वे २१ सितम्बर को रात के ग्यारह बजे हवाई जहाज पर चढ़े उनका कुत्ता, टाइगर, चुप नहीं रह सका। वह अपने मालिक के साथ-साथ ही रहता था। इसलिये टीटो को उसे भी हवाई जहाज पर बिठाना पड़ा। जब वह भौंकता तो उसके सिर पर बोरी ढक दी जाती थी।

इस प्रकार टीटो पांच वर्ष पश्चात् फिर मास्को आये, एक गुप्त कार्य-कर्त्ता के नाते नहीं जिसे पुलिस से छिपना पड़ता और न ही वे कोई जाली-निकासी-पत्र लेकर आये थे बल्कि वे अपने पूरे नाम सहित युगोस्लाविया के मार्शल और राष्ट्रीय समिति के प्रधान के रूप में आये थे।

टीटो ने १९४४ की अपनी मास्को यात्रा का इस प्रकार वर्णन किया है :—

"इस समय अपने जीवन मे प्रथम बार स्तालिन से मिला, और उससे बातचीत की। दो-तीन बार उसके क्रेमलिन के कार्यालय में भेंट हुई और दो बार उसके घर पर, जहाँ मैंने उसके साथ खाना भी खाया था। पहली बात जिस पर हमने विचार-विमर्ष किया वह हमारी दोनों सेनाओ की संयुक्त कार्यवाही के विषय में थी। उसके क्रेमलिन कार्यालय में मैंने उससे बैलग्रेड की मुक्ति के समय हमारे दस्तों की सहायता के लिये अपने टैंक भेजने को कहा था।

"हम इस समझौते पर भी पहुँचे कि हमें अपनी मिली-जुली सेनाओं से युगोस्लाविया का कितना भाग स्वतन्त्र करना है; उनके और हमारे दस्ते कहाँ तक जा सकते हैं और अंत में उनकी सेना कब तक हमारे देश में रह सकती है आदि। हम इस बात पर सहमत हो गये कि वे हमें बैलग्रेड को स्वतन्त्र कराने के लिये अपने टैंक का एक दस्ता देंगे और उसके पश्चात् उनकी सेना युगोस्लाविया से हटा ली जायगी।

"तास मे प्रकाशित २८ सितम्बर १९४४ की एक विज्ञप्ति के अनुसार :—

"'सोवियत कमांडं ने युगोस्लाविया की यह शर्त स्वीकार कर ली है कि युगोस्लाविया मे जहाँ-जहाँ लाल सेना के दस्ते रहें वहाँ-वहाँ युगोस्लाविया की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता समिति का नागरिक शासन चलना चाहिये।'

"वैसे यह प्रथम भेंट बड़ी शान्तिपूर्ण थी। इसका मुख्य कारण वह तार था जो मैंने युद्ध के दिनों में भेजा था। विशेष रूप से वह जो इन शब्दो से प्रारंभ होता था, 'यदि आप हमारी सहायता नहीं कर सकते तो हमारे बाधक भी मत बनिये। उसकी पुष्टि दिमित्रोव ने तब की थी जब मै उससे स्तालिन की पहली भेंट के तुरंत पश्चात् मिला था।

"जैसा मै बता चुका हूँ मेरी पहली भेंट में स्तालिन से खिंचाव उत्पन्न हो गया था। हर प्रश्न पर हम लोगो के विचारों में बड़ी मतभिन्नता थी। मैंने देखा कि स्तालिन को यह अच्छा नही लगता था कि कोई व्यक्ति उसकी बात का विरोध करे।

"बातचीत तनातनी के वातावरण में हुई थी। स्तालिन ने बादशाह को फिर से राज्य देने की बात पर जोर दिया था। मुझे इस पर बड़ा क्रोध आया

कि वह हमें ऐसा काम करने की सलाह दे रहा था। मैंने अपने आपको संभालते हुए उससे कह दिया कि यह असंभव था। लोग इसके विरुद्ध विद्रोह करेंगे कि युगोस्लाविया का बादशाह देशद्रोह का प्रतीक था क्योंकि वह अपनी जनता को ऐसे सकटमय समय में छोड कर भागा था, जब वे एक सघर्ष में फसे हुए थे। कारा-जियोर्जवित्स वश के भ्रष्टाचार और आतक के कारण जनता उसे घृणा की दृष्टि से देखती थी।

"स्तालिन मौन था और फिर धीरे से बोला :

" 'तुम्हे उसे सदा के लिये राज्य शासन नहीं सौंपना है। तुम उसे अस्थाई रूप में वापिस ले लो और अवसर पाकर चुपके से उसकी पीठ में छुरा भोंक दो।'

"कुछ ठहर कर स्तालिन ने पूछा, 'क्यो वाल्टर यदि ब्रिटिश सेना जबरदस्ती तुम्हारी भूमि पर उतर आये तो तुम क्या करोगे ?'

" 'हम उसका डटकर सामना करेंगे।'

"स्तालिन चुप था क्योंकि उसे यह उत्तर पसंद नहीं आया। कहीं वह उस समय उस व्यवस्था पर तो नहीं सोच रहा था जो उसने प्रभाव क्षेत्र के आधार पर युगोस्लाविया के विभाजन के लिये की थी।

"स्तालिन ने मुझे अपने घर पर बुलाया। नौकर सफेद पोषाक पहन कर ढकी हुई तश्तरियो में खाना ले आये और हमने अपनी इच्छा व आवश्यकतानुसार लिया। वहाँ रात में देर तक खाते पीते रहे। मुझे शराब पीने की आदत नहीं थी इसलिये मेरी तबियत खराब होने लगी।

कई दिन पश्चात् टीटो रूमानिया होकर युगोस्लाविया लौटे। बैलग्रेड की लड़ाई प्रारंभ हो चुकी थी। यह पाच दिन तक चली और अंत में बैलग्रेड स्वतत्र हो गया। रूसियो तथा हम लोगो को बडी हानि उठानी पडी। अभी बैलग्रेड की लडाई की तैयारी हो ही रही थी कि मैसीडोनिया को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेना के दस्तो ने पहली और चौथी बलगारिया की सेनाओ की सहायता से मैसीडोनिया को जर्मनो के पंजे से निकालने के लिए लड़ाई आरंभ कर दी।

तब रूजवेल्ट, स्तालिन और चर्चिल की भेंट सोवियत संघ के याल्टा में हुई। राष्ट्रीय समिति की इस बैठक की सूचना नही दी गई। १२ फरवरी १९४५ को बैलग्रेड स्थित ब्रिटिश और सोवियत सैनिक मडलो ने राष्ट्रीय समिति को सूचना दी कि दस फरवरी को तीनो सरकारो के प्रधानो ने याल्टा सम्मेलन की बैठक में युगोस्लाविया के प्रश्न पर विचार विमर्ष किया था और वे मार्शल टीटो को निम्न सुझाव देने के लिए सहमत हो गये थे :—

"(अ) कि टीटो-सुबासित्स समझौता शीघ्र लागू किया जाय और इसके

आधार पर एक नवीन सरकार का निर्माण हो:

"(ब) नवीन सरकार को स्थापित होने पर यह घोषणा करनी चाहिये :—

(१) कि 'ए वी.एन.ओ.जे' को युगोस्लाविया की पिछली राष्ट्रीय धारासभा के सदस्यों को भी मिला लेना चाहिये जो शत्रु को सहायता देने से सहमत नही हुए थे, इस प्रकार यह एक अंतरिम धारासभा बन जायगी और

(२) यह कि 'ए.वी एन.ओ.जे' द्वारा पास किये हुए कानूनों को विधानसभा का समर्थन प्राप्त होना चाहिये ।"

इस निर्णय से युगोस्लाविया के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन के समर्थकों में बड़ा क्रोध फैल गया। वे इस बात से विशेष रूप से क्रोधित थे कि 'ए वी एन ओ जे' को १९३८ की धारासभा के सदस्य सम्मिलित करने थे जो एक धुरी राष्ट्रों के प्रशंसक , मिलान स्तोजादिनोवित्स के शासन काल मे निर्वाचित हुए थे। फिर भी बहुत वाद-विवाद के पश्चात् यह निर्णय मान लिया गया और लंबी बातचीत के परिणामस्वरूप एक संयुक्त सरकार का निर्माण हुआ।

राष्ट्रीय समिति ने इसमें यह शर्त रखी कि नई सरकार को बादशाह के प्रति नही बल्कि राज्याधिकारी-शासन के प्रति उत्तरदायी होना चाहिये और वह शासन राष्ट्रीय समिति की अनुमति के बिना नियुक्त नही किया जाना चाहिये। बादशाह ने इन शर्तों को स्वीकार कर लिया। राज्याधिकारी-शासन में वे लोग आगये जो उदारता के लिये प्रसिद्ध थे। राष्ट्रीय समिति को यह निर्णय इसलिये स्वीकार करना पड़ा कि देश को बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। जर्मनों से अब भी विकट संग्राम करना था।

फरवरी १९४५ के अंत में फील्ड मार्शल अलेक्जेन्डर, जो भू-मध्य सागर का कमांडर था, सरकारी दौरे पर बैलग्रेड आया। वह टीटो से कई बार मिला जिसमें मित्रराष्ट्रो की तथा युगोस्लाविया की सेनाओं में ताल-मेल अलग करने की योजना बनाई गई। यह समझौता हुआ कि इटली स्थित मित्रराष्ट्रों की सेना को, युगोस्लाविया की चौथी सेना को, जो पश्चिम की ओर बढ़ रही थी, सहायता देनी चाहिये।

हिटलर की जर्मनी के अंतिम पतन के भी दिन आ रहे थे। मित्रराष्ट्रों की सेनायें राइन को पार कर जर्मनी के अंदर तक घुस चुकी थीं। लाल सेना भी बर्लिन के द्वारों पर लड़ रही थी।

युगोस्लाविया की सेना के देश को अंतिम रूप से स्वतन्त्र कराने के आक्रमण से कुछ ही पूर्व युगोस्लाविया मे सात जर्मन सेना के दस्ते थे।

उस समय युगोस्लाविया की सेना में आठ लाख सैनिक थे। उसका अंतिम स्वतन्त्रता संग्राम २० मार्च १९४५ को आरंभ हुआ।

युगोस्लाविया के समस्त प्रदेश २० मार्च से १५ मई तक स्वतन्त्र हो गये थे। पूरे युद्ध में युगोस्लाविया के १,७००,००० व्यक्ति मर गये थे, युद्ध-भूमि में, कैम्पो में अथवा जर्मन बंदी-गृहो में। प्रत्येक नवां युगोस्लाविया का निवासी युद्ध में मरा था। सामान की हानि की तो कोई थाह ही नहीं थी। ८२०,००० से भी अधिक मकान नष्ट कर दिये गये थे या जला दिये गये थे। बीस प्रतिशत रेल की पटरिया बेकार कर दी गयी थीं। दो तिहाई पशु लूट लिये गये थे। लगभग सब बड़े औद्योगिक कारखानो को क्षति पहुँचाई गई थी।

मैं टीटो से पहली बार सन् १९४५ के सितम्बर में सानफ्रासिस्को से लौट कर मिला था। हमने युद्ध में अपनी हानि के विषय में बातचीत की। टीटो ने मेरी बात काटते हुए कहा,

"मकान दुबारा बना दिये जायेंगे, रेल की पटरियां फिर से बिछा दी जायंगी, परन्तु हम सत्रह लाख व्यक्तियो को फिर से जीवित नहीं कर सकते। इनमें से प्रत्येक का अपना जीवन, अपनी आशायें, अपनी कठिनाइयां, और अपनी खुशियां थी। हमने अपनी स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए इतना बड़ा मूल्य चुकाया है।"

तीसरा भाग

स्तालिन से झगड़ा

(१९४५–१९४८)

प्रकरण पन्द्रह

"अब बीच में रुकना हमारे लिये अत्यन्त हानिकारक होगा......"

मैंने सन् १९४५ में अप्रैल से अगस्त तक टीटो को नहीं देखा था, क्योंकि मैं बाहर गया था। उनमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ सिवा इसके कि वे युद्ध के समय से अब कुछ अधिक भारी हो गये थे।

मैंने बातचीत के सिलसिले में उनसे पूछा, कि मई में युद्ध समाप्त होते ही उनके मस्तिष्क में कौन-सा विचार सबसे पहले आया? उन्होंने उत्तर दिया, "युद्ध समाप्त हो गया अब समय है कि जो कुछ नष्ट हो चुका है उसे फिर से प्राप्त किया जाय पर उसके साथ-साथ कुछ नव-निर्माण भी किया जाय।

"अब बीच में रुकना हमारे लिये अत्यन्त हानिकारक होगा। हमने युद्ध में जो कुछ प्राप्त किया वह केवल प्रारंभ है। अब हमारे सामने जो काम है वे लगभग कल्पनातीत है जिनमें बहुत कठिनाइयां है और आप स्वयं देख सकते है कि उनसे संघर्ष करने के साधन हमारे पास क्या है? हमारे पास तो अपनी प्रबल आत्मशक्ति, उच्च नैतिकता और हमारा बल है।"

दो मास के समय में ही यातायात के लिये पटरियां बिछा दी गई थीं। सैकड़ों हजारों आदमी दिन-रात अपनी इच्छा से इसके लिये काम करते रहे जब तक कि हमारे देश के दो मुख्य नगरों के बीच पहली रेलगाड़ी नहीं चलने लगी। हमारी जनता में ऐसे गुण है जो इससे भी बड़ी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने में सहायक होंगे और हमारे देश की भावी उन्नति की सुदृढ़ नींव डालेंगे।"

सन् १९४५ में टीटो के ऐसे विचार थे। वह निस्संदेह बड़ा संकटपूर्ण समय था। साबुन की एक टिकिया, एक साधारण सुई और धागे की एक रील प्रत्येक गृहिणी के लिये स्वप्न बन गई थी।

युद्ध के पश्चात् युगोस्लाविया के सामने केवल पुनर्निवास की समस्या ही नही थी। उन लक्ष्यों की प्राप्ति अत्यन्त आवश्यक थी जिनके लिये जनता लड़ी थी। युगोस्लाविया के समस्त लोगों में समानता लाना तथा भ्रातृ-भाव और एकता को दृढ़ करना आवश्यक था। यह भी आवश्यक था कि उन व्यक्तियों

को दंड दिया जाय जिन्होंने आपसी झगड़े उत्पन्न किये थे तथा विभिन्न जातियों और धर्मों में कटुता भर दी थी, जिससे हम भविष्य में उन खतरों से बच सके जिससे हमारे देश की सुरक्षा और निवासियों को हानि पहुँचे। दूसरी ओर उन लोगो को क्षमा करना आवश्यक था जो अपने स्वामियों के हाथ की कठपुतली बने हुए थे।

सब अपराधियो को दंड देना भी आवश्यक था, विशेष रूप से सबसे बड़े चापलूस द्राजा मिहेलोवित्स को दंड देना था। अब एक काम यह था कि मिहेलोवित्स को जीवित पकड़ कर उस पर मुकदमा चलाया जाय।

मई १९४५ से मार्च १९४६ तक, अनेक बार, पीछा करने वाले द्राजा मिहेलोवित्स को मार डालते, परन्तु उन्हें तो उसे जीवित पकड़ने की आज्ञा थी।

मिहेलोवित्स को चारो ओर से घेरा जाने लगा। जब वह अपने आपको नहीं बचा सका तो एक दिन शाम को पकड़ा गया। वह बड़ा गंदा था और भूखा मर रहा था।

जिस गाँव में वह पकड़ा गया वहाँ से कार में बेलग्रेड लाया गया। वह जिस दिन पकड़ा गया अलेक्जेन्डर रांकोवित्स ने टीटो को, जो अपने पोलेंड के मार्ग में थे, कहा कि "योजना सफल हो गयी।"

जब टीटो वारसा आये तो उन्होने स्तालिन से टेलीफोन द्वारा कुछ राजनैतिक प्रश्नो पर बातचीत की। उन्होने उसे बताया कि मिहेलोवित्स पकड़ लिया गया है। स्तालिन ने इस समाचार पर संतोष प्रकट किया, परन्तु उसने तुरंत युगोस्लाविया में एन० के० वी० डी० (N.K.V.D.) के प्रतिनिधियो से यह स्पष्टीकरण चाहा।

मिहेलोवित्स का मुकद्दमा जुलाई १९४६ में प्रारंभ हुआ। उसने अपने सब अपराध स्वीकार नही किये। उसने चतुराई से अपना बचाव नहीं किया।

अपने अपराधो के कारण द्राजा मिहेलोवित्स को मृत्यु-दंड दिया गया। जब उसने यह सुना तो क्षमा-याचना की कार्यवाही की जो अस्वीकार कर दी गई।

युद्ध के पश्चात् यह आवश्यक था कि कुछ ऐसे उपाय किये जायें जिनकी प्रार्थना जनता ने युद्ध के दिनो में की थी और जो हमारे संघर्ष के मूल आधार थे। यह भी आवश्यक था कि हम अपने देश को उसके वर्तमान अर्द्ध-उपनिवेश-स्तर से ऊपर उठाते और उसके विशाल प्राकृतिक साधनो को बढ़ाते। योरुप में कोई भी ऐसा देश नहीं है जो युगोस्लाविया के आकार का होते हुए इतने प्राकृतिक साधनो से पूर्ण हो। इसके पास सब प्रकार का कच्चा माल है, यद्यपि इसकी

पूरी पड़ताल नहीं की गई है।

देश के उद्योगीकरण की योजनायें बनाई गईं जिससे यह कीचड़ से भरी हुई सड़कों वाला एक पिछड़ा हुआ देश नहीं रह जाय।

युगोस्लाविया में विदेशी पूंजी ने मुख्य स्थान प्राप्त कर लिया था। उदाहरणार्थ ७७·९ प्रतिशत पूंजी विदेशियों की थी। विदेशी पूंजी को उद्योग और बैंकों के मुख्य क्षेत्रों में प्रभुत्व प्राप्त था, इसका परिणाम यह निकला कि हमारा आर्थिक जीवन कहीं तो विकसित हुआ और कही दब गया, जिससे हमारे देश के निर्माण कार्यों में एक असमानता सी आ गई।

अब यह आवश्यक था कि हमारी जनसंख्या के विभिन्न भागों के लोगों के जीवन की इस असामनता को दूर किया जाय क्योंकि एक ओर बड़ी सम्पन्नता थी तो दूसरी ओर बड़ी निर्धनता।

भूमि का दुबारा वितरण किया गया। बड़ी-बड़ी रियासतें किसानों में बाँट दी गयी। भूमि के वितरण के पश्चात् युगोस्लाविया में कोई भी ६० एकड़ से अधिक भूमि नहीं रख सकता था।

ये काम सरलता से पूरे हो गये क्योंकि युद्ध के समय जनता ने इन कार्यों के पक्ष में मत दिया था।

सन् १९४५ की शरद् ऋतु में विधान-सभा के लिए चुनाव हुए और बहुमत संघ के निर्माण के पक्ष में था। वह राजतंत्र के स्थान पर गणतंत्र चाहता था। साथ ही उसकी इच्छा थी कि युद्ध के समय प्रारंभ किये गये सुधार क़ानून का रूप धारण कर लें। इन कार्यों को पूरा करने के लिए यह आवश्यक था कि बाहर के लोगों से देश की रक्षा की जाय।

कुछ पश्चिमी समाचार-पत्रों ने तो युगोस्लाविया के लिये बुरी-से-बुरी मनघड़ंत बातें लिखी। उसने युगोस्लाविया को रूस का सबसे हठीला पिछलग्गू देश बताया और टीटो के युगोस्लाविया का नहीं बल्कि रूस का एक जनरल बताया। यह उस समय की बात है जब कि युगोस्लाविया रूसी सरकार द्वारा उसके दबाने के प्रयत्न के विरुद्ध संघर्ष में फंसा हुआ था।

युद्ध के पहले ही दिन से सोवियत संघ से संबंध बिगड़ते ही जा रहे थे। मास्को कोई ऐसा आन्दोलन पसंद नहीं करता था जो स्वतन्त्र रूप से किया जाय या जो मुख्य रूप से अपने ही देश और जनता के हितों को सामने रखता हो। रूस तो ऐसे आन्दोलन के पक्ष में था कि जो उसका अन्धानुकरण करे और उसकी विदेश नीति का हथियार बने, उस अन्यायपूर्ण विदेश नीति का जिसे छोटे देशों के हितों की कोई चिन्ता नहीं थी और जो बड़ी शक्तियों को बढ़ाने के हितों में ही दिल-

चस्पी रखता था। युगोस्लाविया इसे पसंद नहीं करता था। इसलिये युगो-स्लाविया के नेताओं और सोवियत के उच्च नेताओं में, जिनके प्रधान स्तालिन थे, युद्ध के पश्चात् ही नहीं बल्कि युद्ध के दिनों में भी संघर्ष रहा।

युद्ध की समाप्ति के कुछ मास तक हमने सोवियत संघ के अपने झगडो और मतभेदो को नेपथ्य में डाल देना आवश्यक समझा, क्योकि उस समय हम पर पश्चिमी देशो का बोझ बहुत बढ़ गया था और इन लोगो की ओर से बड़ा भय हो गया था।

सन् १९४८ तक युगोस्लाविया के संबध पश्चिमी देशो से इस प्रकार थे।

प्रकरण सोलह

"संघर्ष का कारण......युगोस्लाविया के प्रति सोवियत संघ की आक्रमणकारी प्रवृत्तियाँ हैं...."

यह हम देख चुके है कि युद्ध के पश्चात् कुछ वर्षों तक युगोस्लाविया को कुछ बड़े पश्चिमी देशों से संबंध रखने की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। उस समय युगोस्लाविया और सोवियत संघ के बीच बड़ी मत-भिन्नता थी। उसे समझना बड़ा कठिन था, युगोस्लाविया के बाहर के प्रेक्षकों के लिये ही नहीं बल्कि देश के लोगों के लिये भी। जैसा कि उन्हें वर्षों से सिखाया गया था कि वे सोवियत संघ को एक समाजवादी देश समझें, युगोस्लाविया के साम्यवादी पहले सोवियत संघ की वे अन्याय-पूर्ण और साम्राज्यवादी बातें नहीं जान सके, जिनसे यह स्पष्ट था कि सोवियत संघ युगोस्लाविया के लिये ऐसे काम कर रहा था, जो समाजवादी नीति के विरुद्ध थे।

किसी प्रकार १९४८ का खुला-संघर्ष कई वर्ष पूर्व प्रारंभ हो चुका था। इसके क्या कारण थे? ये वे प्रश्न है जिन्हें संसार के लोग अपने आपसे पूछते है। टीटो के विचार इस संबंध में इस प्रकार है:

"संघर्ष का कारण साधारण है। यह युगोस्लाविया के प्रति सोवियत-संघ की आक्रमणकारी प्रवृत्तियाँ है। मजदूरो और किसानों का पहला राज्य जिसने विश्व के समस्त श्रमजीवयों में उत्साह भर दिया था, जिसने भौतिक सफलता भी प्राप्त कर ली थी और अपना विकास करते-करते ऐसे स्थान पर रुक गया था जहां से आगे वह नहीं बढ़ सका। राज्य के पूंजीवाद से मजदूर वर्ग के मताधिकार को छीन लिया गया और अक्तूबर क्रांति से जो उन्हें लाभ हुआ था उसे भी समाप्त कर दिया गया। साथ ही सोवियत संघ की उन जातियों पर अत्याचार किया जो रूसी नही थी। यह बाहर के देशों में अपनी सीमाओं को बढ़ा रहा था और प्रभाव-क्षेत्र की नीति अपना रहा था। यह सब स्तालिन की १९३० के पश्चात् की नीति के परिणाम थे जब उसने मजदूरों के अधिकार बढ़ाने के स्थान पर राज्य-शासन पर भरोसा किया जो जनता का सेवक नहीं स्वामी था।

"पिछले पन्द्रह वर्षों में रूस में खुफिया पुलिस ने एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है जिसे एन. के. वी. डी. (N.K.V.D.) कहते हैं। स्तालिन स्वयं इस पुलिस का दास बन गया जिसे उसने अपनी सेवा के लिए बनाया था। यही कारण है कि सोवियत सघ में किसी को एक-दूसरे पर भरोसा नहीं है और प्रत्येक वस्तु सदेहजनक प्रतीत होती है।

"जिस मौलिक प्रश्न पर स्तालिन असफल रहा वह है समाजवाद में वैयक्तिक स्वतन्त्रता, क्योंकि बिना वैयक्तिक स्वतन्त्रता के समाजवाद नहीं हो सकता। इतिहास में कभी भी व्यक्ति को इतना राज्याधीन नहीं बनाया गया जितना आजकल सोवियत संघ में। इसने समाजवाद के साथ विश्वासघात किया है।

"हमारा और रूस का झगड़ा वास्तव में कब प्रारंभ हुआ ?

"जब हम उस इतिहास पर आज दृष्टिपात करते हैं तो यह ठीक-ठीक कह सकते हैं कि हमारी क्रान्ति के पहले दिन, सन् १९४१, से हमारे और रूस के बीच मत-भिन्नता की खाई पड़ गई थी। यह हमारी क्रान्ति के उद्देश्यों से संबंधित थी।

हम केवल जर्मनी और इटली वालो को ही नहीं मार भगाना चाहते थे परंतु ऐसे युगोस्लाविया का निर्माण चाहते थे जो किसी बड़े देश का पिछलग्गू नहीं हो। वह एक ऐसा युगोस्लाविया हो जो अपने अनगिनत प्राकृतिक-साधनो को भली प्रकार विकसित कर सके और जहा मनुष्य मनुष्य का शोषण नहीं करे।

"मेरा वक्तव्य और समिति के सब निर्णय मास्को भेज दिये गये जिनका उत्तर शीघ्र मिला। अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति ने हमें यह चेतावनी दी कि हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि एक फासिस्त-विरोधी युद्ध हो रहा था इसलिये सरकार का एक ढांचा तैयार करना भूल होगी। इसका अर्थ होता हमारी आत्म-हत्या। ज्यों-ज्यो युगोस्लाविया में क्रान्ति बढ़ती गई त्यो-त्यो मत-भिन्नता भी बढ़ती चली गई और जब युद्ध के पश्चात् युगोस्लाविया ने एक नवीन राष्ट्र का रूप धारण किया तो खुला संघर्ष प्रारभ हो गया। आरंभ में ये बाते इतनी स्पष्ट नहीं थीं जितनी कि अब।

क्राति के पहले वर्ष में अतर्राष्ट्रीय समिति ने हमारे सग्राम का सही रूप सोवियत के निवासियो के सामने नही रखा, यद्यपि इसे युगोस्लाविया के घटनाओ के सम्बन्ध में प्रतिदिन घोषित किया जाता था। दिसम्बर १९४१ तक द्राजा मिहेलोविल्य को सदैव युगोस्लाविया के आक्रमण विरोधी आन्दोलन का नेता माना जाता था। १९४२ की गर्मियो से उसपर पहला आक्रमण युगोस्लाविया रेडियो द्वारा करने की आज्ञा दी गयी, जब शत्रुओ के तीन आक्रमणो से निकल कर

हमने अपने आपको शक्तिशाली सिद्ध कर दिया था। इसके आलावा सोवियत सरकार ने हम लोगों को किसी भी प्रकार की सैनिक सहायता देने से इन्कार कर दिया था। इसके विपरीत वह निर्वासित राजसी सरकार से बातचीत कर रही थी।

"आज यह तर्कपूर्ण और प्रत्यक्ष है कि मास्को की प्रतिक्रिया इतनी तीव्र क्यों हुई? जब हमने १९४३ की समाप्ति के निकट अंतिम रूप से जायेस के 'ए. वी ओ. जे.' के दूसरे अधिवेशन में आज के नवीन युगोस्लाविया की नींव डाली, जब हमने निर्वासित युगोस्लाविया की सरकार को मानना बंद कर दिया, बादशाह पीटर के आने पर प्रतिबंध लगा दिया और 'युगोस्लाविया युगोस्लावों का' का सिद्धांत घोषित कर दिया तो हमने किसी भी बड़ी शक्ति से इस विषय में कोई सम्मति नहीं ली, क्योंकि यह युगोस्लाविया के निवासियों का प्रश्न था। मॉस्को पर इसकी प्रतिक्रिया बड़ी भयंकर हुई। उसने 'ए. वी एन. ओ. जे' के दूसरे अधिवेशन को सोवियत संघ की पीठ मे छुरा भोंकने के नाम से पुकारा।

"सोवियत संघ के युगोस्लाविया के प्रति सन् १८४४ के पश्चात् के रवैये से प्रकट होता है कि स्तालिन सबसे पहले हमारे देश के प्रमुख स्थान पर अधिकार करना चाहता था। वह युगोस्लाविया के आर्थिक ढाँचे पर अधिकार जमाना चाहता था, जिससे वह समस्त राज्य का नेता बन सके। अंत में जब स्तालिन ने देखा कि परिस्थिति उसके अनुकूल है तो वह खुले प्रहार के लिये तैयार हो गया।"

सोवियत संघ की कुछ ऐसी करतूतें थीं जो छिपाई नहीं जा सकती थी और जब लोगो ने उन्हें सुना तो उन पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। प्रथम सोवियत मंडलों के आते ही कुछ अधिकारियों ने युगोस्लाव निवासियों को सोवियत की खुफिया पुलिस में लगा दिया।

स्तालिन की यह इच्छा थी कि वह युगोस्लाविया के प्रत्येक महत्वपूर्ण स्थान पर अपने जासूसो का जाल बिछा दे, विशेष रूप से सेना मे, आर्थिक ढॉचे में, दल की व्यवस्था में, यातायात के साधनो में और यहॉ तक कि गृह मंत्रालय में भी। इसके लिये अनेक उपाय काम में लिये गये।

जनरल सोलदातोव ने, जो चौथी युगोस्लाविया की सेना के मुख्य कार्यालय में सोवियत सैनिक शिक्षक था, १९४७ की गर्मियों में उन व्यक्तियो को जो सोवियत के लिये जासूसी काम पर भर्ती किये गये थे, बताया कि,

"युगोस्लाविया एक छोटा देश है जो केवल सोवियत संघ की सहायता से ही जीवित रह सकता है। हम रूसियों ने ही, किसी और ने नहीं, इसे स्वतंत्र किया अतः हमको यह अधिकार प्राप्त है कि हम आम लोगों से वह काम करने के

लिये कहें जिसकी हमें आवश्यकता है।"

अन्य बातो पर भी झगड़ा हो रहा था। लाल सेना के कुछ दस्ते युद्ध की समाप्ति पर युगोस्लाविया के उत्तर में जर्मनो के विरुद्ध लड़ रहे थे। इसमें कोई सदेह नहीं कि वे वडी वीरता से लडे और उन्होंने वडी भारी क्षति सही। दूसरी ओर इन दस्तो के अनेक अधिकारियो तथा व्यक्तियो का व्यवहार, युगोस्लाविया में से जाते समय ऐसा नहीं था जैसा कि हमारे लोगोको लाल सेना के योद्धाओं से आशा थी। जहां कही से भी लाल सेना गुजरी लोगो ने उनके व्यवहार के प्रति असतोष प्रकट किया। अनेक स्त्रियो पर हमला किया गया, उनके साथ बलात्कार किया गया, यहां तक अनेक हत्याएं व डकैतियां भी हुईं। पहले हमने इन बातो को लोगो के सामने कभी-कभी घटने वाली घटनायें कह कर रखा, परंतु अपराधो की संख्या तो वढ़ती ही गई। इधर लाल सेना और सोवियत संघ की प्रतिष्ठा को वडा धक्का पहुँचा और हमारे राजनैतिक काम में भी बाधा पड़ी क्योकि युद्ध के समय ही नही बल्कि उससे पहले भी हम अपने लोगो को लाल सेना के विषय में बिल्कुल ही भिन्न बातें बताते थे। हमारे अधिकारियो को ये समाचार मिले कि लाल सेना के अधिकारियो और सैनिको ने युगोस्लाविया की सीमा में १,२१९ बलात्कार, ३२९ बलात्कारो के प्रयत्न, १११ बलात्कार सहित हत्या, २४८ बलात्कार और हत्या के प्रयत्न और १,२०४ हिंसात्मक लूटमार के काम किये।

सन् १९४८ में जब सघर्ष प्रकट रूप से होने लगा, स्तालिन ने जो पहला आरोप लगाया वह था हमारा लाल सेना के प्रति कृतघ्न होना और युद्ध में काम आये सैनिको को उन कामो के लिये दोष देकर उनकी स्मृतियो की मानहानि करना जो उन्होंने कभी किये ही नहीं थे। इससे क्या, इसके उत्तम साक्षी तो हमारे देश के उन भागो के निवासी हैं जिन्होंने सन् १९४४ और १९४५ में लाल सेना को वहां से निकलते देखा था। वे ठीक ही कहते हैं।

यह भी रूसियो के साथ सहमत नही होने और सघर्ष का कारण है। कारण और भी हैं जो विभिन्न विषयो से सबधित हैं। सोवियत नेताओ ने युगोस्लाविया से संबधित विदेश नीति के प्रश्नो की सूचना को रोकना अपना अधिकार समझा। इस प्रकार १९४६ के वसत में पेरिस में होने वाली मंत्रियो की परिषद् की बैठक में जब ट्रियस्ट के प्रश्न पर वाद-विवाद हो रहा था तो उस निर्णायक अधिवेशन से एक दिन पूर्व, रात भर मोलोतोव हमारे प्रतिनिधि एडवर्ड कार्देय से सीमा के विषय पर बातचीत करता रहा था। उसके एक भी शब्द से उसके विचार प्रकट नहीं हुए। दूसरे ही दिन उसने फ्रासीसी सीमा-प्रस्ताव के लिये अपनी सम्मति दे दी जो युगोस्लाविया के लिये अत्यंत अन्यायपूर्ण थी। हमारे देश में

सोवियत के सैनिक और नागरिक विशेषज्ञों के व्यवहार का तो कहना ही क्या ? उनका कर्त्तव्य अपने अनुभव से हमारी सहायता करना था पर उनका मार्ग बिलकुल भिन्न था । सर्वप्रथम तो उनका मुख्य उद्देश्य केवल जासूसी कामों के लिये हमारी दशाओं का भली प्रकार अध्ययन करना था । उन्होंने हमारे आदमियों को भ्रष्ट करने का प्रयत्न भी किया ।

सोवियत विशेषज्ञ अत्यंत कठोर थे । वे हमारे देश की स्थिति को समझे विना ही अपने यहाँ की बातें हमारे देश पर लादना चाहते थे । उन्होंने हमें और अधिक कठिनाई मे डालने के लिये ऐसा किया । सोवियत विशेषज्ञों ने सोचा कि हम लोगों को भी लाल सेना के अनुभव अपना लेने चाहियें। हमारी जनता कहती थी कि लाल सेना अनुभव की धनी थी, परंतु हमने द्वितीय युद्ध में जो अनुभव प्राप्त किया उस का अपमान करना भी अनुचित होगा कि हम अपना अनुभव छोड़ कर लाल सेना का अन्धानुकरण करें जिससे हमारी सेना के विकास को हानि पहुँचे ।

युगोस्लाविया के निवासियों के विचारों का कैसा निरादर होता था इस घटना से विदित होता है जो, मास्को में टीटो के साथ घटी थी । वे कहते हैं :

"सोवियत समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों ने उनके समाचारपत्रों के लिये मुझसे एक लेख लिखने के लिये कहा । मैंने लिख दिया । जब मैंने उसे प्रकाशित होने पर पढ़ा तो क्या मेरे अधिकांश विचार सम्पादकों की इच्छानुसार बदले हुए थे । मैं सोवियत-संघ के ऐसे ढंगों से परिचित तो था, परंतु सोवियत पत्रकार अपनी मर्यादा के अनुसार एक भिन्न देश के प्रधानमंत्री के लेख मे पविर्तन कर देंगे इसकी मुझे कल्पना तक नहीं थी ।"

बड़े-बड़े जिम्मेदार सोवियत प्रतिनिधियों के बातचीत के ढंग में युगोस्लाविया के लोगों के विषय में निन्दा का भाव पाया जाता था । यही नहीं, वे हमारी संस्कृति की भी बुराई करते क्योंकि वे हमारे इतिहास और जीवन के तरीकों से एकदम अनभिज्ञ थे ।

युगोस्लाविया में रूस के प्रतिनिधियों ने तो यहाँ तक कहा कि हम अपने रेडियो के कार्यक्रम में यथासंभव रूसी गीत सम्मिलित करा लें । उन्होंने हमारे नाटक घरों में रूसी नाटकों की संख्या बढाने का भी प्रस्ताव रखा । फिल्मो के लिये उन्होंने १९४६ में हम पर उनका ठेका लाद दिया । वे ढेर की ढेर फिल्में भेजते जिनमें हमारी कोई पसंद नहीं होती और हमें पश्चिम से मँगाई हुई फिल्मो की अपेक्षा कहीं चार-पांच गुना अधिक मूल्य डॉलर में चुकाना पडता ।

विभिन्न सोवियत प्रतिनिधि तो विशेष रूप से हमारे प्रेस पर, उसे प्रचार का एक शक्तिशाली साधन समझ कर टूट पड़े । दूसरी ओर जब हमने इसी आधार

पर सोवियत सरकार से अपने प्रेस में युगोस्लाविया के विषय में कुछ प्रकाशित करने के लिये कहा तो उन्होने टाल दिया। कुछ लेख तो वर्ष भर तक प्रकाशित होने की प्रतीक्षा करते रहे तब बन्द के बन्द ही लौटा दिये गये। ऐसा ही पुस्तको के साथ हुआ। हमने १,८५० सोवियत की पुस्तकें प्रकाशित कीं जबकि उन्होने हमारी केवल दो ही पुस्तकें छापीं।

इस प्रकार संघर्ष का एक मौलिक कारण यह भी था कि सोवियत सरकार का प्रयत्न हमारे देश का आर्थिक शोषण करना था। हम उन्हें ऐसा नहीं करने दे सकते थे नहीं तो जनता हमसे घृणा करने लगती।

आर्थिक दास बनाना तो पूर्वी-योरुपीय देशो के लिये सोवियत की योजना का एक भाग मात्र था। युद्ध के तुरत पश्चात् सोवियत सरकार ने पूर्वी-योरुपीय देशो में आर्थिक दृष्टि से एक क्षेत्र पर मुहरबदी कर देने का प्रयत्न किया था। उनकी योजना थी कि सोवियत सघ को एक बडे बाजार में परिवर्तित कर दिया जाय जहा पूर्वी योरुप का समस्त उत्पादन खप सके। ऐसे बाजार से सोवियत संघ इन देशो के आर्थिक-जीवन और विकास पर पूर्ण आधिपत्य जमा सकेगा।

युगोस्लाविया और सवियत सघ के बीच सन् १९४५ से व्यापार समझौतो के आधार पर अधिक व्यापार होने लगा। ये समझौते पश्चिमी देशो से मिलते जुलते थे। रूसियो ने विश्व बाजार के भावो पर आधारित व्यापार करने पर जोर दिया।

हाँ, एक दूसरी बात जो सोवियत संघ से किये गये व्यापार समझौते में हमारे लिये हानिकारक सिद्ध हो सकती थी वह थी वस्तुओ के पल्टे की समस्या। सोवियत सरकार ने दृढ़तापूर्वक इस बात पर जोर दिया कि हम उन्हे वे आवश्यक वस्तुएँ दें जिन्हें हमारा देश सरलतापूर्वक विदेश के बाजारो में बेच सकता था।

हमने तो सोवियत का वास्तविक लक्ष्य तब समझा जब कि हमारे देश में सोवियत युगोस्लविया जॉइन्ट-स्टॉक कम्पनियो की स्थापना के सम्बन्ध में बात चली। हम तो इस धोखे में थे कि रूसी हमारे उद्योग को विकसित करने में सहायक होगे जिससे हम युगोस्लाविया के विशाल प्राकृतिक साधनो का यथाक्रम लाभ उठा सके।.वास्तव मे इसका अर्थ था कि लाभ युगोस्लाविया से सोवियत संघ में जाता रहे।

प्रकरण सत्रह

"उन्होंने हमारा आर्थिक-शोषण करना चाहा...."

सन् १९४६ के वसंत में जब टीटो मास्को गये थे तो उनकी स्तालिन और मोलोतोव से आर्थिक विषयों पर ब्यौरेवार बातचीत हुई थी, जिसमें सोवियत-जॉइन्ट स्टॉक कम्पनी की स्थापना का प्रश्न भी सम्मिलित था। युगोस्लाविया के निवासियों ने जॉइन्ट स्टॉक कम्पनियों को सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया।

२७ मई की संध्या को टीटो क्रैमलिन के लिये चल दिये। उनके साथ रांकोवित्स, किद्रिस, व्लादिमीर पोपोवित्स, नेस्कोवित्स और मैं थे। हम लोग क्रैमलिन के एक ऐसे कमरे में ले जाये गये जिसमें एक बड़ी सम्मेलनयोग्य मेज तथा दस कुर्सियां थी : वहां स्तालिन खड़ा था। उसके दाहिनी ओर मोलोतोव और बाईं ओर बैलग्रैड में सोवियत राजदूत लावरेन्त्येव खड़े थे। स्तालिन ने प्रधान का आसन ग्रहण किया। उसने अपने हाथ में नोट-बुक ले ली और बातचीत करने लगा। उसने टीटो से यात्रा के विषय में प्रश्न किये तब सुवासित्स और ग्रोल के संबंध में कुछ पूछा कि सरकार छोड़ने के पश्चात् वे क्या कर रहे थे? उनके विषय में एक दो मजाक भी किये और उन्हें साथी कह कर पुकारा।

स्तालिन ने कार्देय और द्यीलास के स्वास्थ्य के विषय में पूछा। टीटो ने उत्तर दिया, "वे अच्छे है। हम उन्हें साथ नही ला सके पर सरकार के आधे सदस्य तो यहां उपस्थित है।"

फिर ट्रियस्ट के विषय में प्रश्न उठाया गया।

स्तालिन ने हंस कर प्रश्न किया, "क्या अंग्रेज और अमरीकी तुम्हे ट्रियस्ट नही देना चाहते है?"

फिर वह दूसरे विषय पर बात करने लगा। उसने युगोस्लाविया की फसल के विषय में पूछा और जानना चाहा कि हमने पूरी भूमि में बीज बोये थे या नहीं। अंत में गंभीर राजनैतिक बातचीत प्रारंभ हुई। टीटो ने युगोस्लाविया के आर्थिक विकास पर प्रकाश डाला। स्तालिन ने सिर हिलाते हुए कहा, "हम सहायता करेगे।"

अब वाद-विवाद युगोस्लाविया की जॉइन्ट स्टॉक कम्पनियों की समस्याओं

पर होने लगा ।

स्तालिन ने कहा, "हमारे लोगो ने हमें सूचना दी है कि तुम्हारे साथी जो आर्थिक क्षेत्र में काम कर रहे है वे जॉइन्ट-स्टॉक कम्पनियो के आयोजित करने की योजना से सहमत नहीं है ।" वह क्षण भर रुका मानो टीटो के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हो, तब बोला, "हमें तुम्हारी जॉइन्ट-स्टॉक कम्पनियोके विरोध के सबध में कुछ नहीं कहना है । पोलैंड के निवासी भी इनके स्थापित करने के विरुद्ध थे । यदि अमरीका भी इस प्रकार की कम्पनिया वहा पर स्थापित करने की सोचे !"

टीटो ने उत्तर दिया "नही यह मेरा मत नहीं है और न हो अन्य युगोस्लाविया के नेताओ का । हम सोचते है कि ऐसी कम्पनिया बननी चाहिये जो हमारे देश के उद्योगीकरण में सहायक हो सके ।"

आधी रात बीत चुकी थी । स्तालिन ने टीटो को संबोधित करते हुए कहा, "आज रात का तुम्हारा कार्यक्रम है ?"

टीटो ने उत्तर दिया , "कुछ भी नहीं ।" स्तालिन नें हंस कर कहा, "एक सरकार बिना किसी राज्य-योजना के ।"

ब्लादिमीर पोपोविल्म ने कहा, "हमने अपनी योजनायें आपकी भेंट पर आधारित की है ।"

स्तालिन ने कहा, "हम लोगो को कुछ खाना चाहिये" और सब लोगों को निमंत्रित किया ।

इस प्रकार स्तालिन के यहा खाना खाने गये । इस समय बडा अधेरा था । खाने के कमरे में भोज प्रारंभ हुआ । एक लंबी मेज पहले से बिछी हुई थी । स्तालिन बीचो-बीच बैठा । उसके दाहिनी ओर टीटो और सामने मोलोतोव बैठे थे । और शेष लोग जहाँ अच्छा लगा बैठ गये । खाना अधिकांश जॉर्जिया का था ।

खाना टोस्ट से प्रारंभ हुआ । पहला टोस्ट स्तालिन ने प्रस्तावित किया । इ स प्रकार घंटे पर घंटे खाने में ही बीत गये ।

काफी रात बीतने पर स्तालिन अपनी कुर्सी से उठा, एक कोनें में गया जहां एक ग्रामोफोन रखा हुआ था फिर वह एक के बाद दूसरा रिकार्ड सुनाने लगा उसने अपने आप-रिकॉर्ड छाटे, विशेष कर रूसी लोक-संगीत ।

तब उसनें टीटो की ओर देखकर कहा, "टीटो को अपने आप अपनी चिंता करनी चाहिये ऐसा न हो कि कोई उसका कुछ बिगाड़े । मै तो अधिक जीवित नहीं रहूँगा और वह योरुप के लिये बचा रहेगा । चर्चिल ने मुझे टीटो के विषय मे बताया था कि अच्छा आदमी है । उस ने यह बात तीन बार दुहराई । ... उत्तर दिया, "मै नही जानता, यदि आप ऐसा कहते है तो वह अवश्य अच्छा

52

२७ मार्च सन् १९४८ के सोवियत-पत्र के युगोस्लाव-उत्तर के मसौदे का एक पृष्ठ, टीटो के अपने ही लेख में

होगा। मैं भी टीटो को भली प्रकार जान जाऊंगा।"

स्तालिन ने तब अपना शराब का छोटा गिलास उठाया और टीटो को उसके साथ शराब पीने के लिये कहा। उन्होंने एक दूसरे के गिलास मिलाये और आलिंगन किया। तब स्तालिन सीधा खड़ा हो गया और उसने कहा, "अब भी मुझ में शक्ति है," और टीटो की बगल में हाथ डाल कर ग्रामोफ़ोन से आने वाली रूसी लोक-संगीत की ध्वनि से संगत करते हुए उसे तीन बार जमीन से ऊपर उठा दिया।

खान पान का क्रम फिर आरंभ हो गया। स्तालिन ने हम युगोस्लाविया निवासियों के लिये 'युकिलिप्टिस' के पेड़ लगाने की राय दी जिसके पौधे उसने स्वयं देने को कहा। उसने बताया कि इस पेड़ की लकड़ी जहाज बनाने के लिये सर्वोत्तम होती है। कई वर्ष पूर्व उसने एक पुस्तक में पढ़ा था कि यह पेड़ दक्षिण में उगता था, उसने वहीं से बीज मंगवा कर क्रीमिया में बोये थे। वहां पेड़ों ने अच्छी जड़े पकड़ीं और तेज़ी से बढ़ने लगे।

इसके पश्चात् इतिहास पर बातचीत होने लगी। खाना सवेरे पांच बजे समाप्त हुआ। स्तालिन ने यह खाना २७ मई को दिया था, जिस दिन टीटो सोवियत-संघ आये थे। अपने मास्को में ठहरने के समय टीटो अनेक बार स्तालिन से मिले। एक बार क्रेमलिन में सरकार की ओर से स्तालिन ने उन्हें दोपहर का खाना दिया और फिर अपने घर पर रात को खाना।

मास्को में युगोस्लाविया के प्रतिनिधि मंडल के ठहरने के दौरान नें स्तालिन बराबर यह दिखाने का प्रयत्न कर रहा था कि वह टीटो का दिमित्रोव से कहीं अधिक सम्मान करता है, जिससे उन दोनो मे ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न हो जाय। उस वर्ष टीटो के मास्को लौटने पर अगस्त में जॉइन्ट-स्टाक कम्पनियों की नींव की बातचीत प्रारंभ हो गयी। हम लोग इस बात पर दृढ़ थे कि युगोस्लाविया के प्राकृतिक साधनो का पूरा-पूरा उपयोग किया जाय और आर्थिक दृष्टि से ऐसा करना संभव था। हमने सोवियत संघ और अन्य पूर्वी योरुपीय देशों से घनिष्ठ आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करने का समर्थन किया। शर्त यह थी कि हमारे साधनों का विकास किया जाय क्योकि इस प्रकार का विकास आर्थिक दृष्टि से वांछनीय तथा युगोस्लाविया के निवासियों के हितों की दृष्टि से आवश्यक था।

जॉइन्ट-स्टॉक कम्पनियो के विषय पर एक विशेष रूप से लंबा और संकटपूर्ण वाद-विवाद होने लगा।

सोवियत योजनाओं के अनुसार युगोस्लाविया के तेल के स्रोतों का मूल्य इस कम्पनी की पूंजी का भाग नहीं माना जाता था। वे मार्क्स के नाम पर यह

कहते थे कि ये स्रोत तो प्राकृतिक देन थे जिनका कोई सीधा सामाजिक मूल्य नहीं था ।

इसके उपरात रूसियो ने यह माग की थी कि युगोस्लाविया द्वारा निर्यात की गई तेल की वस्तुएँ सोवियत आवश्यकताओ के अनुसार पहले रूस जायेंगी । प्रथम पाच वर्षों में उन पर किसी प्रकार का निर्यात कर अथवा और कोई आर्थिक भार नहीं डाला जायगा ।

युगोस्लाविया अपने काम में लेने के लिये शेष उत्पादन रख सकता था । युगोस्लाविया में तेल का उत्पादन अभी प्रारभ ही हुआ था इसका अर्थ होता तेल के उत्पादन के क्षेत्र में रूसियो का एकाधिकार होना ।

तेल की जॉइन्ट स्टॉक कम्पनियो का स्थापित करने का प्रस्ताव उन्हीं सिद्धान्तो पर आधारित था जिन पर युगोस्लाविया में अन्य रूसी कंपनियां जारी की गई थीं । इसके अलावा सोवियत योजना में दो सिद्धान्त और भी सम्मिलित थे जो उसी प्रकार थे जैसे पूंजीवादी देशो ने उपनिवेशो में अपनी पूंजी के निर्यात के लिये अपनाये थे । ये थे, प्रथम , युगोस्लाविया में सोवियत के एकाधिकार की माँग; और द्वितीय, एक ऐसी संधि जिसके द्वारा ये कम्पनिया स्थानीय नियंत्रण से मुक्त रहेगी ।

तेल की कम्पनियों के संबंध में अन्य बातो के साथ-साथ रूसी यह चाहते थे कि बाहर के बाजार भावो पर ध्यान दिये बिना कम्पनी को मुनाफा दिखाना चाहिये; जिसका अर्थ यह होता कि भीतरी भावो द्वारा उत्पादन के मूल्य को चुकाया जाय और उसी में से लाभ भी निकाला जाय; सोवियत की आवश्यकताओ को सब से कम मूल्य लेकर पूरा किया जाय ।

रूसियो ने यह माग भी की कि कम्पनियो को मजदूरो के सामाजिक बीमे के लिये युगोस्लाविया के कानून के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी व्यय करने की शक्ति के आधार पर पैसा दिया जाय ।

रूस का ध्येय यह था कि वह युगोस्लाविया का उद्योगीकरण नहीं होने दे और युगोस्लाविया में ऐसी कम्पनियाँ स्थापित करे जिससे वह सोवियत संघ के लिये केवल कच्चे माल की मडी बन जाये और वह वर्तमान उद्योगो को भी अपने हाथ में ले ले ।

इस प्रकार की बाते चरम सीमा पर तब पहुँची जब रूसियो ने एक सोवियत-युगोस्लाव बैंक की स्थापना का प्रस्ताव रखा । इस बैंक द्वारा वे एक केन्द्रीय बिन्दु से समस्त युगोस्लाविया के आर्थिक ढाचे को अपने नियंत्रण में रखना चाहते थे ` वे इसे अपनी आवश्यकताओ के आधीन बना सके । इस प्रकार धीरे-धीरे

युगोस्लाविया का आर्थिक ढांचा इस बैंक पर आधारित हो जाता और रूसी शीघ्र उस पर अपना प्रभुत्व जमा लेते।

स्वभावतः हमने इस प्रस्ताव को रद्द कर दिया। मास्को ने इसे एक शत्रुता-पूर्ण काम समझा।

यह बातचीत सन् १९४७ तक चलती रही। अब भी हमें सोवियत संघ के विषय में भ्रम था। अंत में हमने सन् १९४७ की फरवरी मे दो युगोस्लाव कम्पनियों की स्थापना के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। वे थी "जुस्ता" हवाई परिवाहन कंपनी और "जुस्पद" नदी-जलयान कंपनी।

अपनी कम पूंजी से, जिसका मूल्य उन्होंने बढ़ा-चढ़ा कर रख दिया था, रूसी अपने युगोस्लाव साझेदार की अपेक्षा अधिक लाभ ले जाते थे। यह लाभ उनकी पूंजी के भाग से भी अधिक होता था।

इस प्रकार युगोस्लाविया के आर्थिक विकास में सहायक होने के स्थान पर "जुस्ता" और "जुस्पद" केवल हानिकारक सिद्ध हुईं। इस रूप में सोवियत संघ ने युगोस्लाविया में एकाधिकार जमा कर हमको हमारी आर्थिक स्वाधीनता और प्रभुता से वंचित कर दिया।

इससे हम लोगो में बड़ी कटुता फैल गई। जहां तक अब तक के रूसी-युगोस्लाविया के सम्बन्ध का प्रश्न था, अन्य बातो की अपेक्षा जॉइन्ट स्टॉक कम्पनी के समझौतो द्वारा युगोस्लाविया के प्रति रूस के अभिप्राय जान कर हम लोगो की आँखें खुल गईं। रूस नही चाहता था कि युगोस्लाविया आर्थिक दृष्टि से स्वाधीन हो जाय, वह तो हमें आर्थिक दास बनाना चाहता था।

हमारे बातचीत करने वालो का कडा रवैया देखकर सोवियत नेताओं की भी आँखें खुल गईं। उन्होंने देखा कि युगोस्लाविया तो अपने स्वतन्त्र विकास के संबंध में अपनी धुन का पक्का है। हम समाजवाद को कोई गंभीर वस्तु समझते थे, साथ ही बड़े कठोर और हठीले भी थे।

यह बात तब स्पष्ट हो गई जब एडवर्ड कार्देय मार्च सन् १९४७ में स्तालिन से मिलने गया। बातचीत करते-करते वे काम की बात पर आये और युगोस्लाविया के उद्योगीकरण और जॉइन्ट-स्टॉक कम्पनियो की समस्या में उलझ गये।

वास्तव में स्तालिन ने इस भेंट में गुरु घंटाल का काम किया था। उसे संतोष था कि युगोस्लाविया में उसकी दो जॉइन्ट-स्टॉक कम्पनियां स्थापित हो गई थी जिनके द्वारा उसका नागरिक हवाई परिवाहन और नदी-जलयान पर एकाधिपत्य हो गया था। उसने अन्य कम्पनिया छोड़ दीं, क्योकि उसे लगा कि जैसे हम उस प्रकार की कंपनियो से सहमत नहीं होगे जिनकी योजना सोवियत

प्रतिनिधियो ने बनाई थी।

इस भेंट के पश्चात् जो बातचीत प्रारभ हुई वह सन् १९४७ की गर्मियों में समाप्त हो गयी, जब सोवियत संघ इस बात से सहमत हो गया कि वह युगोस्लाविया को साढे तेरह करोड डालर की मशीनें ऋण के रूप में देगा। इस ऋण द्वारा सोवियत संघ को युगोस्लाविया को भारी औद्योगिक मशीने देनी थीं।

यह समझौता तो दिखावे का था, क्योंकि सोवियत संघ इसे कार्य रूप में परिणित ही नहीं करना चाहता था। सोवियत सघ ने अपने साढे तेरह करोड डालर के वचन के बदले में केवल ८००,००० डालर की मशीनें भेजीं। तब १९४९ में सोवियत संघ ने इस समझौते को रद्द कर दिया जिससे युगोस्लाविया के आर्थिक ढांचे को बडी हानि पहुँची, क्योंकि हम इन सब कारखानो को चलाने के लिये सोवियत सघ पर निर्भर थे।

हम युगोस्लाव और सोवियत सरकार के अतर्गत एक समझौते के टैक्नीकल सहायता के प्रश्न को नियमित करना चाहते थे। सोवियत संघ द्वारा सन् १९४८ के प्रारंभ में प्रस्तुत किये समझौते के मसौदे में तीन शर्तें थीं, जिन्हे युगोस्लाविया स्वीकार नहीं कर सकता था।

युगोस्लाविया और सोवियत संघ के बीच इस प्रकार के आर्थिक संबंध थे। उनसे स्पष्ट था कि सोवियत सघ युगोस्लाविया को आर्थिक रूप से दबाना चाहता था जिससे वह सोवियत के आर्थिक ढाचे को जीवित रखने के लिये कच्चा माल भेजता रहे, तथा युगोस्लाविया का उद्योगीकरण रुक जाय और हमारे देश के समाजवादी विकास में विलम्ब हो।

- 8 -

Третье. Нам непонятно, почему английский шпион Велебит продолжает оставаться в системе мининдела Югославии в качестве первого помощника министра. Югославские товарищи знают, что Велебит является английским шпионом. Они знают и то, что представители Советского правительства также считают Велебита шпионом. И все же, несмотря на это, Велебит остается первым помощником мининдела Югославии. Возможно, что Югославское правительство думает использовать Велебита именно как шпиона Англии. Как известно, буржуазные правительства считают вполне допустимым иметь в своем составе шпионов великих империалистических держав, милость которых они хотят себе обеспечить, и соглашаются, таким образом, поставить себя под контроль этих держав. Мы считаем такую практику абсолютно недопустимой для марксистов. Как бы то ни было, Советское правительство не может поставить свою переписку с Югославским правительством под контроль английского шпиона. Понятно, что поскольку Велебит все еще остается в составе руководства иностранными делами Югославии, Советское правительство считает себя поставленным в затруднительное положение и лишено возможности вести откровенную переписку с Югославским правительством через систему мининдела Югославии.

Таковы факты, вызвавшие недовольство Советского правительства и ЦК ВКП(б) и ведущие к ухудшению отношений между СССР и Югославией.

Эти факты, как уже сказано выше, не связаны с вопросом об отзыве военных и гражданских специалистов, тем не менее они играют не малую роль в деле ухудшения отношений между нашими странами.

По поручению ЦК ВКП(б)
В. Молотов.
И. Сталин.

27 марта
1948 года.
Москва.

२७ मार्च १९४८ को टीटो को लिखे गये सोवियत-पत्र का अंतिम पृष्ठ
स्तालिन और मोलोतोव के हस्ताक्षर सहित

प्रकरण अठारह

"हमने मित्रता का हाथ बढ़ाया......"

उन देशो को अपने आधिपत्य में लाने के निश्चय से पूर्व जिन्हे वह पूर्वी तथा मध्य-योरुप और बालकान प्रायद्वीप में अपने प्रभाव का क्षेत्र समझता था, स्तालिन ने इस इलाके को सोवियत संघ के नियंत्रण में लाने की संभावना पर विचार किया। इस कार्य को करने के लिये यह पर्याप्त नहीं था कि सोवियत संघ की सेना द्वारा दवाव डाला जाय। उसने वे ही उपाय अपनाये जो वड़ी शक्तियां विश्व के इस भाग में प्रयोग में लाती हैं। उसने एक देश को दूसरे की पुरानी मत-भिन्नता का स्मरण कराकर भड़काया। अंत मे वह अनेक साम्यवादियो की कट्टरता पर और सोवियत संघ के विश्वास पर तथा उनके स्वयं स्तालिन पर विश्वास पर निर्भर रहा। उनमें वह युगोस्लाविया के साम्यवादियों को भी समझता था जिन्हे, जैसा कि टीटो से ज्ञात हुआ, वह "ईमानदार मूर्खो के नाम से पुकारता था।"

प्रारंभ में स्तालिन को उन देशों के साम्यवादी दल से निपटना था जहाँ उन्हे सत्ता प्राप्त थी। वह चाहता था कि अपने समर्थकों द्वारा इन पर अपना प्रभुत्व जमाये।

हंगरी, रूमानिया और पोलैंड में इस काम में कोई कठिनाई नहीं आई क्योकि इन देशो में युद्ध से पूर्व नाम को भी साम्यवादी दल नहीं थे। उनका प्रादुर्भाव तो लाल सेना की संगीनो के साथ ही हुआ था जव सन् १९४४ में जर्मन भगा दिये गये थे। युगोस्लाविया के साम्यवादियों के साथ ऐसा नही था।

स्तालिन ने स्वयं सन् १९४३ में वड़ी शक्तियो के दवाव से अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी समिति को भंग कर दिया था। अव उसके विचार में इस प्रकार की कोई अन्य संस्था स्थापित करना आवश्यक हो गया था जिसका आकार तो नई परिस्थितियो के कारण वदल गया हो परन्तु जो मूल रूप से मास्को-संघ के हाथ में प्राजातान्त्रिक सिद्धांतो से रहित एक आज्ञाकारी हथियार हो।

किन्हीं भिन्न कारणो से युगोस्लाविया यह चाहता था कि ऐसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था फिर वन जाय। इस प्रकार की सलाहकार संस्था विचार-विमर्श करने

और पिछले वर्षों के घटनाओ के बहुमूल्य अनुभव का आदान-प्रदान करने में बडी उपयोगी सिद्ध हो सकती थी ।

स्वय टीटो ने सन् १९४५ में स्तालिन को ऐसी ही सलाह दी थी, जिसने इसका हार्दिक स्वागत किया था, यद्यपि वह यह नहीं कह सका कि मजदूरों के आदोलन के सबध में उसकी एक नवीन अतर्राष्ट्रीय संस्था की कल्पना टीटो के विचारो से एकदम भिन्न थी ।

स्तालिन के विचार में किसी भी प्रकार की तीसरी अंतर्राष्ट्रीय सस्या पुनर्जीवित नहीं की जा सकती थी । उसने कहा कि इसके स्थान पर कोई अन्य संस्था बननी चाहिये । एक जानकारी देने वाली संस्था का निर्माण आवश्यक था जो समय-समय पर मिलती रहे, और अनुभवो का आदान-प्रदान करती रहे और साथ ही निर्णय भी करे । स्तालिन ने कहा कि जो लोग इसके निर्णयो से सहमत नहीं हो, उनके लिये उनका मानना अनिवार्य नहीं होगा ।.

अत में एक ही वर्ष पश्चात् सन् १९४७ की शरद् ऋतु में साम्यवादी दलो के सूचनालय की स्थापना हो गयी ।

'कमिनफॉर्म' के उद्घाटन की बैठक में सम्मिलित होने के लिये सोवियत संघ के प्रभाव क्षेत्र वाले देशो के साम्यवादी दलो को निमत्रण-पत्र भेजे गये; जैसे युगोस्लाविया, बलगारिया, रूमानिया, हंगरी, जैकोस्लोवाकिया और पोलैंड आदि ।

'कमिनफॉर्म' की बैठक सितम्बर सन् १९४७ के अंत में पश्चिमी पोलैंड में हुई । यह बैठक सात दिन तक चलती रही । इसके अंत में साम्यवादी दलो के सूचनालय की स्थापना के सबध में दो प्रस्ताव पास हुए, क्योकि यह नवीन संस्था अधिकृत रूप से इसी नाम से जानी जाने वाली थी । इसका मुख्य कार्यालय बैलग्रेड में रखा गया । यह तो केवल एक जानकारी देने वाली संस्था थी, परन्तु विभिन्न साम्यवादी दलो के कामो में एक दूसरे की सम्मति से ही ताल-मेल हो सकता था ।

यह कोई आकस्मिक घटना नही थी कि युगोस्लाविया को पहली बैठक में प्रथम स्थान दिया गया था । युगोस्लाविया को इस संस्था से जकड़ देने की इच्छा थी जिससे उस पर सरलतापूर्वक प्रहार किया जा सके । यही नही 'कमिनफार्म' की पहली बैठक का ध्येय था कि "युगोस्लाविया के दल और फ्रास तथा इटली के दलो के बीच जो उस समय योरुप के सबसे स्वतन्त्र साम्यवादी दल थे, एक खाई बना दी जाय ।

युदीन को अक्तूबर सन् १९४७ में 'कमिनफार्म' की ओर से बैलग्रेड भेजा गया जहां उसने शहर के केन्द्रीय स्थान में एक बड़े भवन को मुख्य कार्यालय

के लिये लेना चाहा।

युदीन का काम बेलग्रेड में केवल पत्र प्रकाशित करना ही नहीं था। उसने बेलग्रेड स्थित सोवियत राजदूत, लावरेन्त्येव की सहायता से युगोस्लाविया पर अंतिम प्रहार करने की तैयारी मे सक्रिय भाग लिया। उसने युगोस्लाविया तथा उसके पड़ौसी देशों, विशेषकर बलगारिया और अलबानिया के आपसी संबंधो को बिगाड़ने का प्रयत्न किया।

वास्तव में स्तालिन और सोवियत नेताओं ने युगोस्लाविया को अकेला छोड़ने की योजना में वे ही ढंग अपनाये थे जिनका प्रयोग अनेक बार इतिहास में बलकान के छोटे-छोटे राज्यों में फूट डालने के लिये हो चुका है।

नवीन युगोस्लाविया ने इस स्थिति को समाप्त करने तथा बलकान जातियों में भ्रातृभाव के विकास करने का यह उपयुक्त अवसर पाया, जिससे ये देश स्वयं अपने भाग्य-निर्माता बन कर। इस प्रकार के विचार स्तालिन की योजनाओं से मेल नही खाते थे। टीटो ने इस संबंध में कहा है, "विशेष रूप से एक बात सोवियत नेताओ को खटक रही थी, वह थी हमारे पड़ौसी देशों बलकान, बलगारिया, अलबानिया, हंगरी और रूमानिया के निवासियों से अच्छे संबंध बनाये रखने के प्रयत्न।"

युद्ध के समाप्त होने के कुछ ही वर्षो में युगोस्लाविया ने अपने पड़ौसी देशो और पूर्वी योरुप के अन्य देशो से परस्पर मित्रता और सहायता की अनेक संधियाँ कर ली।

इस बात से युगोस्लाविया और अन्य पूर्वी योरुपीय देशों के अनेक साम्य-वादियो को बड़ा आश्चर्य हुआ जब कि युद्ध के पश्चात् उन्होंने देखा कि इनके देशो और सोवियत संघ के आर्थिक संबंध केवल पूंजीवाद के सिद्धान्तों पर आधारित थे। इसका अर्थ यह है कि व्यापार विश्व के भावों द्वारा नियमित किया जाता था। एक बार सोवियत के एक बड़े नेता ने एक युगोस्लावयिा के प्रतिनिधि को स्पष्ट रूप से कहा था कि, "व्यापार व्यापार हैं, मैं किसी को उपहार नही देता हूँ, मै तो व्यापार करता हूँ।"

जिन सिद्धान्तो पर युगोस्लाविया और अलबानिया के आथिक संबंध आधारित थे वे बिल्कुल भिन्न थे।

इससे युगोस्लाविया दोनो देशों के आर्थिक भिन्नता से कोई अधिक लाभ नहीं उठाता था।

जब युगोस्लाविया ने अलबानिया की प्रार्थना पर उसके देश में एक जॉयन्ट स्टॉक कम्पनी की स्थापना की तो उसने प्रमुख रूप से अलबानिया के उत्पादन

के साधनों का विकास करना चाहा ।

अलवानिया और युगोस्लाविया के संबंधों ने मास्को का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। स्तालिन और युगोस्लाविया के प्रतिनिधियों में कोई भी ऐसी भेंट नहीं हुई जिसमें अलवानिया की चर्चा नहीं की गई हो ।

उसी समय सोवियत के दूत अलवानिया में बडी तेजी से युगोस्लाविया के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे। इसी प्रकार की वाते युगोस्लाविया के पडौसी देश बलगारिया में भी हो रही थीं ।

युद्ध की समाप्ति के शीघ्र पश्चात् वलगारिया और युगोस्लाविया का एक संघ बनाने के विषय में बातचीत प्रारंभ हो गई थी। यह प्रस्ताव नवंबर सन् १९४४ में युगोस्लाविया की ओर से रखा गया। इस विषय में वलगारिया का मत हमसे भिन्न था । सोवियत प्रतिनितियो ने हमारी इस मत-भिन्नता को और वढाना चाहा ।

युगोस्लाविया ने अन्य पूर्वी योरुपीय देशो, विशेषकर जैकोस्लावाकिया और पोलैंड से अपने संवध घनिष्ठ कर लिये। टीटो पहले पोलैंड गये तव जैको-स्लावाकिया। दोनो जगह भारी सख्या में जनता ने उनका अभिनंदन किया और यह वात तुरंत सोवियत नेताओ को पता चल गई।

पोलैंड और जैकोस्लोवाकिया में जाने के पश्चात् टीटो ने अन्य पूर्वी योरुपीय देशो का निमत्रण भी स्वीकार कर लिया। वे वलगारिया गये; हंगरी में राकोसी ने आग्रह किया कि टीटो उसके देश में भी जायें। फिर लाखो व्यक्ति वुडापेस्ट की सड़को पर आ गये। यद्यपि टीटो ने मास्को से अपनी प्रत्येक यात्रा के विषय में राय ली थी, फिर भी सोवियत समाचार पत्रो ने इस घटना के सबध में कुछ भी प्रकाशित नहीं किया।

तब रूमानिया से भी एक निमत्रण आया। टीटो के पास रूसियो को सूचित करने का समय नहीं था। रूमानिया का स्वागत सबसे बढा-चढ़ा था।

टीटो की इन यात्राओ और उसे प्रत्येक स्थान पर मिले सम्मान से मास्को चिढ गया। इसके उपरात वलगारिया में परस्पर सहायता और मित्रता की सधि पर हस्ताक्षर किये गये। युगोस्लाविया की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई।

वलगारिया में दिमित्रोव युगोस्लाविया और बलगारिया के संबंध दृढ करने के लिये विशेष रूप से उत्सुक था। उसने अपने विश्वासपात्रों को बताया था कि वल्कान और डेन्यूबी देशो में एक संघ अथवा आयात-निर्यात करो की एक मिली-जुली व्यवस्था बनाने की आवश्यकता थी।

किसी प्रकार क्रेमलिन ने यह पहले ही निश्चय कर लिया था कि वह बलकान और मध्य योरुपीय जातियों के संबंध सुधारने के क्रम को समाप्त कर देगा। इसके लिये इन देशों के मुख्य केन्द्र, युगोस्लाविया, पर प्रहार करना आवश्यक था। स्तालिन ने अंतिम प्रहार की तैयारी कर दी। उसे लगा जैसे अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां अनुकूल थी। समस्त पूर्वी योरुपीय देशों, विशेष कर युगोस्लाविया के संबंध पश्चिमी देशों से बिगड़े हुए थे। उस समय सब बड़े राज्यों में केवल सोवियत संघ ही एक ऐसा था जिसके पास एक भारी और भली प्रकार सशस्त्र सेना थी।

प्रकरण उन्नीस

"परंतु अब......रूसी हमारे बाधक बन रहे हैं......"

जनवरी १९४८ के प्रारभ में युगोस्लाविया में बडी शान्ति प्रतीत होती थी ।

बैलग्रेड स्थित सोवियत राजदूत लावरेन्त्येव ने, जो एक रूखा और कूटनीतिज्ञ के भावशून्य चेहरे वाला व्यक्ति था, स्वय जाकर टीटो को तार दिया : स्तालिन ने कहलाया कि युगोस्लाविया की राजनैतिक समिति में से यदि संभव हो तो द्यीलास को विभिन्न वर्तमान समस्याओ, विशेषकर अलबानिया के सम्बन्ध में विचार-विमर्ष करने के लिये मास्को भेजा जाय । यह कुछ असाधारण-सी बात थी कि स्तालिन ने विशेष रूप से द्यीलास को ही मास्को बुलाया था ।

द्यीलास बैलग्रेड से रेलगाडी द्वारा रूमानिया होते हुए मास्को के लिये चल पडा । उसके साथ युगोस्लाविया का सैनिक-मंडल भी था ।

मास्को पहुँच कर अभी दो या तीन घंटे ही हुए होगे कि द्यीलास को स्तालिन का संदेश मिला कि उसने उसे क्रैमलिन बुलाया था, यदि वह यात्रा के कारण अधिक नहीं थका हो तो । द्यीलास तुरंत गया और स्तालिन और मोलोतोव ने उसका स्वागत किया । बिना विशेष प्रारंभिक बातचीत किये स्तालिन ने अलबानिया की समस्या की चर्चा छेड़ दी । उसने कहा, "रूसी सरकार अलबानिया के संबंध में कोई दावा नहीं करती है । युगोस्लाविया जब चाहे तब अलबानिया को निगल सकता है ।"

द्यीलास उसकी बात से भौंचक्का रह गया । उसने उसी तरह उत्तर दिया, पर साथी स्तालिन, अलबानिया को निगलने का प्रश्न ही नही है, यहाँ तो दो देशो में केवल मित्रता व राष्ट्रो से संबंध बनाये रखने की बात है ।"

बाततीत समाप्त हुई । स्तालिन ने द्यीलास को अपने घर खाने पर बुलाया ।

दूसरे दिन शाम को लगभग पाच बजे राष्ट्रीय सुरक्षा-मंत्री , मार्शल बुल्गानिन ने द्यीलास व उसके प्रतिनिधि मंडल का स्वागत किया । उसके कमरे

में उस समय रूस की ओर से मार्शल वासिलीवस्की, अन्टोनोव तथा सोवियत सेना के अन्य नेता भी उपस्थित थे। द्यीलास ने युगोस्लाविया की मांगें प्रस्तुत कीं। बलगानिन स्तालिन से कुछ कम उदार नहीं था। उसने कहा, "तुम्हें सब कुछ मिलेगा।"

युगोस्लाव-प्रतिनिधि मंडल मास्को में लगभग एक महीने तक रहा। परन्तु फिर भी कोई परिणाम नही निकला। कारण स्पष्ट होने लगे। बैलग्रेड की राष्ट्रीय समिति ने एक ओर युगोस्लाविया तथा दूसरी ओर क्रमशः बलगारिया हंगरी और रूमानिया की मित्रता, सहकारिता व आपसी सहायता की संधियों का अभी-अभी समर्थन किया था। इसने स्तालिन की आग में घी का काम किया। लगभग उसी समय दिमित्रोव एक सरकारी दौरे पर रूमानिया के लिये रवाना हो गया। इस अवसर पर बलकान संघ के संबंध मे उसने एक वक्तव्य दिया।

एक भेट में प्रश्न का उत्तर देते हुए दिमित्रोव ने कहा, "मै इस बात पर भी जोर दे सकता हूँ कि जब ऐसे संघ अथवा संघ-मंडल निर्माण करने का प्रश्न आयेगा तो हमारे लोग साम्राज्यवादियों से पूछने नही जायेंगे और न ही विपक्षियों की कोई बात सुनेगे बल्कि अपनी इच्छानुसार अपनी समस्यायें स्वयं ही सुलझायेंगे जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और हितों से संबंधित है साथ ही जो इन लोगों तथा अन्य जातियों के लिये भी आवश्यक है।"

स्तालिन ने अब प्रकट रूप से 'प्रवदा' में दिमित्रोव पर यह कह कर आक्षेप करने की ठानी कि सोवियत संघ के बिना बलकान-संघ की कल्पना कैसी!

दिमित्रोव के वक्तव्य और 'प्रवदा' में प्रकाशन के पश्चात् मास्को से, सोफिया तथा बैलग्रेड विचार-विमर्ष के लिये नये प्रतिनिधि बुलाने के लिये तुरन्त तार भेजा गया।

जब कार्देय और बाकारित्स मास्को जाने की तैयारी कर रहे थे तो अलबानिया सरकार ने युगोस्लाविया सरकार से दो युगोस्लाव डिवीजन दक्षिणी अलबानिया भेजने की प्रार्थना की, क्योंकि होनवर होक्सा को भय था कि कहीं यूनानी अलबानिया की सीमा के कुछ भाग पर अधिकार नहीं कर लें, जहां उनके कथनानुसार यूनानी बसे हुए थे। अलबानिया की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली गई और युगोस्लाव सेना अलबानिया पहुँच गई।

मास्को को अलबानिया और युगोस्लाविया की सरकारों की यह बात अच्छी नहीं लगी।

कार्देय और बाकारित्स रविवार ८ फरवरी को मास्को आये। मंगलवार को इन लोगों को सूचित किया गया कि नौ बजे उन्हें स्तालिन के कार्यालय क्रैमलिन

पहुँचना है।

वहां पहुँचने पर बैठक की कार्यवाही सवा नौ बजे प्रारंभ हुई। उसका प्रारंभ मोलोतोव ने किया जिसने बताया कि एक ओर सोवियत संघ और दूसरी ओर युगोस्लाविया और बलगारिया में जो गंभीर मत-भिन्नता उत्पन्न हो गई है वह दल तथा राज्य के दृष्टिकोण से मानने योग्य नहीं है।

मोलोतोव तब गलतफहमी के कारण गिनाने लगा। सबसे पहले उसने बताई युगोस्लाविया-बलगारिया मित्रता-संधि; उसके पश्चात् पूर्वी योरुप और यूनान को सम्मिलित करते हुए बलकान देशों के संघ पर दिमित्रोव का वक्तव्य और अंत में युगोस्लाविया और अलबानिया में सदेशो का आदान-प्रदान।

स्तालिन ने अंतिम रूप से कह दिया कि उसे युगोस्लाविया और बलगारिया के संघ के विषय में कुछ नहीं कहना था, परन्तु रूमानिया और बलगारिया में किसी प्रकार के संघ अथवा आयात-निर्यात के करो की मिली-जुली व्यवस्था नहीं हो। प्रत्यक्ष रूप से उसे लगा जैसे बलगारिया सरकार में बडी संख्या में उसके अपने आदमी है जिन्होने सोवियत-संघ में दस-पन्द्रह वर्ष बिताये थे। इस प्रकार उसने कल्पना की कि युगोस्लाविया और बलगारिया के संघ द्वारा युगोस्लाविया को दबाना सरल होगा जो योरुप का सबसे शक्तिशाली भाग था। जियोर्गी दिमित्रोव तो पहले से ही अस्वस्थ और थका हुआ था और अब तो वह पहले जैसा बलवान योद्धा भी नहीं रहा था। अब स्तालिन ने 'प्रवदा' द्वारा और इस बैठक में उसकी प्रतिष्ठा गिरानी चाही। जहां तक बलगारिया और रूमानिया के बीच निर्यात-आयात करो और संघ की व्यवस्था की बात का सबंध था स्तालिन इनका इसलिये विरोध करता था कि रूमानिया के लिये उनकी विशेष योजनायें थीं।

अब कार्देय के बोलने की बारी आई। उसने कहा कि सोवियत संघ और युगोस्लाविया की विदेश नीति में उसे कोई अंतर दिखाई नहीं देता था।

इतने ही में स्तालिन ने उसे बीच में काटते हुए कहा, "कैसे नहीं? अंतर है और बड़े गहरे है। तुम्हे अलबानिया के विषय में क्या कहना है।?"

तब कार्देय ने युगोस्लाव-अलबानिया संबंधो की एक समीक्षा प्रस्तुत की।

स्तालिन क्रोधित होकर बीच ही में बोल उठा, "यह असत्य है। तुम हम लोगो से जरा भी पूछताछ नहीं करते हो।"

इसके पश्चात् कार्देय कुछ भी कहने में असमर्थ था क्योकि स्तालिन बराबर बीच में बात काटता जा रहा था। यह कोई वाद-विवाद नही बल्कि

स्तालिन की आज्ञा का विषय था ।

स्तालिन मोलोतोव के विचार समझाने में लग गया । उसने कहा कि रूमानिया और बलगारिया की आर्थिक योजना में समानता लाना मूर्खता है और दिमित्रोव को भी देखना चाहिये कि ऐसा करना बहुत मूर्खतापूर्ण होगा, क्योंकि इन दोनों में मेलजोल के स्थान पर अनबन हो जायगी ।

ऐसे अवसर पर स्तालिन ने प्रथम बार स्पष्ट रूप से अपनी योजना प्रस्तुत की कि पूर्वी योरुपीय देशों में—संघों की स्थापना की जाय । उसने कहा कि तीन संघ बनाये जायें; पोलैंड और जैकोस्लोवाकिया; रूमानिया और हंगरी, बलगारिया और युगोस्लाविया ।

स्तालिन ने एक बार और जोर दिया, "संघ की घोषणा शीघ्र कर दी जाय । यह काम जितना जल्दी हो उतना ही अच्छा है । उपयुक्त अवसर आ गया है । पहले तो बलगारिया और युगोस्लाविया मिल जायें तब उन्हें अलबानिया को मिलाना चाहिये ।"

उसके पश्चात् वाद-विवाद बलकान देशों और इटली के संबंधों में परिवर्तित हो गया । प्रश्न यह था कि इटली की सरकार को उसकी इस प्रार्थना का क्या उत्तर दिया जाय कि सोवियत संघ और युगोस्लाविया यह समर्थन करें कि इटली के अफ्रीका स्थित भूतपूर्व उपनिवेश का शासन इटली सरकार संभाले । स्तालिन ने कहा कि इटली की मांग का समर्थन किया जाय ।

जब युगोस्लाविया के प्रतिनिधि लौटकर अपने दूतावास में आये तो उन सब का यही विचार था कि स्तालिन युगोस्लाविया की एकता को भंग करने के लिये शीघ्र से शीघ्र बलगारिया और युगोस्लाविया का संघ बनवाना चाहता है । इसलिये वे सर्वसम्मति से इसी परिणाम पर पहुँचे कि उन्हे बलगारिया से मिला कर शीघ्र संघ नही बनाना चाहिये ।

१० फ़रवरी की बैठक में स्तालिन ने अनेक बार इस बात पर जोर दिया कि युगोस्लावों ने अपनी विदेश नीति के संबंध में सोवियत सरकार से पूछताछ करने की तो आदत ही नही डाली थी । उस बैठक के दिनो में स्तालिन ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि ऐसा फिर दुबारा नही होना चाहिये और अचानक युगोस्लाव प्रतनिधियों को सूचना दी कि अपनी सरकार की ओर से उन्हें विदेश नीति के प्रश्नो पर सोवियत सरकार के साथ आपसी पूछताछ के समझौते पर हस्ताक्षर करने थे ।

११ फ़रवरी की आधीरात को मोलोतोव ने कार्देय को अपने कार्यालय में बुलाया था । जब कार्देय पहुँचा तो समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिये सब

कुछ प्रस्तुत था। मोलोतोव ने कार्देय को दो कागज पकड़ा दिये।

कार्देय को अब भी वह दृश्य बड़ा सजीव प्रतीत होता है जब वह स्मरण करता है, "हम क्यो ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर करें जब हम वैसा ही काम कर रहे है जैसा कि उसमें लिखा है ? इस दबाव से मै घबरा गया। अंत में मैंने अपने हस्ताक्षर करने का निश्चय किया। मैंने इसलिये ऐसा किया कि मैं स्थिति को उलझाना नहीं चाहता था जो पहले ही इतनी गंभीर थी। घबराहट में मैंने उस जगह हस्ताक्षर कर दिये जहा मोलोतोव को करने थे। हस्ताक्षरो का क्रम स्थगित कर दिया गया, क्योकि अब समझौता दुबारा लिखने की आवश्यकता थी। दूसरे दिन रात को मैंने उस पर हस्ताक्षर किये और तुरंत अपने साथियों सहित मास्को मे रवाना हो गया।

प्रकरण बीस

"मुझे लगा जैसे मुझ पर बिजली गिर पड़ी..."

१० फरवरी में क्रैमलिन में हुई बैठक ने युगोस्लाविया पर स्तालिन के खुले दबाव का प्रारंभ कर दिया था। प्रथम कार्यवाही रूमानिया में हुई जहाँ टीटो के चित्र हटा देने की आज्ञा अचानक ही दी गई थी।

तिराना में लाल सेना की वर्षगांठ के उपलक्ष में मनाये गये एक स्वागत समारोह में जब युगोस्लाविया के राजदूत योसिप द्येरद्या ने स्तालिन और टीटो के लिये एक 'टोस्ट' प्रस्तावित किया तो सोवियत के 'चार्ज दी एफेयर्स', गागारिनोव ने उत्तर दिया, "मैं टीटो के लिये पीता हूँ, यदि टीटो प्रजातन्त्र गुट की एकता के पक्ष में हैं।"

स्तालिन ने युगोस्लाविया को यह जता दिया कि वह अपनी आज्ञा पालन करवाने के लिये और भी गंभीर कदम उठायेगा। युगोस्लाविया का विदेश व्यापार कुछ कच्चे माल, जैसे तेल रुई आदि के लिये विशेष रूप से सोवियत संघ पर निर्भर था।

युगोस्लाविया और सोवियत संघ में सन् १९४८ के लिये व्यापार समझौतों को फिर से नयी अवधि देने का समय आ गया था, क्योंकि प्रस्तुत व्यवस्था उसी वर्ष अप्रैल में समाप्त हो गयी थी। युगोस्लाविया का एक व्यापार प्रतिनिधि-मंडल दो महीने से मास्को में ही था। स्तालिन ने अब उसकी खबर लेने की सोची।

सोवियत विदेश-व्यापार के सहायक मंत्री, क्रुतिनोव ने युगोस्लाविया में अपने ही पद के बोगदान क्रनोबन्या को फरवरी के अन्त में सूचित किया कि अब युगोस्लाविया को मास्को में दूसरा प्रतिनिधि मंडल भेजने की आवश्यकता नहीं है।

टीटो ने १ मार्च को युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति की एक बैठक बुलाई। यह १५ रमुन्स्का स्ट्रीट में प्रातःकाल टीटो के घर में प्रारंभ हुई। इसके कार्यक्रम में चार बातें थीं, पहली, कार्देय, द्यीलास और बाकारित्स की सोवियत संघ में हुई बातों के परिणामों का विवरण, दूसरी, पंचवर्षीय योजना; तीसरी, सेना व युद्ध संबंधी उद्योग की समस्यायें; चौथी बलगारिया का संघ।

इस बैठक में सर्वप्रथम वक्ता थे टीटो। उन्होने युगोस्लाविया और सोवियत संघ के आपसी संबंधो की संक्षेप में समीक्षा की और कहा कि अब वे ऐसे स्थान पर पहुँच गये थे जहाँ से आगे बढ़ने का कोई मार्ग नहीं था।

तब वह अलबानिया की समस्या और हमारे सोवियत सघ से संबंधो तथा शस्त्रीकरण की बातचीत के परिणामो पर बोलते रहे, "वे इनमें से किसी में भी सहायता नहीं देना चाहते थे। वे सदा पूछते 'तुम एक मजबूत सेना किस लिये माँगते हो ? हम तो मौजूद है।'"

अंत में टीटो ने कहा कि व्यापार समझौते के हस्ताक्षर स्थगित करने से रूसी अब हम पर आर्थिक दबाव डाल रहे है और हमें इसका सामना करना है।

कार्देय ने अपने विचार रखते हुए कहा कि समाजवादी विकास के प्रश्नों पर हममें और रूस में मतभिन्नता है कि समाजवाद को उसकी दिशा में बढ़ने वाले राष्ट्रो की समान सहकारिता से विकसित होना चाहिये अथवा सोवियत संघ के और भी बढने से, जैसा कि रूसी सोचते प्रतीत होते है।

जब कार्यक्रम की दूसरी बात पंचवर्षीय योजना पर विचार किया गया तो किद्रिस ने बताया कि सोवियत संघ सन् १९४८ के व्योपार समझौते को नहीं मान कर हमें कितनी क्षति पहुँचा रहा है।

तब बलगारिया के संघ के प्रश्न पर वाद-विवाद होने लगा। सर्वप्रथम टीटो बोले। उन्होने कहा,

"हम युद्ध के दिनो में बलगारिया के साथ संघ बनाने के विचार से लड़े। हमें इसके लिये काम करते रहना चाहिये परन्तु इस प्रश्न को उठाने का क्या यह उपयुक्त अवसर है ? क्या इसके लिये समय आ गया है ? अभी हमें बहुत-सी कठिनाइयो पर विजय करनी है। बलगारिया के लोग हमसे विचारो में भिन्न है। हम शतरंज के प्यादे नहीं है। संघ बनाना संभव नही है, जब तक कि हम स्थिति को भली प्रकार नही समझ ले।

द्यीलास टीटो से सहमत हो गया। तब उसने सोवियत संघ के साथ भविष्य में संबंध बढ़ाने के लिये अपने विचार प्रकट किये, "मैं इस पर विश्वास नही करता कि रूसी हमारे देश पर आर्थिक दबाव डालना बंद करेगे। मेरे विचार में मूल प्रश्न यह है कि समाजवाद को स्वतन्त्र रूप से विकसित होना चाहिये अथवा सोवियत संघ के विस्तार से !"

तब सैनिक विषयों पर वाद-विवाद हुआ और अधिवेशन समाप्त हो गया। इस बैठक में टीटो ने इस बात पर जोर दिया कि युगोस्लाविया की स्वतन्त्रता का प्रश्न खतरे में है ।

१ मार्च की बैठक में युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति ने सोवियत की माँगों को बिल्कुल रद्द करने का निर्णय कर लिया था। स्तालिन की ओर से भी शीघ्र नये उपाय काम में लाये गये। १८ मार्च को युगोस्लाविया स्थित सोवियत सैनिक मंडल के प्रधान जनरल बार्सकोव ने कोसा पोपोवित्स को सूचना दी कि सोवियत सरकार के निर्णय करने से सोवियत संघ की राष्ट्रीय सुरक्षा के मंत्री, मार्शल बलगानिन, ने आज्ञा दी है कि युगोस्लाविया से सब के सब सैनिक सलाहकार और शिक्षक हटा लिये जायँ।

एक दिन पश्चात् सोवियत दूतावास के 'चार्ज दी एफेयर्स', आर्मियानि-नोव, ने टीटो द्वारा बुलाये जाने की माँग की। उसने सोवियत संघ से आया हुआ एक तार पढ़ कर सुनाया, जिसमें सब नागरिक विशेषज्ञों को युगोस्लाविया छोड़ देने की आज्ञा दी थी।

उसी दिन टीटो ने भी मोलोतोव को लिखा था कि सोवियत अधिकारी और विशेषज्ञ वापिस बुला लिये जायं।

टीटो का पत्र शीघ्र मास्को भेज दिया गया। अब स्तालिन का उत्तर क्या होगा ?

दिन पर दिन बीतते गये। विश्व-मत को भी संकेत नहीं मिला कि क्या हो रहा था। इस प्रकार की रिपोर्ट प्रकाशित हुई कि इटली के विरुद्ध युगोस्लाविया की युद्ध की इच्छा है।

इटली के समाचार पत्रों ने भी लिखा कि युगोस्लाविया ट्रियस्ट और और इटली पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है। लाखों सूचना पत्र छापे गये औद रोम में बांटे गये कि युगोस्लाविया की सेना ट्रियस्ट के स्वतन्त्र प्रदेश की सीमा पर एकत्रित हो गई है।

इसी क्षण अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस की सरकार ने इटली की शान्ति संधि की शर्तों मे कुछ संशोधन करने और उसे ट्रियस्ट दे देने का निर्णय किया। स्तालिन ने युगोस्लाविया पर पश्चिमी दबाव से अधिक-से-अधिक लाभ उठाया क्योंकि वह समझता था कि इससे उसका काम सरल हो जायगा।

इसी बीच टीटो ने स्तालिन के उत्तर की प्रतीक्षा की। सोवियत के राजदूत लावरेन्त्येव ने हाथ मिलाकर पत्र दे दिया। टीटो को अब भी स्मरण है, "प्रारंभ की पंक्तियों को देखते ही मुझे लगा कि जैसे मुझ पर बिजली गिर पड़ी।"

इस पत्र को लिखने का ढंग असाधारण रूप से असभ्य और आज्ञासूचक था और इसमें जो कुछ लिखा था वह भी उसी ढंग का था।

टीटो ने तुरन्त टेलीफोन द्वारा कार्देय, द्यीलास, रांकोवित्स और किद्रित्स

-को तुरन्त बुला लिया। वे आ गये। उन्होंने भी स्तालिन और मोलोतोव के यहां से आये पत्र को पढा और एक साथ टीटो का समर्थन किया। उन्होंने तुरंत कहा कि सोवियत के लगाये हुए सब आरोपो को नहीं माना जाय क्योकि वे झूठे थे।

उन्होंने एक साथ यह तय किया कि सब मामला केन्द्रीय समिति के सब सदस्यो के सम्मुख प्रस्तुत किया जाय जिसे उन्होंने १२ अप्रैल को बेलग्रेड में बुलाया था। यह भी निर्णय किया गया कि दल के सदस्यो को सोवियत दल की ओर से भेजे गये पत्र की बातो से परिचित कराया जाय।

१२ अप्रैल सन् १९४८ को केन्द्रीय समिति का ऐतिहासिक अधिवेशन प्रारंभ हुआ। टीटो ने कार्यक्रम में चार बाते रखीं; सोवियत साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति का पत्र, आर्थिक दशा, पाँचवीं काग्रेस तथा विविध।

टीटो ने प्रसंग बताते हुए, संघर्ष का इतिहास समझाया, तब उन्होंने सोवियत का पत्र पढ़ा उसके पश्चात् अपने उत्तर का मसौदा। उसके अंतिम अवतरण में लिखा था :—

"सोवियत के लोगो को, विशेषकर उनके नेताओं को, यह मान लेना चाहिये कि वर्तमान नेतृत्व में नवीन युगोस्लाविया बेरोकटोक समाजवाद की ओर बढ़ रहा है। यह मानना पड़ेगा कि आधुनिक युगोस्लाविया रूस का एक अत्यन्त विश्वासपात्र मित्र है।"

अंत में टीटो ने कहा, "साथियो! इस समय यहाँ सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण प्रश्न है एक दूसरे राज्य में संबंध रखना। ऐसा लगता है कि जैसे वे विचारधारा संबंधी प्रश्न उठा रहे हैं जिनसे वे हम पर अपना दबाव डालना चाहते है।"

अधिवेशन लगभग दो बजे समाप्त हुआ और भोजन के पश्चात् सब फिर उसी काम पर लग गये। एक सजीव वाद-विवाद हुआ। टीटो फिर बोले, "जो कुछ हमने इस युद्ध में प्राप्त किया वह ससार में समाजवाद की भेंट स्वरूप है, क्या हमारी राष्ट्रीय समानता और हमारे लोगो की पहली वास्तविक स्वतन्त्रता। हम सोवियत संघ से बराबरी के स्तर पर बोल सकते हैं। हमारे देश में जो कुछ हुआ उसके विषय में उन लोगो में बड़ी अनभिज्ञता है।

सोवियत दल के लिये जाने वाला पत्र अतिम रूप से स्वीकार कर लिया गया। एक पूरा का पूरा अवतरण जो अंत में था और जिसमें सोवियत संघ और और युगोस्लाविया के संबंध में लिखा था, हटा दिया गया। उसके बदले में सोवियत दल के नाम निमंत्रण रख दिया गया जिसमें उनसे युगोस्लाविया के दल के विरुद्ध लगाये गये आरोपों की असत्यता की जाच करने के लिये एक प्रतिनिधि

मंडल युगोस्लाविया भेजने की प्रार्थना की गई थी। इस प्रकार टीटो तथा अन्य युगोस्लाविया के नेताओं ने झगड़े को समाप्त करने का प्रयत्न किया और स्तालिन के साथ सच्चे समझौते का यथासंभव मार्ग ढूंढा।

अंत में पत्र में लिख दिया था, "हम सोवियत खुफिया पुलिस की यह बात अनुचित समझते हैं कि वह हमारे ही देश में हमारे नागरिकों को जासूसी के काम के लिये भर्ती करती है।"

टीटो और कार्देय ने इस पत्र पर युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति की ओर से हस्ताक्षर किये। तब यह पत्र युगोस्लाविया के राजदूत ब्लादिमीर पोपोवित्स द्वारा मास्को ले जाया गया। वह शीघ्र मास्को पहुँचा और पत्र मोलोतोव को दे दिया। चलते समय मोलोतोव और पोपोवित्स ने हाथ नहीं मिलाया।

प्रकरण इक्कीस

"यदि हम हिम्मत नहीं हारें, तो अवश्य विजयी होंगे...."

युगोस्लाव-दल की केन्द्रीय समिति ने जब स्तालिन के २७ मार्च की अंतिम शर्त का उत्तर दिया तो स्तालिन को लगा जैसे उसका पहला वार खाली गया।

इससे क्या? स्तालिन के पास दबाव डालने के और भी साधन थे। उसने 'कमिनफार्म' को काम पर लगा दिया था।

स्तालिन का २७ मार्च का पत्र केवल युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति को ही नहीं भेजा गया बल्कि 'कमिनफार्म' के सदस्यों को भी इस प्रार्थना के साथ भेजा गया कि वे भी युगोस्लाविया और सोवियत संघ के प्रश्न पर अपना मत प्रकट करें और उस समय केवल सोवियत संघ के दृष्टिकोण को ही सामने रखें। इसका अर्थ यह था कि केवल मोलोतोव और स्तालिन द्वारा २७ मार्च को युगोस्लावों को भेजा गया पत्र ही इसमें सम्मिलित किया गया था, न कि युगोस्लावों का उत्तर। स्तालिन यहीं नहीं रुका, उसने यह भी माग की कि दलों के उत्तर उसे भेजे जायं न कि सीधे युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति को।

१६ अप्रैल को युदीन टीटो के पास आया। उसने सोवियत दल की केन्द्रीय समिति की ओर से एक पत्र टीटो को दिया, जिसमें ज़्दानोव के हस्ताक्षर थे, साथ ही उसमे युगोस्लाविया के विषय में हंगरी की केन्द्रीय समिति के मंत्री, मात्यास राकोसी द्वारा की गयी टीका-टिप्पणी भी सम्मिलित थी। उस ने स्तालिन के कहने पर इसे सोवियत की केन्द्रीय समिति के पास भेज दिया था। जैसा कि स्वाभाविक था, राकोसी ने, जो सन् १९४४ में लाल सेना के संरक्षण में हंगरी आया था, स्तालिन से पूर्णतया सहमत होकर, क्रोधावेश में युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति पर आक्षेप किये।

सोवियत केन्द्रीय समिति को निम्न उत्तर भेजा गया,

"सोवियत दल के इस प्रकार के काम से हमें बड़ा आश्चर्य हुआ।"

युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति ने प्रथम रूसी पत्र का उत्तर 'कमिनफार्म' के सब सदस्यों को भेजने का निश्चय किया, जिसमें वे झगड़े की सब बातें जान

जायें और अपना निर्णय देने से पहले दोनों पक्षों का दृष्टिकोण जान सकें।

बैलग्रेड स्थित सोवियत के प्रतिनिधियों ने 'कमिनफार्म' के अन्य सदस्यो के उत्तर पहुँचाना प्रारंभ कर दिया था, जो न तो विषय में और न ही शैली में मात्यास राकोसी के पत्र से भिन्न थे।

उसी समय बलगारिया की केन्द्रीय समिति से भी एक पत्र आया जिसमें बलगारिया के लोगों ने सोवियत दल का पूर्णतया समर्थन किया था।

इसका अर्थ यह था कि युगोस्लाविया और बलगारिया की संघ संबंधी बातचीत टूट गयी। उन दिनों युगोस्लाविया में बड़ी हलचल थी।

चार दिन पश्चात् सोवियत की केन्द्रीय समिति का दूसरा उत्तर आया जो पहले से भी अधिक विषैला था। इस पत्र में स्तालिन और मोलोतोव ने युद्ध के दिनों में युगोस्लाविया के साम्यवादी दल की सफलता की निन्दा करने का प्रयत्न किया था।

स्तालिन के ४ मई के पत्र ने युगोस्लाविया के उन साम्यवादियो की भावनाओ को भी ठेस पहुँचाई थी, जो हिचकिचा रहे थे, और अपने आप से प्रश्न कर रहे थे कि क्या टीटो ठीक थे।

अपने ४ मई के पच्चीस पृष्ठ के पत्र के अंत में स्तालिन और मोलोतोव ने युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति की प्रार्थना को ठुकरा दिया था कि सोवियत केन्द्रीय समिति को एक प्रतिनिधि मंडल उनके पहले पत्र में लगाये गये आरोप की जांच करने के लिये युगोस्लाविया भेजा जाय। रूसियों ने इस प्रश्न को 'कमिनफार्म' के सामने रखने के लिये कहा।

युगोस्लाविया का उत्तर तैयार किया गया। यह अत्यन्त संक्षिप्त था। इसमें इस प्रश्न को 'कमिनफार्म' के सम्मुख प्रस्तुत करने के सुझाव को रद्द कर दिया गया था।

९ मई की बैठक में इसके अलावा ज़ुयोवित्स और हैवरंग से संबंधित जांच कमीशन की रपोर्ट को ही रखा गया। इसमें उन लोगों को केन्द्रीय समिति और दल से निकाल दिये जाने की सिफारिश की गई थी और उसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया था।

कुछ दिन पश्चात् सरकारी वकील ने छानबीन के पश्चात् यह राय दी कि उनके विरुद्ध राज्य की सुरक्षा को खतरे में डालने का आरोप प्रत्यक्ष प्रतीत होता था इसलिये वे पकड़ लिये गये।

इन गिरफ्तारियो के कारण मास्को से एक अत्यन्त अप्रिय तार आया, जिस में असह्य बाते लिखी हुई थीं।

इस प्रकार स्तालिन का दूसरा वार खाली गया। युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति के वे दो आदमी जिन्हे उसने केन्द्रीय समिति और युगोस्लाविया सरकार में फूट डालने के लिये नियुक्त किया था जिससे वह देश तबाह होकर सोवियत संघ के आधीन हो जाय, अब उनका भी भडा फूट गया था और उनकी करतूतें सब पर विदित हो चुकी थीं।

मास्को ने 'कमिनफार्म' की बैठक को बुलाने की तैयारिया तेज कर दीं जिसमे युगोस्लाविया की सबके सामने निन्दा करनी थी।

दूसरे दिन २० मई को केन्द्रीय समिति की बैठक हुई जिसमें यह सर्वसम्मति से निर्णय किया गया कि 'कमिनफार्म' की बैठक में भाग नहीं लिया जाय।

अत में टीटो ने सुस्लोव को केन्द्रीय समिति के निर्णय की सूचना भेजी कि 'कमिनफार्म' की बैठक के लिये कोई प्रतिनिधि मंडल नहीं भेजा जाय।

रूसी २२ मई को पहुँच गये। उनका पत्र असाधारण रूप से उन्हीं जैसा था। उससे यह बात स्पष्ट हो गयी कि उन्होने 'कमिनफार्म' की स्थापना साम्यवादी दलो के विचारो के आदान-प्रदान के लिये नहीं की थी परन्तु एक ऐसे हथियार के रूप में की थी जिससे वे अपनी इच्छा दूसरे दलो पर लाद सके, विशेष रूप से युगोस्लाविया पर।

पत्र में यह भी लिखा था कि,

"सोवियत साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति जैकोस्लोवाकिया और हंगरी के साथियो की इस बात का समर्थन करती है कि वह सूचनालय की बैठक को जून के अत तक स्थगित करदे।"

स्तालिन एक महीने तक बैठक स्थगित करना चाहता था जिससे उसे कुछ समय मिल जाय, क्योकि उसे विश्वास था कि भीतरी और बाहरी दबाव के कारण युगोस्लाविया को झुकने के लिये विवश होना पड़ेगा।

२५ मई को जब टीटो का जन्म दिन मनाया जा रहा था तो दिमित्रोव को छोड़ किसी सोवियत अथवा पूर्वी देशो के नेता ने शुभकामना के भी संदेश नहीं भेजे।

उसी दिन युगोस्लाविया की केन्द्रीय समिति ने एक जबरदस्त क़दम उठाया। उसने समाचार पत्रो में अपना यह निर्णय प्रकाशित करवाया कि वह दल के सब सदस्यो का एक सम्मेलन आयोजित करेगी जिससे वे युगोस्लाविया और रूस के झगड़े पर अपने-अपने विचार प्रकट कर सके।
स्तालिन के लिये यह एक आकस्मिक प्रहार था। यह सम्मेलन २१ जुलाई को सन् १९४८ में बैलग्रेड में हुआ।

इसी बीच 'कमिनफार्म' ने युगोस्लाविया को बुखारेस्ट में होने वाली बैठक में सम्मिलित होने के लिये एक निमंत्रण भेजा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस बैठक में गोमुल्का और दिमित्रोव में से कोई नहीं आया था।

जब झ्दानोव, मैलेन्कोव और सुस्लोव तर्क से नही समझा सके तो झ्दानोव कह बैठा, "हमें ऐसी सूचना मिली है कि टीटो एक साम्राज्यवादी जासूस है।"

'कमिनफार्म' के प्रस्ताव में जो २८ जून की दोपहर को प्रकाशित हुआ था, स्तालिन ने ६ योरुपीय देशो के प्रतिनिधियों पर दबाव डाला जिसमें अनेक उप-मन्त्री और विदेश मंत्री भी सम्मिलित थे, कि वे एक ऐसी मिली-जुली अपील निकालें जिसमें युगोस्लाविया के नागरिको पर अपनी सरकार को सोवियत संघ के आधीन कर देने का जोर डाला गया हो। यदि उनकी सरकार ऐसा नहीं करे तो लोग उसका विरोध करें और उसके स्थान पर एक नई सरकार बनायें जो सोवियत संघ के कहने पर चले।

आधुनिक इतिहास में किसी दूसरे राज्य के भीतरी मामलों में प्रकट हस्तक्षेप की ऐसी निन्दनीय घटना का एक भी उदाहरण नहीं मिलेगा।

इधर समस्त युगोस्लाविया एक हो गया। साधारण जनता अपने देश पर गर्व करने लगी। वे उसी उत्साह का अनुभव करने लगे जैसा कि वे युगोस्लाविया के आधुनिक इतिहास में अत्यन्त संकटपूर्ण समय में करते थे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि वे युगोस्लाविया के सब से कठिन दिन थे। युगोस्लाविया संसार मे अकेला था। पूर्व से तो स्तालिन भला-बुरा कह रहा था और पश्चिम में गलतफहमी फैली हुई थी और वे पहले की भांति धमकियां दे रहे थे। इतिहास में कभी कोई भी इतना छोटा देश इससे अधिक निराशाजनक स्थिति मे नहीं रहा था।

हंगरी और अलबानिया के कुछ कामो से युगोस्लाविया के जनमत में विशेष रूप से कटुता आ गई थी।

मास्को से भी समाचार आने लगे। केवल मास्को के विश्वविद्यालय में लगभग ४६० युगोस्लाविया के विद्यार्थी थे इसके अलावा कई हजार विद्यार्थी सैनिक शिक्षा केन्द्रो में थे। उन पर दवाव डाला गया कि वे 'कमिनफार्म' के प्रस्ताव का समर्थन करे। रूसियो ने इस प्रयत्न में कोई कमी नहीं उठा रखी।

पश्चिमी देशों में भी युगोस्लाविया के विषय में बड़े मिथ्या समाचार फैले हुए थे।

ऐसे वातावरण में युगोस्लाविया के साम्यवादी दल के पाँचवें सम्मेलन की तैयारी की गयी, जिसमें 'कमिनफार्म' के प्रस्ताव का प्रश्न दल के सब सदस्यो

के सम्मुख रखना आवश्यक था ।

२१ जुलाई को इसका उद्घाटन टीटो ने किया। सभापति के चुनाव के पश्चात् टीटो ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। वे इसे आठ घंटे तक पढ़ते रहे। यह सम्मेलन ६ दिन तक चलता रहा ।

सम्मेलन का अंतिम दिन आया जब नवीन केन्द्रीय समिति का निर्वाचन होने वाला था। योसिप ब्रोज को २,३१८ मत प्राप्त हुए थे, इसका अर्थ यह था कि केवल पांच प्रतिनिधि उसके विरुद्ध थे ।

"इस सम्मेलन द्वारा प्रदर्शित की गई एकता, जिसका हमारे दल के इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता, इस बात का संकल्प थी कि हमारा दल अपने विकास तथा हमारे नवीन समाजवादी देश के निर्माण की ओर अधिक दृढ़ता से बढ़ेगा।"

चौथा भाग

विगत दिनों की स्मृति

प्रकरण बाईस

"स्तालिन से हमारा विश्वास उठने लगा, न कि समाजवाद से................"

सोवियत संघ व युगोस्लाविया के खुले संघर्ष के चौथे वर्ष में मुझे टीटो से सन् १९४८ की गर्मियों के प्रारंभ के भाग्य-निर्णायक दिनों के संबंध में बात करने का अवसर मिला। टीटो उस समय आड्रियाटिक पर अपनी वार्षिक छुट्टियां व्यतीत कर रहे थे।

कोसा पोपोवित्स और मैं एक छोटी नाव से उतर कर उस दीवार की ओर चल दिये, जिसके सहारे टीटो बैठे हुए थे।

मैंने उन्हें जून सन् १९४८ के दिनों का स्मरण कराया। मैंने कहा, "मेरे विचार में रूसियों से जब हमारा प्रकट संघर्ष प्रारंभ हुआ तो हमारा काम करने का ढंग विशेष प्रकार का था। पहले तो उससे धक्का लगा परन्तु उसके तुरंत पश्चात् एक अपूर्व शक्ति का अनुभव होने लगा।"

टीटो कुछ क्षण मौन रहे और समुद्र की ओर देखते रहे। मुझे लगा जैसे उन्होंने मेरे शब्द भली प्रकार नहीं सुने थे, परन्तु ऐसी बात नही थी। वे विचार-मग्न थे, क्योंकि उन्होंने कहा, "मूल रूप से वह ऐसा ही है परन्तु वह इतना सरल ढंग नही था। रूसियों से संबंध बिगड़ने के कारण निराश या दुखी होने का कोई प्रश्न नहीं था। वे दिन अन्य चिन्ताओं के कारण भी बड़े संकटपूर्ण थे, जैसे समाजवाद का भविष्य तथा इस देश का भविष्य, ऐसे समाजवाद की स्थापना के लिये संघर्ष कर रहा था जो अपने साधनों से निर्मित हो और अपने लोगों के लिये उपयुक्त भी।

"मुझे यह स्पष्ट हो चुका था कि संघर्ष अस्थायी नहीं था परन्तु संबंध अंतिम रूप से बिगड़ चुके थे।

"एक दृष्टिकोण से सन् १९३८ के दिन १९४८ के दिनों की अपेक्षा अधिक विकट थे। सन् १९४८ में दल में शक्ति और एकता आ गई थी। सोवियत संघ के नाम पर हमारी क्रांति का गला घुट रहा था।

"ऐसी परिस्थिति में हमारा मुख्य कार्य यह था कि हमारे लोग सोवियत

संघ और हमारे संघर्ष के कारणों के संबंध में पूरी जानकारी रखें।

"जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैंने उस संकटकाल में उस मूल शक्ति पर भरोसा किया था जो युगोस्लाविया के निवासियो ने युद्ध के समय और उसकी समाप्ति के प्रारंभिक दिनो में प्राप्त की थी। वे लोग संगठित थे जिन्हें अपनी शक्ति और कार्यों का ज्ञान था। एक अनुभवी शक्तिशाली दल भी उपस्थित था। इसी कारण तो सन् १९४८ सन् १९३८ की अपेक्षा कहीं अधिक सरल था।

"हमारा देश छोटा है पर हमारी एकमात्र शति हमारा नैतिक बल, हमारी एकता व स्पष्टता है जिससे हमने अपने विकास की संभावना की कल्पना की।

"यह आवश्यक था कि स्तालिन को युगोस्लाविया के लिये ऐसे काम करने दिया जाय जिससे जनता स्वयं चिल्ला उठे, "स्तालिन का पतन हो।"

"स्तालिन की प्रमुख दुर्बलता," टीटो ने कहा, "यह थी कि युगोस्लाविया के सम्वन्ध में उसके विचार बड़े थोथे थे। वह यह नहीं जानता था और न ही जानना चाहता था कि यहां किसी नवीन वस्तु का निर्माण हो रहा था।

"स्तालिन ने सोवियत संघ के वाहर के मजदूरों के आन्दोलन का उचित स्वरूप नही पहचाना और न ही अव पहचानता है। उसका विचार था कि युगोस्लाविया उसकी सहायता के बिना प्रगति नहीं कर सकता। जब हम हिटलर से लड़ रहे थे उस समय भी वह हमारी हठ से बड़ा चिन्तित था।

"स्तालिन के युगोस्लाविया की स्थिति के संबंध में असत्य धारणा रखने का कारण 'एन० के० वी० डी०' की भूल भी थी।

"युगोस्लाविया का प्रश्न अब केवल उस तक ही सीमित नहीं रह कर विश्व की समस्या बन गया था।"

युगोस्लाविया को दबाने के लिये सोवियत की भारी शक्ति लगा दी गई। सबसे पहला काम था देश की एकता को नष्ट करना, उसकी अधिकृत सरकार का तख्ता उलटना और उसे सोवियत संघ का दास बनाना।

युगोस्लाविया सरकार ने बड़ी बुद्धिमानी की कि उसने सोवियत रेडियो के प्रचार को चलने दिया।

दूसरी ओर सन् १९४९ के अंत में युगोस्लाविया के रेडियो स्टेशन ने रूसी भाषा में कार्य क्रम प्रसारित करना प्रारंभ किया। सोवियत सरकार ने तुरंत सोवियत संघ में युगोस्लाविया द्वारा प्रसारित कार्यक्रम सुनने पर प्रतिबंध लगा दिया

इस प्रकार के कामों से स्तालिन शीघ्र ही युगोस्लाविया में अपनी बाजी

हार गया ।

जिस प्रचार से युगोस्लाविया के लोगों को बड़ा धक्का लगा और जिससे उनमे कटुता फैल गई, वह था वह झूठ जो इसने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के विषय मे फैलाया था कि लाल सेना ने युगोस्लाविया को स्वतन्त्र किया था ।

सोवियत के पाठ्यक्रम की पुस्तको, विश्वकोषों तथा अन्य पुस्तकों में जहां कहीं भी युगोस्लाविया, टीटो और युद्ध के संबध मे कुछ भी लिखा गया था उसे 'कमिनफ़ार्म' के प्रस्ताव के अनुसार यह जताने के लिये कि लाल सेना ने युगोस्लाविया को स्वतन्त्रता दिलाई है, दुबारा लिखा गया ।

स्तालिन ने बर्बरतापूर्वक युगोस्लाविया की आर्थिक नाकाबन्दी कर दी ।

स्तालिन का यह निश्चय कोई आकस्मिक घटना नही थी । उसने अपना प्रहार ठीक उसी समय किया जब युगोस्लाविया भयंकर आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहा था ।

स्तालिन ने सोचा कि युगोस्लाविया को मशीन नहीं भेजने तथा उससे विदेश व्यापार समाप्त करने से (उसका ५० प्रतिशत आयात-निर्यात का व्यापार पूर्वी देशों से था) वह पंचवर्षीय योजना की प्रगति और समाजवाद के विकास को रोक देगा ।

सोवियत संघ से ३१ दिसम्बर सन् १९४८ की व्यापार-संधि द्वारा युगोस्लाविया का व्यापार रुपये मे दो आने भर रह गया था ।

सोवियत संघ के उदाहरण का अनुकरण करते हुए पूर्वी योरुप के अन्य देशों ने भी युगोस्लाविया को मशीनें भेजना बंद कर दिया और उसके पश्चात् हर प्रकार का व्यापार भी, जिससे युगोस्लाविया और इन देशों के सब आपसी संबंध टूट गये ।

रूसियों ने काले सागर में हमारे जहाजों को जाने से रोक दिया । सोवियत सरकार ने डैन्यूब-संधि को भंग किया और अब वह उसे एक "रूसी नदी" में परिवर्तित करना चाहती है ।

युगोस्लाविया के निवासी हठीले थे । स्तालिन को अपने हथकंडे बदलने पड़े । सीमा पर घटनायें प्रारंभ हो गईं; हंगरी, बलगारिया, और रूमानिया जो युगोस्लाविया के निकटतम पड़ौसी थे शीघ्र सशस्त्र कर दिये गये; युगोस्लाविया की सीमा की ओर सेनाये बढ़ने लगी और सोवियत के सब फौजी टैंक आ धमके ।

अगस्त सन् १९४९ में अनेक सफेद रूसी, जो सोवियत संघ के जासूस विभाग की ओर से काम कर रहे थे, युगोस्लाविया में पकड़ लिये गये । एक दिन प्रातःकाल लगभग ६ वजे सोवियत दूतावास का एक प्रतिनिधि विदेश विभाग के

मंत्रालय मे गया। उसने वहा एक कुली को जगाया जो भौंचक्का रह गया, तब उसने उसे सोवियत सरकार की ओर से एक पत्र दिया। अन्य बातो के साथ-साथ उस पत्र में युगोस्लाविया की पुलिस व अन्य न्यायाधिकारियो की जाँच करने की मांग की गई थी, जिन्होंने सफेद रूसियो को गिरफ्तार किया था।

युगोस्लाविया ने इस पत्र का उत्तर बड़ी शान्ति से दिया। उसने सोवियत द्वारा की गई मानहानि पर भी विचार नहीं किया और वह सब सफेद रूसियों तथा अन्य रूसी नागरिको को सोवियत सरकार को सौंपने के लिये तैयार हो गया।

मास्को ने विश्व के जनमत पर प्रभाव डालना आवश्यक समझा। साथ ही युगोस्लाविया पर दबाव डालने का बहाना भी ढूंढ लिया। इसलिये सोवियत सरकार ने युगोस्लाविया के पड़ोस के देशो में अनेक मुकदमे चलाये जिससे वह सोवियत संघ व उसके गुट के अन्य देशो पर एक भारी आक्रमणकारी के रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

इस प्रकार का सबसे बड़ा मुकदमा सन् १९४९ की शरद् ऋतु में हंगरी के विदेश मंत्री, लाजलो रायक पर बुडापेस्ट में चलाया गया। कहा जाता है कि रायक ने अपने न्यायाधीशो के सामने स्वीकार किया कि उसने बैलग्रेड के आदेशानुसार हंगरी सरकार का तख्ता उलटने का प्रयत्न किया था।

संक्षेप में, युगोस्लाविया के स्वतन्त्रता संग्राम के सब नेता, अनेक गणतंत्र और सघ के प्रधानमंत्री व मंत्री, सब सैनिक नेता और प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्त्ता यह कह कर कलंकित किये गये कि वे हिटलर के जासूस थे।

प्रकरण तेईस

"हमारी क्रांति अपने बच्चों को नहीं निगलती...."

बुडापेस्ट में झूठे मुकद्दमे चलाने से स्तालिन युगोस्लाविया के संबंध में एक भारी भूल कर बैठा। रायक के मुकदमे ने आग में घी का काम किया। यह किसी नेता अथवा व्यक्ति पर आक्षेप नहीं था बल्कि समस्त जनता पर था और था युगोस्लाविया के द्वितीय युद्ध में भाग लेने पर।

भूतपूर्व वित्तमंत्री और केन्द्रीय समिति के सदस्य, जुयोवित्स को मई १९४८ में पकड़ लिया गया क्योंकि उसकी कार्यवाहियों से युगोस्लाविया की सुरक्षा व स्वाधीनता को भय हो गया था। उसने संघर्ष के प्रारंभ से ही सोवियत संघ का पक्ष लिया था। उसने जेल मे रायक के मुक़द्दमे के संबंध में एक पुस्तक पढ़ी थी। जिसके फलस्वरूप उसमें एक परिवर्तन आ गया और उसने अब स्तालिन की नीति का समर्थन नहीं करने का निश्चय किया। उसके पश्चात् वह शीघ्र ही छोड़ दिया गया। मुझे तो उसने सन् १९४९ में अपना विचार बदलने और स्तालिन को छोड़ने का यह प्रमुख कारण बताया,

"जेल में एक के पश्चात् एकदिन बीत गये। तब मुझे रायक की पुस्तक मिली। इसकी प्रथम प्रतिक्रिया स्वरूप मुझे क्रोध आगया। मैंने अपने आप से पूछा कि यह कहां तक उचित था जो इस प्रकार प्रत्येक पर, देश पर और समाजवाद के आदर्शों पर प्रहार किया गया ?

"उस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात् मैं चेतन हुआ। मैंने अपने आप से प्रश्न किया कि मुकद्दमे के दिनो में इस व्यर्थ के दोषारोपण से क्या तात्पर्य था। इसमें कोई सदेह नहीं कि इस मुकद्दमे का मूल तात्पर्य युगोस्लाविया के नेताओ को कलंकित करना था जिससे हमारे देश के विरुद्ध रूस की आक्रमणकारी नीति को उचित सिद्ध किया जा सके। हमने देख लिया था कि युगोस्लाविया में संपूर्ण दलने नेतृत्व का समर्थन किया था। इसीलिये रायक के मुकद्दमे का संक्षेप में यह परिणाम निकला कि युगोस्लाविया का सब का सब साम्यवादी दल फासिस्ट था।

"इस प्रकार मैंने परिणाम निकाले। मैंने अपने आप से पूछा हम कहां पहुँच गये है ? मार्क्सवाद और लेनिनवाद क्या है, जनसाधारण के अत्यंत प्रगतिशील

सामाजिक वर्ग की सबसे प्रगतिवादी शिक्षा ! उत्तर मिला, एक जाति का विनाश और दासता जिससे वह यह सीख जाय कि सोवियत का समाजवाद क्या है ।

"मेरे अंत करण ने मुझे इसे और अधिक नहीं सहने दिया ।

"आज मै सब कुछ महसूस करता हू और सोवियत नेताओ के विचार मेरे सामने स्पष्ट है ।"

प्रकरण चौबीस

"मैं एक अनभिज्ञ नवयुवक था, दल ने मुझे अपनाया, पढ़ाया और आदमी बनाया......"

स्तालिन ने जिस ढंग से युगोस्लाविया के साम्यवादी दल को छिन्न-भिन्न करने की योजना बनाई वह थी संदेह के बीज बोना। इससे वह यह जताना चाहता था कि कुछ सदस्य स्तालिन के समर्थक थे। वह ऐसा वातावरण बना देना चाहता था जिसमें एक दूसरे को किसी पर विश्वास ही नही हो, जिसमें व्यर्थ के झगड़े और गिरफतारिया होती रहे तथा काम बंद होते रहे।

पहले तो उसने कार्देय और टीटो में फूट डलवाने के लिये कार्देय की बात-चीत, जिसके विषय मे समझा जाता था कि उसने मई सन् १९४५ में बैलग्रेड स्थित सोवियत के राजदूत से टीटो के भाषण के विषय में की थी, प्रकाशित करवाई। उसके पश्चात् उसने द्यीलास और शेष लोगो मे फूट डलवाने का प्रयत्न किया, परंतु इन हथकंडो से कोई लाभ नही हुआ। स्तालिन ने एक बार फिर दिखा दिया कि वह युगोस्लाविया के साम्यवादी दल को नहीं जानता और न ही वह उन परिस्थि-तियो मे परिचित था जिसमें दल का विकास हुआ था। टीटो अब भी १५ रमुन्स्का स्ट्रीट में एक साधारण घर मे रहते हैं। वे गर्मियों में बड़ी जल्दी उठ जाते हैं। वे गर्मियो में प्रात.काल साढ़े पाँच बजे और सर्दियो में सात बजे उठते हैं। उठने पर आधा घंटा स्वीडन की कसरतें करते हैं। तब वे हजामत बनातेहैं फिर घूमने जाते है, चाहे कितनी भी सर्दी गर्मी या वर्षा क्यों न हो। लगभग ८ बजे वे अपना सुबह का नाश्ता लेते है। खाने पर वे विशेष ध्यान नही देते। नाश्ते में वे काफी डबल रोटी, मक्खन और कभी 'ऑमलेट' भी ले लेते हैं। अपने अन्य खानों में वे साधरण मध्य-योरुपीय वस्तुएं पसंद करते है। हाँ, कभी-कभी जागोरिये का खाना भी खा लेते है, जिसे बनाने में उनकी माँ बड़ी निपुण थीं। टीटो खाने के समय थोड़ी शराब भी ले लेते है। संभवतः गर्मियो में वे एक ग्लास बीयर अथवा युगोस्ला-विया की शराब पीते हैं।

वे प्रात.काल शीघ्र अपना नाश्ता करने के पश्चात् आठ बजते ही अपने दफ्तर में पहुँच जाते है। जाते-जाते वे अपनी चिड़ियो के पास जाकर उन्हें दाना

डालते है और यह देखते है कि उनके पास पर्याप्त मात्रा में पानी है या नहीं, तब अपने काम की जगह बैठकर प्रात काल आये समाचार पत्र पढ़ते हैं । वे विशेषरूप से समाचार पत्र में सम्पादक के नाम पत्र पढ़ते है, क्योकि उसी से जनता के विचार ज्ञात होते हैं ।

टीटो 'तन्युग' समाचार एजेन्सी के सब सूचना पत्र पढ़ते है, जो संसार की सब बड़ी एजेन्सियो, के समाचार, देती है । यह बात उल्लेखनीय है कि उनका सेक्रेटरी अत्यत आवश्यक समाचारो पर किसी प्रकार का निशान नही, लगाता । टीटो वह सूचना पत्र अपने ही आप पढ़ते है । वे समाचार पत्र पढ़ते समय सिगरेट पीते है ।

समाचार-पत्र पढ़ने के पश्चात् टीटो डाक देखते है । स्वयं युगोस्लाविया में से और बाहर विदेशो से टीटो के नाम बड़ी संख्या में पत्रो का आना स्वाभाविक ही है । वे एक एक-पत्र पढ़ते है और कोने में नीली पेंसिल से उसके साथ क्या कार्यवाही की जाय लिख देते है । यह एक बडा काम होता है जिसमें कभी-कभी तो पूरा घटा लग जाता है ।

समाचारपत्र और डाक देखने के पश्चात् टीटो राज्य के कार्य में व्यस्त हो जाते है । तब वे उन विधेयको के मसौदो को देखते है जो तैयार किये जा रहे हो । प्रात काल वे अपने मत्रिमंडल के सदस्यो से भी मिलते है और उनसे उन प्रश्नो पर विचार विमर्ष करते है जिन पर वे काम कर रहे हो ।

टीटो वर्ष में दूर-दूर यात्रायें करते है । प्रतिवर्ष वे युगोस्लाविया के ६ प्रदेशो में से एक का दौरा अवश्य करते है ।

टीटो एक अच्छे वक्ता भी है । ससद अथवा दल के सम्मेलनो के लिये वे स्वय रिपोर्ट लिखते है । भय होने पर भी टीटो की सुरक्षा के लिये जब वे किसी सभा में जाते है, कोई विशेष व्यवस्था नही की जाती है ।

टीटो प्रायः अपने अग्रेजी जानने वाले अतिथियो से एक दुभाषिये की सहायता से बातचीत करते है । यद्यपि वे अग्रेजी समझ लेते है पर बोलने में कठिनाई होती है ।

अपनी मातृभाषा सर्बो-क्रोशियन के अलावा वे रूसी, जैक और स्लोवीनिया की भाषाए भी जानते है । वे भलीभाति जर्मन बोलते है और फ्रास और इटली की भाषा समझ और पढ़ सकते है । टीटो खिरगीज भी बोलते है जिसे उन्होने तब सीखा था जब वे प्रथम विश्वयुद्ध में रूस मे युद्ध-बंदी थे ।

दोपहर का खाना टीटो प्रायः अपने मित्रो के साथ ही खाते है । भोजन के पश्चात् वे अपने पुस्तकालय जाते है जहा वे पुस्तकें पढ़ते है । कभी-कभी वे खाना

खाने के बाद शतरंज भी खेलते हैं। उस समय वे बड़े प्रसन्न रहते हैं। कभी-कभी खाने के पश्चात् वे घुड़सवारी भी करते हैं। अपना अधिकांश समय वे कमरे में अकेले विताते हैं। जव वे पढ़ते नहीं हैं तो विश्राम करते है। टीटो को संगीत प्रिय है।

टीटो के घर में अनेक चित्र और अच्छे चित्रों की प्रतियाँ हैं।

वे बड़े विनोदप्रिय भी हैं। युद्ध के दिनो में भी टीटो के साथियों में हर्ष का वातावरण रहता था। टीटो का मानना है कि विनोदप्रिय व्यक्ति ही परिहास पसंद करते हैं, परन्तु वे तो उनसे किया गया मजाक भी पसंद करते हैं।

शनिवार को टीटो प्रायः बैलग्रेड से बाहर शिकार के लिये जाते हैं। वे अच्छे निशाने वाज हैं।

तीसरे पहर वे कभी-कभी टैनिस भी खेलते हैं। इस समय वे अपने परिवार के लोगो से भी मिलते हैं। टीटो की पहली रूसी पत्नी पोल्का सन् १९३८ में मरी थी। उनके पुत्र जार्को के अब दो बच्चे है, फ्रांजो और ज्लातीत्ला। जार्को ब्रोज बैलग्रेड में एक सरकारी अधिकारी है। सन् १९४० मे टीटो ने स्लोवीनिया निवासी बेर्टाहास से विवाह कर लिया, उससे भी एक पुत्र हुआ, मिस्को। युद्ध के पश्चात् टीटो ने उसे तलाक दे दिया। सन् १९५२ के प्रारंभ में टीटो ने तीसरा विवाह भी किया। उनकी पत्नी योवांका लीका की रहनेवाली एक लंबी, काली सर्विया की स्त्री है।

टीटो में अनेक विशेष गुण हैं जैसे अपने लक्ष्य के प्रति श्रद्धा व लगन। उनमे किसी भी समस्या पर एकाग्रचित्त होकर विचार करने की बड़ी भारी शक्ति है। वे यह खूब जानते है कि जिन लोगों के साथ वे रहते और काम करते है उनके साथ किस प्रकार अच्छे संबंध बनाये जायें। अन्य लोगों के साथ वे भी एक साधारण इच्छा और उमंगों वाले व्यक्ति की भांति रहते हैं। उदाहरणार्थ बचपन से उनकी अच्छे कपडे पहनने की इच्छा थी। यहां तक कि अब प्रधान बनने पर भी उन्हें अपने कपड़ों का बडा ध्यान रहता है।

टीटो में अन्य लोगो की भांति कुछ दुर्बलताएं भी है। उन्हें अपना लेख अच्छा नहीं होने के कारण लज्जा आती है।

टीटो की अपनी कुछ दबी हुई इच्छाएं भी हैं, जैसे वे यह पसंद करेंगे कि वे किसी साधारण व्यक्ति की भांति घूमें-फिरें, किसी जलपान गृह में बैठकर एक आध ग्लास बीयर का पीयें, परंतु अनेक कारणो से ऐसा करना उनके लिये असंभव है।

प्रकरण पच्चीस

"हमें अब भी बहुत काम करना है......"

सन् १९५२ के वसंत में भारत के समाजवादी दल के एक प्रतिनिधि-मडल से बातचीत करते समय टीटो ने बताया कि युगोस्लाविया की क्राति बिल्कुल रक्तहीन होती, यदि वह दूसरे युद्ध के समय नहीं होती तथा फ्रास, इटली और युगोस्लाविया के अन्य शत्रुओ के विरुद्ध संघर्ष से सबंधित नही होती।

टीटो ने कहा "हमारी क्रांति केवल आक्रमणकारियो से मुक्ति दिलाने के लिये नहीं हुई थी बल्कि वह तो एक दकियानूसी सामाजिक ढाचे के विरुद्ध हुई थी।"

युगोस्लाविया की क्राति की समाप्ति की चर्चा करते हुए उन्होने कहा, "सन् १९४५ में युगोस्लाविया में उद्योग के राष्ट्रीयकरण में कोई कठिनाई नहीं आई। युगोस्लाविया और रूस की क्रातियो में अतर था। जिन मूल प्रश्नो पर स्तालिन असफल रहा वे थे समाजवाद और वैयक्तिक स्वतत्रता।" स्तालिन ने इतिहास के सबसे अधिक केन्द्रीय राज्य का निर्माण किया है। बीस करोड आदमियो का यह देश एक ही मस्तिष्क रखता है—वह है क्रैमलिन का।

युगोस्लाविया में विभिन्न प्रकारका विकास हुआ है। क्राति से जो कुछ प्राप्त हुआ उसकी रक्षा की जा रही है। पुरानी स्थिति को फिर से नहीं लाया जा सकता, न ही परास्त व अवाछनीय वर्गो को पुनर्जीवित किया जा सकता है और न ही मनुष्य का शोषण मनुष्य द्वारा हो सकता है। युगोस्लाविया का विकास एक समाजवादी प्रजातंत्र की दिशा में हुआ है। राज्य की सत्ता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।

सोवियत और युगोस्लाविया के सामाजिक ढांचे का अंतर टीटो ने इस प्रकार बताया है :—

"प्रथम और मूल अंतर यह है कि हम सच्चे समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं, जब कि सोवियत संघ में समाजवाद के नामपर स्वयं राज्य की ओर से पूंजीवाद स्थापित किया गया है। रूस में जहा यह सब कुछ एक तानाशाही व नौकरशाही वर्ग के नेतृत्व में किया जाता है वहां युगोस्लाविया मे मनुष्य ही सब कुछ है। इससे क्या, हमें अब भी बहुत काम करना है।